भाग 5
पहली फस्ल सवारी
1. घोड़बानी (चाबुक सवारी)

आठों गाँठ कुमय्यत (पु0) सर से पैर तक बिला ऐब यक रंग कुमय्यत घोड़ा यानी जिसकी टाँगों के किसी हिस्से में सुम से लेकर शाने तक किसी दूसरे रंग की झलक न हो।

आख़ोर (पु0) घोड़े के थान के अत्राफ़ बिखरी और रौंदी हुई घाँस जो उसके खाने से बच गई और मुताली वगैरह मिलने से ख़राब हो गयी हो। यह एक इस्तिलाह बन गयी है जिसका मफ़हूम असल मानों से बिल्कुल मुख़तलिफ़ हो गया है।

आदम चश्म (पु0) वह घोड़ा जिसकी आँख का रंग मेंढक के रंग से मिलता जुलता हो। ऐसी आँखों का घोड़ा शक्ल का ऐबी और मनहूस ख़्याल किया जाता है इससे ज़ियादा ताक़ी को मनहूस समझते है।

यह दोनों से वह आदम चश्म गर है।
तो मुतलक़ उससे मत डर वह चग़र है।।
(रंगीन)

आसन जमाना (क्रिया) घोड़े पर सवार होकर रानों को उसकी पसलियों से इस तरह मिलाये रखना की निशस्त सही रहे।

आलन (स्त्री) घोड़ी का बहार का ज़माना, जोशे जवानी, मस्ती। असल लफ़्ज़ आलंग का ग़लतुल आम तलफ़्फ़ुज़। **पर आना, होना** के साथ बोला जाता है।

अगर चाहे की घोड़ी लाये आलंग।
तो उसका भी बताऊँ मैं तुझे ढंग।। (रंगीन)

आलंग (पु0) देखें आलन।

आँसू ढाल (स्त्री) वह भौंरी जो घोड़े की आँख के कोए के क़रीब ज़रा नीचे को हटी हुई हो अगर कान को छुकाने से उस के नीचे न आये तो मनहूस नहीं समझी जाती। मगर हिन्दुस्तान में उसको मनहूस समझते हैं। **देखें** भौंरी।

न आवे कान के नीचे तो है और।
उसे कहते हैं आँसू ढ़ालकर ग़ौर।।
सौ आँसू ढ़ाल कुछ ऐसा नही ऐब।
वले हिन्दू समझते हैं गे लारैब।।

आहू शिकम (पु0) वह घोड़ा जिसका पेट हिरन की मानिंद, पीठ से लगा हुआ हो ऐसा घोड़ा कम खूराक होता और कमज़ोर रहता है इसलिए बुरा समझा जाता है।

समझ उसको तू यह आहू शिकम है।
यक़ीन फिर जान रख खाता भी कम है।।

अब्रश (पु0) वह कुमय्यत रंग घोड़ा जिस पर खरबूज़े की फाँको जैसी धारियाँ हों। बाज़ चाबुक सवार सुर्ख़ व सफेद मख़लूत रंग घोड़े को भी कहते हैं।

मुबस्सिर जितने हैं कहते हैं वह यूँ।
कि है बाद इसके अब्रश और कानों।।

अब्रस़ (पु0) चित्ला या चित्कब्रा घोड़ा जो आमतौर से बहुत कम होता है।

अब्लक़ (पु0) दो रंगा घोड़ा जो अमूमन सुर्ख़ व सफेद रंग का होता है। बाज़ सफेद और सियाह भी होता है। ऐसे घोड़े को भी कहते है जिसके चारों पैर सफेद हों।

अब्यस़ (पु0) देखें नुक़रा।

अटेरन (स्त्री) नये घोड़े को सवारी के लिए सधाने की एक ख़ास क़िस्म की फिरत की तालीम का नाम जिसकी मश्क़ अंग्रेज़ी के आठ के हिंदसे की शक्ल कराई जाती है जिससे वह बाग के इशारे पर दाँए बाँए मुड़ना सीख जाता है। चाबुक सवारों की इस्तिलाह में इस मश्क़ को इक घरी और दो घरी फिरत के नाम से मौसूम किया जाता है। **फेरना, फिराना, देना** नये घोड़े को अंग्रेज़ी के आठ के हिंदसे की शक्ल फिरत कराना जिससे वह बाग का इशारा समझने लगे।

अख़्ता (पु0) वह घोड़ा जिसको मादा से जुफ़्ती करने के क़ाबिल न रखा गया हो यानी फ़ोते निकाल दिये गए हों।

अख़्ता बेगी (पु0) अस़तबल दरोगा।

अधर होना (क्रिया) घोड़े का चलते चलते शरारत, डर या शोख़ी से दोनो अगले पैर उठाकर पिछले पैरों पर खड़ा हो जाना।

अधम (पु0) देखें मुश्की।

उर्तक (पु0) देखें बाल पोश।

अर्जुल (पु0) वह घोड़ा जिसका पिछला दायाँ या बाँया पैर घुटने तक सफेद हो और बाक़ी जिस्म किसी और रंग का हो ऐसा घोड़ा बहुत मनहूस समझा जाता है।

जो है अर्जुल तो है बद यमुन लारैब।

अर्दावा (पु0) दला हुआ दाना। **देखें** महेला।

चने और जौ मसावी जो भुनावे।
और उनका मोटा अर्दावा पिसावे।। (रंगीन)

अड़ियल (पु0) वह घोड़ा जो चलते चलते या चलने से पहले रुके और आगे बढ़ने से मुंह मोड़े और जी चुराये।

अज़्बल/अर्बल (स्त्री) वह भौंरी या भौंरियाँ जो घोड़े के कानों की जड़ में ऊपर के रुख़ खोपरी की तरफ़ हों। अगर एक भौंरी हो तो उसको मनहूस ख़्याल किया जाता है। बाज़ चाबुक सवार इस भौंरी को अर्बल के नाम से मौसूम करते हैं और एक किताब में भी इस लफ़्ज़ की इमला (ह) र से लिखी है। एक हिन्दी लफ़्ज़ आर्बल उमर और ज़िंदगी के मानों में भी लिखा है।

जो जड़ पर भौरियाँ कानों के हों दो।
व या हों पुश्त सर पर ई नको खो।।
तो नाम उनका है अज़्बल उनको पहचान।
व गर है एक तो बद उस को तू जान।। (रंगीन)

अस्तबल (पु0) देखें घुड़सार।

त़वेला ( ) देखें घुड़सार।

घुड़थान ( ) देखें थान।

घुड़साल ( ) देखें घुड़ सार।

अस्फ़र (पु0) देखें समंद।

अक़रह (पु0) वह घोड़ा जिसकी पेशानी पर हल्की सफेदी हो।

एक घरी फ़िरत (स्त्री) देखें अटेरन।

इकवाई कूदना (क्रिया) घोड़े की नुमाइशी चालों में एक ख़ास चाल जिसमें वह अगला एक पैर उठाकर सिर्फ तीन पैरों से कूदता हुआ चलता है चाबुक सवार इस चाल की मश्क़ कराने के लिए अपनी इस्तिलाह में इकवाई कुदाना कहते हैं।

उखड़ना (क्रिया) देखें पोइय्या या पोइय्याँ चाल।

अगाड़ी (स्त्री) थान पर घोड़े को बाँधने की रस्सी जो उसके गले में डाल दी जाती है। **बाँधना, डालना** के साथ बोला जाता है। **प्रयोग** अगाढ़ी ढीली बंधी हुई है इसलिए थान से इधर उधर हो जाता है।

अल्अ़र (पु0) वह घोड़ा जो बतौर साँड अफ़ज़ाइशे नस्ल के लिए हिफ़ाज़त के साथ परवरिश किया जाये। अख़्ता की ज़िद।

बज़ाहिर तो नज़र आवे वह अल्अ़र।
पर बातिन मे वह अख़्ता हो मुक़र्रर। (रंगीन)

अलफ़ होना (क्रिया) देखें अधर होना।

अलल बछेरा (पु0) घोड़े का कम उम्र बच्चा जिसके गले या पैर में रस्सी न बाँधी गयी हो और खुला फिरता हो ताकि उस की इब्तिदाई नशोनुमा में नुक़्स न पैदा हो।

अल्लड़ (पु0) देखें अलल बछेरा।

अंटर (पु0) अंग्रेज़ी लफ़्ज़ हंटर का उर्दू तलफ़्फुज़। **देखें** चाबुक।

कोड़ा ( ) देखें चाबुक।

औगी (स्त्री) लम्बा गावदुम शक्ल का चाबुक जो नये घोड़े की सधाई के वक़्त चाबुक सवार इस्तेमाल करते हैं इस की पट्ख़ार से ज़ोर की आवाज़ निकलती है जो घोड़े को डराने के लिए की जाती है। बाज़ पेशेवर फक़ीर इस क़िस्म का कोड़ा भीक माँगते वक्त अपने जिस्म पर पटखारते है। **उड़ाना** औगी की पटख़ार करना जिससे आवाज़ पैदा हो। हवा में इस तरह हर्कत देना जिससे आवाज़ पैदा हो और मारने के बजाये जानवर को डराना और चमकाना मक़सद हो।

अयाल (स्त्री) तुर्की लफ़्ज़ याल का उर्दू तलफ़्फुज़। घोड़े की गर्दन के ऊपर के लम्बे बाल जो एक तरफ को लटके रहते हैं।

ऐबिया (पु0) पुराने चाबुक सवार घोड़ी की एक चाल को कहते हैं जिसका कोई सही मफ़हूम और तलफ़्फुज़ नही बताया गया ग़ालिबन घोड़े की तवील तेज़ रफ्तारी के लिए यह इस्तिलाह है। फ़ारसी में ऐबक क़ासिद और हरकारे के मानों में आता है।

एड़ (स्त्री) लफ़्ज़ एड़ी का मुखफ़्फ़फ़। अस्प सवारों की इस्तिलाह में सवारी में घोड़े के पेट पर पैर की एड़ी का ठोका लगाना मुराद ली जाती है। जो घोड़े को बढ़ाने और तेज़ क़दम चलने का इशारा होता है। **देना, लगाना, मारना** के साथ बोला जाता है। **खाना** घोड़े का एड़ की ज़र्ब या इशारा महसूस करना। **प्रयोग** घोड़ा मुंह ज़ोर था एड़ खाते ही सरपट हो गया।

बारगीर (पु0) देखें बाल गीर।

बाग (स्त्री/संस्कृत) घोड़े को क़ाबू में रखने वाली रस्सी या तस्मा जिसके सिरे घोड़े के मुंह के साज़ के हिस्से में जिसको दहाना कहते हैं बंधे होते हैं और दरमियानी हिस्सा सवार के हाथ में रहता है।

बाग डोर (स्त्री) एक लम्बी रस्सी जिसका एक सिरा बाग के साथ दहाने में बांध दिया जाता है और सवार का हमरकाब साईस इसको पकड़े रहता है और बवक़्त क़याम उसको किसी चीज़ से बाँधकर घोड़े को खड़ा कर दिया जाता है या वह सवार के साथ रहती है। **बाँधना, लगाना** के साथ बोला जाता है।

बालपोश (पु0) घोड़े को उड़ाने का एक क़िस्म का बारीक जाल या कपड़ा जो मक्खियों से बचाव के लिए उस पर डाल दिया जाता है।

बालगीरः (पु0) घोड़े के बाल काटने वाला कारीगर जिसको इस्तिलाह में **बब्री कतार** कहते हैं।

बालोत्रा (पु0) बारीक बड़े और घने बालों वाला घोड़ा इस क़िस्म का घोड़ा बहुत उमदा शुमार किया जाता है।

बब्री (स्त्री) घोड़े के जिस्म के बालों की ख़श्ख़शी यानी बारीक तराश। **करना** घोड़े के जिस्म के बढ़े हुए बालों को कतरकर बारीक करना।

बिचाली (स्त्री) देखें आखोर।

बद रकाब (पु0) सवार के रकाब में पैर डालते वक़्त बिदकने या इधर उधर मुड़ जाने वाला ऐबी घोड़ा। सवारी के वक़्त आदतन इस क़िस्म की हरकत करने से बहुत बुरा समझा जाता है।

बिदक (स्त्री) डर या शरारत की वजह घोड़े या बाज़ ढोरों की इज़तरारी हर्कत या हर्कतें। **प्रयोग** बावजूद सधाने और डर निकालने की बंदूक़ की आवाज़ से घोड़े की बिदक नहीं गयी।

बिदकना (क्रिया) देखें बिदक।

बंदन (पु0) घोड़े के सुम के नीचे की गद्दी का आखिरी सिरा जो ऊपर खोपरी या सुम के हिस्से से मिलता है।

लगे गुल मेख़ गर बंदन में चढ़कर।
चुभे या खोपरा पुतली मे बढ़कर।।

चित्र– बंदन

बंधवा (पु0) वह घोड़ा जो अर्से तक थान पर बेकार बंधे रहने से काहिल और मसेल हो जाये।

बैज़ा (पु0) घोड़े की किसी टाँग की पिंडली में मुट्ठे के ऊपर अंडे के मानिंद उभरी हुई बेज़रर शै जो जसामत में अंडे के बराबर या उससे कमोबेश होती है।

वह ज़ाहिर मे अगरचे ऐब सही।
पर बातिन मे बहर सूरत भला है।
मुसलमाँ और हिन्दू उसको मिलकर
कहा करते हैं बैज़ा ए बरादर। (रंगीन)श

बेल (स्त्री) घोड़े की एक निहायत उमदा और सधी हुई चाल जिसमें वह तह ज़मीन यानी लम्बा और ज़मीन से मिला हुआ क़दम उठाता है जो सवार के लिए बाइसे राहत होता है शाही सवारी के घोड़ों को यह चाल सिखाई जाती है। ऐसी रफ़्तार जिसमें चलने वाले का क़दम ज़मीन को छूता हुआ और सुरअ़त के साथ बढ़े।

भुजबल (स्त्री) घोड़े की वह भौंरी जो अगली टाँग में शाने के नीचे घुटने के करीब हो। **देखें** भँवरी।

कहूँ नाम उसका वह भौंरी है भुजबल।
जहाँ तक जी मे आवे उस तू चल।।

भौं (स्त्री) घोड़े के सुम के ऊपर खाल की कोर जो सुम से वस्ल होती है। **देखें** बंद।

अगर मोटी हो भौं हाथों के सुम की।
तो घोड़ा और रख एक उसकी कुम्की।।

भौंरी (स्त्री) घोड़े की खाल के बालों का चक्कर या चक्कर फेर जो बालों की जड़ों में मुख़तलिफ़ शक्ल का जिस्म के अक्सर हिस्सों पर पाया

जाता है उनमें बाज़ को कारदाँ चाबुक सवार और माहिराने अस्प बहुत मनहूस बताते है और ऐसे घोड़े का पास रखना बाइसे खराबी ख़याल करते है क्योंकि भौंरी घोड़े के शरई ऐबों में सब से बड़ा ऐब समझा जाता है अंग्रेजी में हलतंजपवद जनतद कहते हैं।

मुक़र्रर ऐब घोड़े के है लारैब
सरे सब ऐबों के है भौंरी का ऐब

यह भौंरियाँ जो ग़ालिबन लफ़्ज़ भँवर का इस्में मुअन्नस हैं, आठ शक्लों की होती हैं। 1 भँवर की शक्ल 2 सीप की शक्ल 3 गुलाब की कली की शक्ल 4 भैंस की ज़बान की शक्ल 5 नाफ़े आहू की शक्ल 6 कनखजूरे की शक्ल 7 खड़ाऊँ की शक्ल 8 साँप की शक्ल। यह घोड़े के जिस्म पर हस्बेज़ेल मुक़ाम पर पाई जाती है। 1 ज़ेरे लब 2 सीना 3 सर 4 अतराफ़े नाफ़ 5 पेशानी 6 ज़ेरे कल्ला 7 आँखों के दरमियान 8 गर्दन 9 पुश्त। इन के मुख़्तालिफ़ इस्तिलाही नाम मशहूर है।

पुत्ली (स्त्री) घोड़े के सुम की तली जो मख़्रूती शक्ल की नर्म गद्दी सी होती है जिसकी हिफ़ाज़त के लिए सुम पर नाल लगाया जाता है। **देखें** बंद।

भरे गर गोश्त पुतली में किसी के।
तो लाज़िम है कि होश उड़ जायें उसके।।

पट्टी छोड़ना (क्रिया) घोड़े को पोइय्या दौड़ाने के लिए लगाम खींच कर ढीली छोड़ना मुराद तेज़ दौड़ाना।

पचकलियाँ (पु0) वह घोड़ा जिसके चारों पैर घुटनों तक जिस्म के रंग से मुख़्तलिफ़ यक रंग रफेद हों और पैर का रंग थूथ्नी पर भी हो। अंग्रेज़ी में ँपिजम`जवबापदह कहलाता है।

कम उन सब से है पचकलियाँ और चाल।
नही है बाद उनके और कुछ माल।।

पिछाड़ी (स्त्री) थान पर छोड़े के पिछले पैर में बाँधने की रस्सी। **प्रयोग** घोड़ा पछाड़ी तोड़ कर थान पर से भाग गया। **बाँधना, डालना** के साथ बोला जाता है।

पदम (पु0) घोड़े की अगली बायीं टाँग की पिंडली पर सुम के क़रीब असल रंग के ख़िलाफ़ सफेद रंग का छोटा सा निशान या चित्ती।

वलेकिन वह सफ़ेदी हो मगर ख़ाल।
तो जान इसको पदम कहते है दल्लाल।।

परतला (पु0) देखें चारजामा (पेशा ज़ीन साज़ी)

परेशान गोश (पु0) वह घोड़ा जिसके कान ढीले और गधे की तरह अकसर अपनी जगह से ज़रा नीचे को उतरे और गिरे रहते हों ऐसा घोड़ा बार बरदारी के लिए मज़बूत और दम कस होता है।

परेशान गोश है वह ऐ सुखनदाँ।
कुशादा ढीले जिसके हों कान।।

पुश्तक (स्त्री) पुश्त का इस्में मुसग्गर। घोड़े की कमर का आख़िरी यानी कूल्हों के ऊपर का हिस्सा जिसको घोड़ा शरारत या ऐबी होने की वजह से सवारी के वक्त ऊपर को उच्का देता है। **झाड़ना, मारना** के साथ बोला जाता है।

पल्ला कश (पु0) वह घोड़ा जो बिला थकान लम्बी मंज़िल तय करे। मशक़्क़त बरदाश्त करने और लम्बी मंज़िल चलने वाला घोड़ा।

पंच (पु0) चार साल से ऊपर की उम्र का घोड़ा जिसके दूध के दाँत टूटकर दो बड़े दाँत निकल आयें। इस उम्र के लिहाज़ से शुरू पंज या पंच कहलाता और पूरा पाँच साल का शुमार किया जाता है।

गिरें कोनों के जब दाँत ऐ सुख़न संज।
तो लाज़िम है कहे तू उसको है पंज।।

पोइय्या (स्त्री) घोड़े की एक तेज़ रफ़तार चाल जिसमें वह पिछले दोनों पैर एक साथ उठाकर कूदता हुआ दौड़ता है। उसी तरह अगले दोनों पैर भी एक साथ उठाता और आगे को डालता है। इस चाल को फ़ारसी में चहारतक, उर्दू में चौकड़ी या सरपट और अंग्रेज़ी में गैलाप कहते है। अहले लखनऊ घोड़े की इस चाल को फ़लक सैर के नाम से मौसूम करते हैं। **उखड़ना, पोइय्या जाना, चौकड़ी भरना, सरपट जाना** भी बोला जाता है।

पहनाना (क्रिया) घोड़े का बहार या मस्ती पर आना, घोड़ी की ख़्वाहिश करना।

यक़ीं है यूँ कई दिन जो करेगा।
तो वह घोड़ा तेरा पहना रहेगा।।

पे (स्त्री) घोड़े के सुम के नीचे का पिछला हिस्सा जो पुत्ली के पीछे से शुरू होता है। **देखें** बंद।

तले पर हाथ के पट्ठा जो इक है।
तो अह्ले हिन्द कहते है उसे पे।।

तबरगों (पु0) वह घोड़ा जिसका पीछा या कूल्हा (ड़े) जैसा तिखूँटा हो यानी दुम के पास नुकीला और पुट्ठो की तरफ चौड़ा। इस शकल का घोड़ा ऐबी समझा जाता है क्योंकि वह मोटा और तवाना नही होता हमेशा कमज़ोर रहता है।

कहे तो तुझ को भी उस को बता दूँ।
कहाते है यह जिसको सब तबरगाँ।
वह घोड़ा जिसका पीछा हो तिखाँटा।
तबरगाँ रखते हैं सब नाम उसका।

तखता गर्दन (पु0) वह घोड़ा जिसकी गर्दन ऊँट की गर्दन की तरह सीधी ऊपर उठी हुई रहे और क़ौसनुमा न होती हों यानी कुंडा न करता हो। कुंडा करने से मुराद गर्दन को क़ौसनुमा करना, सिर के मुक़ाब्ले में आगे निकला हुआ रखना।

वह घोड़ा जो नही करता है कुंडा।
उसे कोई नही कहता है अच्छा।।
कहें हैं तख़्ता गर्दन उसको लारैब।
वले मुत्लक़ नही मुगलों मे कुछ ऐब।।

तुरंग (पु0) संस्कृत तुरंगः बमानी घोड़ा। **कहावत** जोत जोत मारे बैलुवा, बैठे कहाये तुरंग।

तोब्ड़ा (पु0) घोड़े को रातिब खिलाने की चमड़े या टाट की थैली जिसमें दाना भर कर घोड़े के मुंह पर चढ़ा देते हैं। **चढ़ाना** तोब्ड़े में दाना डाल कर घोड़े की थूथ्नी पर लटका देता इस तरह की उसका मुंह उसमें आ जाये और वह आसानी से दाना खा ले।

थान (पु0) घोड़े के बंधने की मुस्तकिल जगह जहाँ वह आराम करने के वक़्त खड़ा रहे या लोट पोट सके। उस पर घाँस की गुदगुदी तह जमा दी जाती है ताकि लोटने में घोड़े के जिस्म को ज़मीन की रगड़ न लगे इसको इस्तिलाह में थान बनाना कहते हैं।

थान का टर्रा घोड़ा (पु0) वह घोड़ा जो थान के करीब किसी को आने न दे या ग़ैर आदमियों का थान के पास आना बुरा जाने और शरारत करे।

थनी (स्त्री) घोड़े के पेशाब के अजू की जगह खाल के अतराफ़ घुंडीनुमा या ग़दूद की शक्ल की पैदाशुदा खाल जो थन की सूरत होती है ऐसा घोड़ा बहुत ही मनहूस और आबादी को वीरान करने वाला ख़याल किया जाता है।

अगर चाहे थनी कट जाये पियारे।
अमल करना तू कहने पर हमारे।।

टाप (स्त्री) अंग्रेज़ी लफ़्ज़ जो कस्रते इस्तेमाल से उर्दू बन गया है। घोड़े के सुम का पूरा हिस्सा। **मारना** घोड़े का ज़मीन पर सुम पटकना, मारना, जिससे उस का किसी जुरूरत की तरफ़ इशारा करना होता है।

टाँगन (स्त्री) पहाड़ी टट्टू जो क़द का छोटा और जिस्म का गठा हुआ और मज़बूत होता है।

टप्पल (पु0) वह घोड़ा जिसकी पेशानी पर सफेद बालों का हाथ के अंगूठे की चौड़ान से बड़ा निशान यानी उस पर अगर अंगूठा रखा जाये तो निशान बाहर को निकला हुआ दिखाई दे।

सितारा लोग कहते है उसे सब।
कि जो जावे अंगूठे के तले दब।।
जो है उससे बड़ा तो है वह टप्पल।
उसे ले ले नहीं कुछ उसमें हल चल।।

टट्टू (पु0) एक क़िस्म का कम ज़ात या बद नस्ला घोड़ा जो आम तौर से छोटे हाड़, गठीले जिस्म और मज़बूत हाथ पैर का होता है पहाड़ी इलाक़ों में बहुत काम देता है यह जानवर अक्सर कटखना होता है और बहुत बुरी तरह से काटता है उसका यह ऐब इस क़दर तकलीफ़ देह होता है कि बाज़ औक़ात उसको मार डालना मुनासिब समझा जाता है। हिन्दी में एक छंद है जिसमें ऐसे टट्टू और चंद दूसरी हस्तियों को कोसा गया है।

मेरे सूम जिज़्मान, मेरे कटखना टट्टू।
मेरे करक्षा नार, मेरे नार अदम निखट्टू।।
पुत्र वही मर जाये जो कुल मे दाग़ लगावे।
वही मर जाये जो काहो काम न आवे।

बे नियाब राजा मर जाये तहिके मरे न रोये।
सुन विकरम बेताल कह तबहीं नींद भर सोये।

टट्वानी (स्त्री) टट्टू का इस्मे मुअन्नस।

ठोकर (स्त्री) घोड़े की अगली टाँगों के सुमों की सामने की कोर जिस घोड़े के सुमों की यह कोर मामूल से ज़ियादा बड़ी या फैली हुई होती है वह चलने में अक्सर ठोकर खाता है और कभी कभी गिर भी पड़ता है। **खाना लेना** के साथ बोला जाता है।

जलक (स्त्री) देखें झोल।

जुल (स्त्री) गुल का मुअ़र्रब। **देखें** बाल पोश और झोल।

जोत्ना (क्रिया) गाड़ी खिचवाने को घोड़े या ढोर को गाड़ी से बाँधना, जोड़ना या लगाना।

जै मंगल (पु0) वह घोड़ा जिसका पेट, फोते, मुंह सफेद, दुम निस्फ़ सफेद और आँखों में सफेदी का चक्कर हो ऐसा घोड़ा बहुत मुतर्बक समझा जाता है।

छपट (स्त्री) घोड़े की जोशीली और मामूल से ज़ियादा आर्ज़ी और वक़्ती तेज़ दौड़। **झपट्ना, झप्टाना** के साथ बोला जाता है। **प्रयोग** भाई क़तार से आगे न बढ़ना ऐसा न हो कि घोड़े की झपट में आ जाओ।

जो है हमवार उस को जान चिपटा।
बजौक़ उसको जहाँ चाहे तो झप्टा।।

झुरझुरी (स्त्री) घोड़े की फुरेरी। **लेना** इज़तरारी तौर पर घोड़े का जिस्म को एक दम समेट कर छोड़ना, झटकना।

झमक (स्त्री) घोड़े की एक सधाई हुई चाल जिसमें वह जल्दी जल्दी उठाता और झोला देकर दायें बायें आहिस्ता–आहिस्ता और क़रीब–क़रीब डालता है। **~झमकना, झमकाना** के साथ बोला जाता है।

झोल (स्त्री) घोड़े को ओढ़ाने की चादर जो सर्दी से बचाव के लिए उस पर डाली जाती है झोल मौसम से बचाव के लिए और बालपोश खुशनुमाई और मक्खी से हिफाज़त को इस्तेमाल किया जाता है। **डालना** के साथ बोला जाता है।

चाबुक (पु0) घोड़े को सज़ा देने के लिए तस्मे या सूत की पतली गाव दुम बटी हुई डोरी जिसमें गिरफ़्त को हस्बेज़रूरत लम्बा एक चोबी दस्ता भी होता है। **मारना** के साथ बोला जाता है। **उड़ाना, बजाना, पँखारना, चलाना** चाबुक की आवाज़ करना, मगर आमतौर से चाबुक मारना मुराद ली जाती है।

चाबुक सवार (पु0) घोड़े की सवारी का माहिर और उसकी चाल और रफ़्तार के मुतअल्लिक़ पूरी वाक्फ़ियत रखने वाला कारवाँ अर्फ आम में घोड़े को सधाने, चलते–फिरते सिखाने और उसकी चाल ढ़ाल की तरबियत करने वाले को कहते हैं जो उसके ऐबों स़वाब की भी पूरी पूरी पहचान रखता हो।

चाल (पु0) सुर्ख व सफेद मिले जुले बालों वाला चकोर की रंगत की व़ज़अ़ का घोड़ा।

कम उन सब से हैं पचकलियाँ और चाल।
नही है बाद उनके कुछ और माल।।

चपाई सुम/चपाई सुमा (पु0) पतले सुम वाला घोड़ा जो चढ़ाई पर न चढ़ सके और ज़ियादा चलने से जी चुराये।

चपाई सुम उसे कहते हैं सारे।
कि जिसके पतले सुम होते हैं पियारे।।

चप दस्त (पु0) वह घोड़ा जिसकी अगली बायीं टाँग का पैर असल रंग के ख़िलाफ़ सफेद हों बहुत मनहूस समझा जाता है।

सरक जा पास से उसके तू कर जस्त।
हज़र कर उससे वह घोड़ा है चप दस्त।।

चतर बंग/चतर भंग (स्त्री) घोड़े की कमर के ऊपर की भौंरी अगर ऐसी जगह हो कि काठी के नीचे आ जाये तो बहुत मनहूस समझी जाती है, राजपूत ख़ास तौर से मनहूस समझते हैं ऐसे घोड़े को सवारी में नही रखते। **देखें** भँवरी।

अब उस भौंवरी का मैं तुछ से कहूँ ढंग।
मुवस्सिर जिसको कहते है चतर बंग।।

चग़र (पु0) देखें आदम चश्म।

चक़र (स्त्री) देखें संगीन।

चिमटा सींगन (स्त्री) देखें संगीन।

चुमकारना (क्रिया) पुचकारना, घोड़े पर इज़हारे शफ़्क़त करना और उसके इज़हार के लिए उसके पुट्ठे या गर्दन को हाथ से थपकना जो मेहनत पर शाबाशी देने की अलामत है।

चमकना (क्रिया) घोड़े का किसी चीज़ से डरकर उचक पड़ना, डरना, ख़ौफ़ ज़दा होना। **प्रयोग** जमीन पर कीचड़ या पानी का निशान देखकर घोड़ा चमकता है। **2** सधाने से घोड़े की चमक निकल जाती है।

चौकड़ी (स्त्री) चार घोड़े जो गाड़ी में साथ जोते जायें। **देखें** पोइय्या।

चौंरी (स्त्री) चँवर का इस्मेमुसग्ग़र। घोड़े पर से मक्खियाँ उड़ाने को बालों की बनी हुई पौंचड़ी, झालनी।

चित्र– चौंरी

चहारतक (स्त्री) देखें पोइय्या।

चीना (पु0) दूधिया रंग का घोड़ा जिस पर सुर्ख या सियाह चित्तियाँ हों।

छंदवा (पु0) वह घोड़ा जो खेतों में फिरने का आज़ाद छोड़ दिया गया हो। हिन्दू राजाओं में एक ख़ास रस्म के तहत यह अमल किया जाता है।

ख़च्चर (पु0) घोड़े की मुजन्नस नस्ल जो गधे के मेल से पैदा होती है। खच्चर की नस्ल नही होती।

ख़र्ख़रा (पु0) देखें खरेरा।

ख़र्सुमा (पु0) ख़मदार सुमवाला घोड़ा जो चलने में बहुत ठोकरें खाये।

सुमों मे जौंन से घोड़े के ख़म हो।
तो फिर वह हो जियादा या कि कम हो।।
बहुत खावेगा वह ठोकर तू रख धियान।
और उस घोड़े को अपने ख़र्सुमा जान।।

ख़िंग (पु0) दूध की रंगत के मानिंद एक रंग सफेद घोड़ा।

ख़िंगमगसी (पु0) देखें चीना।

ख़ोशा (पु0) देखें सींगन या चिमटा सींगन।

दाग़ (पु0) घोड़े कि जिस्म पर किसी ख़ास ठप्पे का निशान जो शिनाख़्त के लिए आमतौर से फौजी घोड़ों पर आहनी ठप्पा गर्म कर के लगा देने से जिल्द के ऊपर उठ आता है। **दाग़ना, दाग़ देना** के साथ बोला जाता है।

दला (पु0) सुम की तली में ख़ाली जगह।

दुल्की (स्त्री) अंग्रेज़ी टड़ौट, घोड़े की एक दौड़ का नाम जिसमे वह क़दम पर क़दम डालता हुआ चलता है इस तरह की सामने के सीधे पैर की जगह पिछला उल्टा पैर और सीधे पैर की जगह उल्टा पैर डालता हुआ लम्बा और तेज क़दम चले। घोड़े की इस चाल मे सवार को बहुत थकान होती है मगर गाड़ी मे चलने के लिए निहायत आराम देह रहती है।

दमकल (पु0) सफ़र की थकान और लम्बी दौड़ मे न हाँफने वाला साँस का मज़बूत घोड़ा।

दंदाँगीर (पु0) कटखना घोड़ा जो ख़तरनाक और ऐबदार घोड़ों मे शुमार किया जाता है।

अगर है कोई दंदाँगीर घोड़ा।
तो वह घोड़ों मे है बे पीर घोड़ा।।

दौड़ (स्त्री) घोड़े के मिंजुमला। ऐबो सवाब या भलाई बुराई के एक चाल भी है जो ज़रूरत के वक्त की दौड़ और तफ़रीह के वक़्त की चाल कहलाती है दौड़ मे पोइय्या। दुल्की और बेल और चाल मे रहवार, कूदैती, लंगूरी और धम्माली वगैरा शामिल हैं।

दो गामा (स्त्री) देखें दुल्की।

दूगर (स्त्री) देखें सींगन।

दो घड़ी फ़िरत (स्त्री) देखें अटेरन।

दो लत्ती (स्त्री) घोड़े की पिछली दोनों टाँगें जो गुस्से या शरारत के वक्त वह उछल कर पीछे को मारता है उस की इस हर्कत को दो लत्ती **मारना, झाड़ना, चलाना और फेंकना** भी कहते हैं।

दोयक (पु0) दो साल से ऊपर और चार साल की उम्र से कम घोड़े को जिस के दूध के दाँत टूट गये हो, इस्तिलाह में दोयक कहते हैं।

जब उसने बीच मे का दाँत तोड़ा।
मुक़र्रर तब दोयक होता है घोड़ा।।

दहाना (पु0) देखें निहार।

देवबंद/देवमन (स्त्री) घोड़े के बाजू के नीचे छाती के सिरे पर की भौंरी जिसको हर मज़हबो मिल्लत में मुबारक और सईद ख़याल किया

जाता है या भौंरी घोड़े के क़वी होने की दलील खयाल की जाती है। **2** एक क़िस्म के मख़सूस दाग़ का नाम जो घोड़े पर लगाया जाता है। **देखें** भौंरी।

धम्माली (स्त्री) घोड़े की एक निहायत धीमी चाल जिसमे उसको जल्दी–जल्दी क़दम उठाना और क़रीब–क़रीब फुट आध फुट के फास्ले पर आगे पीछे डालना सिखाया जाता है ख़रीददार को घोड़े का ठाठ दिखाने को यह चाल चलाई जाती है।

धजबल (स्त्री) घोड़े के बाजू के नीचे की भौंरी। यह भौंरी घोड़े के क़वी होने की दलील ख़याल की जाती है। **देखें** भौंरी।

डपट्ना (क्रिया) घोड़े को चाबुक की आवाज़ से डराना और चमकना या डराने को चाबुक की आवाज़ करना और ललकारना।

डपटना शेर दम के हक़ मे सुम है।
करे जो दम बहुत वह शेर दम है।।

ढंक उजाड़ (स्त्री) घोड़े के कूलों पर मिक़अद के क़रीब की भौंरी जिसको सब क़ौमों मे मनहूस और बुरा समझा जाता है। **देखें** भौंरी।

उसे बद जानते है ख़ास और आम।
वह भौंरी ढंक उजाड़ ऐसी है बदनाम।।

रातब (पु0) घोड़े की मुक़र्रिरा ग़िज़ा जो उसे वक्त पर और मुअय्यन मिक़दार मे दी जाये। रातब अरबी लफ़्ज़ है जो कस्रते इस्तेमाल से उर्दू बन गया है।

रास (स्त्री) देखें बाद। **उठाना** रास का हाथ मे लेकर घोड़े को चलने का इशारा देना। **पटख़ार्ना** गाड़ी मे जुते हुये घोड़े की कमर पर रास की ज़र्ब देना जो रफ़्तार तेज़ करने को इशारा होता है। **डालना** छोड़ देना या ढीली कर देना जो घोड़े को ठहराने या रफ़्तार को एक हालत पर रखने की अलामत समझी जाती है। **सँभालना** घोड़े को काबू मे करने के लिए रास को हाथ मे लेना और हस्बे क़ाइदा पकड़ना। **2** कोई वाहिद घोड़ा या ढोर।

राकबपोश (पु0) छतर या छत्री जो सवार के ऊपर साया रखने को बतौर शामियाना रहे। मंडप, मेक ढम्बर। **देखें** आफताबी पेशा छतरीसाजी भाग–

राह्वार/राह्वाल (स्त्री) घोड़े की धीमी और क़दम क़दम चाल जो बतौर टहलाई और हवा खोरी के लिए चलाई जाती है। अंग्रेज़ी मे शॉर्ट एम्बेल कहते हैं।

रौंद (स्त्री) अंग्रेज़ी लफ़्ज़ का उर्दू तलफ़्फ़ुज़। **देखें** रहवार।

ज़र्दा (पु0) देखें समंद।

ज़ीन पुश्त (पु0) वह घोड़ा जिसकी कमर मामूल से ज़ियादा दबी या धँसी हुई हो। ऐसा घोड़ा रफ़्तार का ऐबी और चलने का चोर होता है ज़ियादा दूर नही जा सकता।

बहुत सा जिसकी हो वे पुश्त मे ख़म।
तो जान उसको कि पल्ला कश है वह कम ।।
मुग़ल सब ज़ीन पुश्त उसको हैं कहते
ताअज्जुब से हैं सारे देख रहते।।

सापन (स्त्री) घोड़े की गर्दन के बालों यानी (अयाल) की जड़ के क़रीब की भौंरी, अगर बालों यानी अयाल के दोनों तरफ़ हो तो बुरी नही वह इस्तिलाह में **नाग** कहलाती है और अगर एक तरफ हो तो बहुत मनहूस ख़याल की जाती है। **देखें** भौंरी।

अगर भौंरी है जड़ मे बाल की एक।
तो बस सापन है वह हरगिज़ नही नेक।।
जो हैं दोनों तरफ़ तो उस से मत भाग।
कि है वह यमुन कहते है उसे नाग।।

साग़री (स्त्री) अहले लखनऊ की इस्तिलाह में घोड़े की मिक़अद को कहते हैं।

खड़ा हो साग़री के पास जाकर।
गिरा लोटे से तो पानी ज़मीन पर।।

साँड (पु0) वह घोड़ा जो अफ़ज़ाइशे नस्ल के लिए हिफ़ाज़त से परवरिश किया जाये और किसी काम मे न लाया जाये।

साईस/सईस (पु0) घोड़े का ख़िदमती जिसके ज़िम्मे घोड़े की निगहदाश्त खिलाई पिलाई और थान की निगहबानी का काम हो।

सब्ज़ा (पु0) किसी क़दर सियाही माइल सफेद रंग घोड़ा यानी जिसकी सफेदी मे मैलापन हो आमतौर से बदरंग समझा जाता है। अंग्रेज़ी मे गिरे कहते हैं।

सितारा (पु0) घोड़े की पेशानी पर सफेद बालों की चित्ती जो हाथ के अंगूठे के सिरे के नीचे छिप जाये। ऐसा घोड़ा सितारा पेशानी के नाम से मौसूम किया और निहायत मनहूस समझा जाता है।

सितारा लोग कहते हैं उसे सब।
कि जो जावे अंगूठे के तले दब।।
न ले मुतलक़ उसे मेरा कहा मान।
निहायत नहस और बद यमुन तू जान।।

सितारा पेशानी (पु0) देखें सितारा।

सधाना (क्रिया) नये घोड़े की तरबियत करना। सवारी और गाड़ी के लायक़ बनाना।

सरपट (स्त्री) देखें पोइय्या। **प्रयोग** देखना घोड़ा कैसा सरपट जा रहा है गोया पेट ज़मीन से लग गया है।

सरशफ़ (पु0) फ़ारसी लफ़्ज़ बमानी सरसों के दाने। इस्तिलाह में घोड़े के दाँतों की सियाही या ज़र्द नुक़तों को कहते है।

सुरंग (पु0) शुअ़ला रंग घोड़ा जिसकी रंगत मे गुले अनार या ज़ाफरान के रंग की सी झलक हो। अंग्रेज़ी मे चिस्ट नट कहते हैं।

समंद (पु0) वह घोड़ा जिसका रंग सोने के रंग से मुशाबा और दुम सियाह हो। नुक़रा से कम दर्जा समझा जाता है।

सिंजाब (पु0) जंगली चूहे और लोम्ड़ी की रंगत से मिलता हुआ ख़ाकिस्तर रंग घोड़ा।

सवार (पु0) घोड़े, ऊँट और हाथी वग़ैरह की पीठ पर बैठकर सफ़र करने वाला शाख़्स, घोड़े की सवारी जानने वाला।

सींगन (स्त्री) घोड़े की पेशानी पर की भौंरियाँ जो तादाद में दो से ज़ाइद और पाँच तक एक गुच्छे की शक्ल मे हो।

गई है बात नज़दीक अपने यह छन।
मुक़र्रर यार तू जान इसको सींगन।।
कोई कहता है चिमटा सींगन इसको।
कोई कहता है क़ैंची ऐ निको खूँ।
मुग़ल कहते हैं लेकिन इसको खोशा।
नही लेते उसे लेते है गोशा।
कोई माथे मे चक़र देखकर यार।
कहे है मैं नही इसका खरीददार।

शबकोर (पु0) वह घोड़ा जिसको शब में सियाह और सफेद चीज़ मे तमीज़ न हो। इस हालत को घोड़े की निगाह का नुक़स खयाल किया जाता है।

शुतर दंदाँ (पु0) वह घोड़ा जिसके दाँत मामूल से ज़ियादा बड़े हों।

शिर्ग़ा/शुर्ग़ा (पु0) बादामी रंग का घोड़ा।

सुरंग उन सबसे गो बिल्कुल दरे है।
नमूद उस से इधर शिर्ग़ा करे है।।

शुरू पंच (पु0) देखें पंच।

शहसवार (पु0) घोड़े की सवारी जानने वाला उस्ताद, माहिरे फ़न जो हर क़िस्म के घोड़े को क़ाबू मे रख सके।

शग़ाम (स्त्री) लफ़्ज़ शहग़ाम का ग़लत तलफ्फुज़।

शहगाम (स्त्री) देखें बेल।

शेरदम (पु0) शरीर और निहायत गुस्सीला घोड़ा जो कोड़े की ताब न ला सके।

त़ाक़ी (पु0) वह घोड़ा जिसकी एक आँख सफेद हो निहायत मनहूस और सूरत का ऐबी होता है।

सफेद एक आँख जिस घोड़े की होवे।
तो लाज़िम है कि मालिक इसका रो दे।।
यह सब कहते है घोड़ा है यह त़ाक़ी।
रखेगा कुछ न उस के घर मे बाक़ी।

त़वेला (पु0) देखें घुड़सार।

अ़क़रब (पु0) वह टप्पल जिसके अंदर चंद बाल घोड़े के जिस्म के बालों के हमरंग हों ऐसा निशान सितारे की तरह मनहूस ख़याल किया जाता है। **देखें** टप्पल और सितारा।

अगर टप्पल मे है कुछ बाल हम रंग।
तो लेने का न कर तू उसके आहंग।
खबरदार उससे रह है ऐब बेढब।
मुबस्सिर लोग उसे कहते है अक़रब।

ऐबी (पु0) नाक़िस उल खिल्क़त या फितरी ऐब रखने वाला घोड़ा, घोड़े की शिनाख़्त रखने वाले फ़नदाँ और माहिरीन घोड़े के पाँच ऐब क़ाबिल

लिहाज़ बताते और उनको इस्तिलाह मे पंज ऐबे शरई कहते हैं। मिनजुमला पाँच शरई ऐबों के पहला ऐब भौंरी का दूसरा रंग का तीसर अअ़ज़ा का चौथा रफ़्तार का और पाँचवाँ चेहरे मुहरे का होता है।

फ़लक सैर (स्त्री) देखें पोइय्या।

क़ज़्री (स्त्री) घोड़े पर डालने का कपड़ा या जाली।

क़च पेशानी (स्त्री) उभरी हुई पेशानी का घोड़ा सूरत का ऐबी और फितरत मे शरीर होता है बाज़ चाबुक सवार क़च मस्तक कहते हैं।

अगर ऊँचा हो वह माथे का यारो
मुग़ल कहते है क़च पेशानी उसको
वले कहते है सब अहले बसारत।
कि यह घोड़ा करे गा कुछ शरारत।

क़राकूज़ा (पु0) वह सुरंग जिसके फोते और अ़ज़्वे तनासुल तक खाल सियाह हो ऐसा घोड़ा बहुत अच्छा समझा जाता है। **देखें** सुरंग।

क़ज़ई (स्त्री) देखें निहार।

कुल्ला (पु0) वह जिसकी पीठ पर गर्दन से दुम तक दो उंगल चौड़ी सियाह धारी हों।

क़ैंची (स्त्री) देखें सींगन।

कानोन (पु0) देखें सुरंग।

कावा (पु0) चक्कर या फेरे जो घोड़े को सधाने के लिए मुक़र्रिरा दौर मे कराये जाये। **2** घोड़े को सधाने के लिए घिस्से मे जोत कर चक्कर देना। **कराना** के साथ बोला जाता है।

कावा अटेरन/कावे अटेरन (स्त्री) अटेरन और कावा।

कजरी (स्त्री) क़ज़्री का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। **देखें** क़ज़्री।

कच्छी (पु0) देखें जीन पुश्त।

कुशादा रौ (पु0) वह घोड़ा जो टाँगे छिद्राकर ढुल्की चाल चले, जो इसकी चाल का ऐब समझा जाता है।

कमरी (स्त्री) वह घोड़ा जो चढ़ाई पर मुश्किल से चढ़े। बल्कि न चढ़ सके।

ख़ुदा नाकरदा, गर कमरी हो घोड़ा
तो हाँक ऊँचे पर उसको करके कोड़ा
चढ़े गर साफ तो कमरी नही है।
जो हो बर अ़क्स उसके तो यक़ीन है।

कुमैत/कुमैद (पु0) अंग्रेज़ी (बे) वह घोड़ा जिसका रंग उ़न्नाब या ताज़ी खजूर के मानिंद स्याही माइल सुर्ख़ हो घोड़े का यह रंग तमाम रंगों मे अफ़्ज़ल समझा जाता है। इस रंग का घोड़ा गर्मी, सर्दी और सफ़र की तक्लीफ़ का बहुत मुतहम्मुल होता है और बहुत लम्बी मंजिलें तय करता है।

चूँ कुमैत हमरंग खुर्मा बूद।
तवाना बः सर्मा व गर्मा बूद।।
जो आवे रंग मे घोड़े के तकरार।
तो कह सबसे कुमैत अच्छा है ऐ यार।।

कुलच/कूलच (पु0) वह घोड़ा जिसकी पिछली टाँगों की कौंचे (पिंडलियों के ऊपर के सिरे चलने मे आपस मे टकरायें)।

कमख़ोर (पु0) वह घोड़ा जिससे ग़िज़ा न खाई जाये यानी मामूल से बहुत कम खाने वाला घोड़ा ऐसा घोड़ा कमज़ोर व ना तवाँ रहता है और मेहनत नही उठा सकता।

कोई सौदागर उसको ले कहीं जाये।
वले कमख़ोर से हरगिज़ न फ़ल पावे।

कंठ/कंठी (पु0/स्त्री) घोड़े के गले यानी गर्दन के नीचे की भौंरी। ईरानी इसको बहुत मुबारक समझते हैं और हमयानज़र कहते हैं। **देखें** भौंरी।

गले के नीचे जो भौंरी हो उसको।
कहा करते हैं कंठी सारे हिन्दू।।
इसी भौंरी को खुश हो के सारे।
मुग़ल हमयानज़र कहते हैं प्यारे।।

कुंडा करना (क्रिया) घोड़े का चलने मे गर्दन को तानकर क़ौसनुमा करना। **देखें** तख़ता गर्दन।

कनौती/कनौतियाँ (स्त्री) कान का इस्मे मुसग्गर। घोड़े के कान के लिए मख़सूस इस्तिलाह। **बदलना** घोड़े का गुस्से या खौफ़ की हालत मे कानों को ग़ैर मामूली हर्कत देना। **चढ़ाना** घोड़े का चमकने या चौकन्ना होने की हालत मे कानों को तानकर सीधा खड़ा करना। **दबाना** तेज़ रफतारी या जुस्त के वक़्त घोड़े का कानों को तान कर गर्दन से मिला देना।

कोतल (पु0) सवार के साथ का दूसरा हमराही घोड़ा जो बवक्त जुरूरत काम आये ऐसे घोड़े आमतौर से बादशाहों और अमीरों की सवारी के साथ रहते हैं ताकि अगर कोई हादसा पेश आये तो दूसरा घोड़ा फ़ौरन बदल दिया जाये।

कूदेती (स्त्री) घोड़े की नुमाइशी चालों मे की एक चाल जो दिखावे के लिए सिखाई जाती है इस चाल मे घोड़ा पिछले पैरों पर कूदता हुआ चलता है और अगला पैर सिर्फ सहारा लेने को बराये नाम ज़मीन पर टिकाता है।

कुहना लंग (पु0) पैदाइशी लंग करने वाला घोड़ा जिसका वह नुक़्स या ऐब़ ला इलाज हो।

वही होता है कुहना लंग घोड़ा।
कि जो करता है अव्वल लंग थोड़ा।

खाँगड़/खाँगड़ा (पु0) खुटके या आवाज़ का डर निकालने को नये घोड़े के सामने बजाने का एक क़िस्म का झाँज जो खोकले बाँस वग़ैरह का बना लिया जाता है और सधाते वक्त घोड़े के पास अचानक बजा दिया जाता है।

खरेरा (पु0) फ़ारसी मे ख़र्ख़रा, संस्कृत मे खरा और अंग्रेज़ी करीकोम कहते है। घोड़े के बदन पर फेरने का एक क़िस्म का आहनी कंघा जो जिल्द के बालों की मैल मिट्टी साफ़ करने को झाँवँ की तरह तमाम बदन पर रगड़कर फेरा जाता है। **फेरना, करना** के साथ बोला जाता है।

न फेरें खर्ख़रा उस पर न हत्थी।
छुड़ावें मैल कुछ मुतलक़ न उसकी।।

खोप्रा(पु0) घोड़े के सुम का बैरूनी हिस्सा जो पीछे के रुख़ अंदर की तरफ के हिस्से यानी पुतली या तल्वे से मिलता है। 2 सुम का पूरा बैरूनी हिस्सा।

लगे गुल मेख़ गर बंदन मे चढ़कर।
चुभे या खोप्रा पुत्ली मे बढ़कर।।

खूँटा उखाड़ (स्त्री) घोड़े की अगली टाँगों के घुटने के ऊपर की भौंरी जिसका मुंह घोड़े के सुम की तरफ़ हो मुबारक समझी जाती है और जिसका मुंह सवार की तरफ हो मनहूस समझी और खूँटा उखाड़ कही जाती है।

जो रुख़ नीचे को उस भौंरी का हो यार
तो खूँटा गड़ नाम उस का रखो यार
जो मुंह ऊपर को है तो है बुरी क़िस्म।
समझ घूँटा उखाड़ उसका यह है इस्म।।

खूँटा गाड़ (स्त्री) देखें खूटा उखाड़।

खेत (पु0) वह मुक़ाम जो घोड़े के जनम भूम परवरिश और नस्ल की तरक्क़ी के लिए मख़सूस व मशहूर हो हिन्दुस्तान मे घोड़ों का मशहूर खेत अव्वल भेमड़ा थल (इलाक़ा–ए– मारवाड़) और दोम कठ्यावाड़ (इलाक़ा गुजरात) शुमार किया जाता है। जो मज़बूती और सूरत शक्ल मे अरबी घोड़ों से मिलते जुलते है। मगर अहले तहक़ीक़ और कारदाँ लोग मुल्क अरब के घोड़े को सब से बेहतर बताते हैं क़द और जुस्ते के लिहाज़ से मुल्क आष्ट्रेलिया का खेत मशहूर है।

गाव शाना (पु0) वह घोड़ा जिसके शाने मामूल से ज़ियादा ऊँचे और देखने मे बैल के शानों से मुशाबा हो ऐसा घोड़ा बद शक्ल होता है।

बहुत ऊँचे हों शाने जिस के हद से।
नजर वह देखने मे आवें बद से।।
जो पूछे कोई क्या है यह बताना।
तो कह तू यह है घोड़ा गाव शाना।।

गर्रा (पु0) बराबर के सियाह व सफेद मिले जुले बालों वाला तिल चॉवले रंग का घोड़ा। अंग्रेजी मे रोन कहते हैं।

है उसके बाद मुश्की और कुल्ला।
उतर दोनों से है गर्रा व सबज़ा।।

गुल (पु0) घोड़े का दाग जो लोहे के चौपहल ठप्पे से शिनाख़्त के लिए दिया जाता है। **देखें** दाग़।

मगर दो गुल तो दे दे उसके सर पर।
बराबर सोंच के कानों के अंदर।।

गुल ख़ोर (स्त्री) घोड़े को थान पर बाँधने की गले की रस्सी।

गुलदार सब्ज़ा (पु0) अंग्रेज़ी (डेपिलगिरे) सब्ज़ा घोड़ा जिस पर सियाह गुल हों यानी चीते की रंगत से मुशाबा कहीं कहीं सियाह या भूरे रंग के धब्बे हों।

गुल्दस्त (पु0) वह घोड़ा जिसकी अगली यानी सामने की सीधी टाँग बर खिलाफ़ जिस्म के रंग के सफेद हो आमतौर से अच्छा समझा जाता है।

गुलघोर (स्त्री) गुल खोर का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। **देखें** गुल ख़ोर।

गंदःबग़ल (स्त्री) घोड़े की बग़ल के पास की भौंरी जो मुगलों मे बुरी समझी जाती है दूसरी क़ौमें उसका कुछ लिहाज़ नही करतीं।

बग़ल मे जिस के भौंरी का ख़लल है।
मुग़ल कहता उसे गंदः बग़ल है।

गंगापाट (स्त्री) कनखजूरे की शक्ल घोड़े के पेट पर तंग बंधने की जगह की भौंरी। अगर यह भौंरी तंग के नीचे न आये तो बद नहीं समझी जाती, बसूरते दीगर बुरा ख़याल करते हैं।

गोम (स्त्री) मरहटी बोली का लफ़्ज़ बमानी खंखजूरा, मरहटे इस भौंरी को बहुत मनहूस ख़याल करते हैं। **देखें** गंगापाट।

खड़े इक दम नहीं उस पास रहते।
ज़बान अपनी मे है गोम उसको कहते।।

घुड़दौर (स्त्री) घोड़ों की तेज़ रफ़्तारी का मुक़ाबला या घोड़े की तेज़ रफ़्तारी की मश्क़।

घुड़सार (पु0) घोड़े या घोड़ों के रहने का ठिकाना।

घुड़मंडी (स्त्री) देखें नख़्ख़ास।

घिस्सा (पु0) नये घोड़े को गाड़ी में जोतने के लिए सधाने का क़रीब चार पाँच फीट लम्बा चार छः इंच मोटा वज़नी तख़ता जिसको गाड़ी की जगह इस्तेमाल किया जाता है और घोड़े को गाड़ी खींचना सिखाया जाता है। इस तरकीब से घोड़ा गाड़ी खींचने की मशक्क़त उठाने का आदी हो जाता है। **देना** नये घोड़े को सधाने के लिए घस्से मे चलाना। **चित्र–घिस्सा**

घोड़ा (पु0) इन्सानी बरादरी मे निहायत मशहूर व मारूफ और कारआमद जानवर है। इसलिए मुबस्सिरीन और कारदाँ उस्तादों ने उसकी उम्र, सूरत शक्ल, रंग ढंग, चाल और फ़ितरी उयूब के मुतअल्लिक़ जो मुफीद मालूमात फ़राहम की हैं उनकी इस्तिलाहात की तरतीब वार मुफ़स्सल तश्रीह की गयी है और जहाँ कहीं ज़ुरूरत समझी इजमाली तौर पर भी तहरीर कर दिया है। यह मालूमात घोड़ो के खेत, उम्र, सूरत, शक्ल, रंग ढंग, चाल ढाल और फितरी ऐब पर मुशतमिल है। जिनकी इस्तिलाहात के साथ दीगर क़ाबिले ज़िक्र उमूर की इस्तिलाहात भी शरीक है। घोड़े की भलाई या बुराई नस्ल से पहचानी जाती है। मिस्ल मशहूर है।

या पर पूत पिता पर घोड़ा।
जो बहुत नही तो थोड़ा, थोड़ा।

उड़ाना घोड़े के सरपट दौड़ाते हुये ले जाना। **प्रयोग** सवार को देखो कैसा घोड़ा उड़ाये चला आता है। **जोतना** गाड़ी खिँचवाने को घोड़े को गाड़ी मे लगाना या जोड़ना। **कसना** सवारी के लिए घोड़े पर ज़ीन बाँधना, डालना या लगाना।

घोड़ी भरना (क्रिया) घोड़े का घोड़ी से जुफ़्ती करना।

घोडी भरवाना (क्रिया) घोड़ी को गियाबिन करना।

लाँग (स्त्री) देखें आलंक।

लतूआ (पु0) दो लत्ती चलाने या लात मारने वाला घोड़ा।

लदुवा (पु0) बारबरदारी का घोडा या टट्टू।

लगाम (स्त्री) देखें बाग।

लंगड़ी (स्त्री) इकवाई की क़िस्म की घोड़े की नुमाइशी चाल जिसमे उसको तीन टाँग से चलना सिखाया जाता है।

लंगूरी (स्त्री) घोड़े की मोइय्या चाल के मुशाबा नुमाइशी चाल जिसमे उसको सिर्फ कुदाई सिखाई जाती है। जो वह थोड़ी जगह मे हिर फिर कर तेज़ी से कूदता रहता है अंग्रेजी मे प्लंजिंग पीस कहते हैं।

लहेरिया (पु0) एक क़िस्म की बे तरतीब चक्कर फेरी चाल जो नये घोड़े को सधाने के लिए चलाई जाती है।

माहरू (पु0) वह घोड़ा जिसके माथे पर दोनों के दरमियान एक रंग सफेद क़श्क़ा हो।

मुताली (स्त्री) घोड़े के थान पर बिछी हुई घाँस का वह हिस्सा जो उसके पेशाब मे तर होकर खराब हो गया हो। **2** घोड़े का पेशाब करना।

न छोड़े गर किसी घोड़ी पर घोड़ा।
तो कर यह ढोल जो लग जाये जोड़ा।।
मुताली मे तू एक मादा के भर हाथ।

लगा नथनों से नर के ज़ोर के साथ//

मुट्ठा (पु0) सुस्त मिज़ाज और दौड़ने से जी चुराने वाला घोड़ा जिसपर मार का असर भी कम हो।

मुर्ग़ पा (पु0) वह घोड़ा जिसकी अगली टाँगों की पिंडली की हड्डी मे ख़म न हो बिल्कुल सीधी हो।

मुबस्सिर मुर्ग़ पा कहते हैं उसको।
कि जिसके होवें सीधे पाँव दोनों//

मुश्त माल (स्त्री) घोड़े के जिस्म की मालिश जो थकान उतारने के लिए हाथों से घिस्सा लगाकर की जाये। **करना** के साथ बोला जाता है।

मुश्की (पु0) एक रंग सियाह घोड़ा।

मगस्राँ (स्त्री) देखें चौंरी।

मलेपंच (पु0) पाँच बरस से ज़ाइद उम्र का घोड़ा जिसकी कुचलियाँ निकल चुकी हों। घोड़े के दूध के दाँत टूटकर दूसरे दाँत निकल आने के बाद उसकी उम्र की शिनाख़्त सिर्फ़ दाँतों की सियाही से की जाती है जो सिर्फ कारदाँ ही कर सकते हैं। जिस क़दर दाँतों की सियाही कम होती है उतना ही वह बड़ी उम्र का समझा जाता है जब दाँतों पर बिल्कुल सियाही नही रहती तो उस वक्त से वह इस्तिलाह में मलेपंच कहलाता है।

किसी को तेरे कहने से हो गर रंज।
तो कह बे ख़तरा यह तो है मले पंच//

मुंहजोर (पु0) तुंद मिज़ाज, तेज़रौ और ताक़तवर घोड़ा।

महमेज़ (स्त्री) आहनी आँकड़ा जो सवार के जूते की एड़ी पर घोड़े के पेट को गुद्गुदाने या चुभोने के लिए लगा होता है। जिसका अ़मल घोड़े को तेज़ रफ़्तार करने के लिए किया जाता है। **करना लगाना** के साथ बोला जाता है।

चित्र महमेज़

महेरी (स्त्री) महेले का इस्मे मुसग्गर। जिसमे लाम को रे से बदलकर बोलते हैं। **देखें** महेला।

महेला (पु0) अरबी लफ़्ज़ बमानी दलिया, चूरा, मुराद दले हुये चने या जौ का रातिब जो घोड़े के खिलाने को तैयार किया जाये यह लफ़्ज़ कस्रते इस्तेमाल से उर्दू बन गया है।

मीर आख़ोर (पु0) घोड़ों की चरागाह का अफ़सर या निगेहबान।

मेंड़ा (पु0) देखें सींगन।

नाग (पु0) देखें सापन।

नागंद (पु0) घोड़े का दो साल से कम उम्र बच्चा जिसके दूध के दाँत न टूटे हों घोड़ा हर दूसरे साल दूध के दो दाँत तोड़ता है। उनकी बजाये दो बड़े दाँत निकलते हैं उन्हीं से उसकी उम्र की पहचान की जाती है।

जहाँ तक हैं मुबस्सिर ऐ ख़िरद मंद।
उसे सब देखकर कहते हैं नागंद//

नख़्ख़ास (पु0) घुड़मंडी, घोड़ों और दीगर मवेशियों का बाज़ार जहाँ वह ख़रीदो फरोख़्त के लिए लाये जाते हैं। मिस्ल मशहूर है। ''घर घोड़ा नख्ख़ास मोल'' यानी घर पर घोड़ा रखकर बाज़ार मे उसकी क़ीमत करते फिरना।

नुक़रा (पु0) एक रंग सफेद घोड़ा जिसका रंग चाँदी की तरह चमकदार हो।

बैज़ ( ) देखें नुक़रा।

निहार (स्त्री) अरबी लफ़्ज़ नहर का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ काँटेदार क़ज़ई। वह आहनी दहाना जो बाँग बाँधने के लिए घोड़े के मुंह मे दिया जाता है। शरीर और मुंह ज़ोर घोड़े के लिए यह दहाना काँटेदार होता है जो बाग खींचने से घोड़े के मुंह मे चुभते हैं जिससे वह क़ाबू मे रहता है।

नेश (स्त्री) घोड़े की कुच्ली या कुचलियाँ जो दूध के दाँत टूटकर निकलती है। **देखें** मलेपंच।

नही होता है कुछ उनमे कमोबेश।
मुबस्सिर लोग उसे कहते हैं फिर नेश//

नीला सब्ज़ा (पु0) सियाही माइल सफेद रंग घोड़ा, अंग्रेज़ी मे आयरन गिरे कहते हैं। **देखें सब्ज़ा।**

वेलर (पु0) आष्ट्रेलिया का घोड़ा। **देखें** खेत।

हत्ती (स्त्री) घोड़े का बदन साफ़ करने की थैली जिसको हाथ पर चढ़ाकर घोड़े के बदन को मलते और साफ़ करते हैं।

न फेरें खरेरा उस पर न हत्ती।
छुड़ा दे मैल कुछ मुतलक़ न उसकी//

हरवा दिल (स्त्री) घोड़े की छाती के ऊपर की भौंरी का नाम जो निहायत मनहूस समझी जाती है।

तले उसके जो हो छाती के अंदर।
तो हरवा दिल है तू उससे बहुत डर।।

हमयानज़र (स्त्री) घोड़े की एक भौंरी का नाम जिसको कंठ और कंठी भी कहते हैं। **देखें** कंठ/कंठी।

हिन्हिनाना (क्रिया) घोड़े का अपनी कुदरती आवाज़ निकलना।

थाबू (पु0) देखें टट्टू।

यर्ग़ा (पु0) तुर्की ज़बान का लफ़्ज़ है जो पुराने चाबुक सवार दुल्की चाल के लिए बोलते हैं। **देखें** दुल्की।

यूज़ (पु0) देखें सब्जा।

2. पेशा ज़ीनसाज़ी

आर (स्त्री) चमड़े का सामान सीने का एक क़िस्म का सूवा जिसकी नोक पर कट्वाँ नाका तागे को अटकाकर दूसरी तरफ़ खींच लेने को बना होता है।

आरी (स्त्री) आर का इस्मे मुसग़्ग़र।

आवेज़ा (पु0) देखें टीका।

अल्पक (पु0) पुर्तगाली लफ़्ज़, अल्फी नेट बमानी घुंडीदार सुई का ग़लत तलफ़्फुज़। ज़ीन साजों की इस्तिलाह मे बकसुये के बराबर तस्मे पर लगे हुए चमड़े के हलक़े को कहते हैं। जिसका मफ़हूम भी बदल गया है। **देखें** साज़।

अँधेरी/अंधेरी (स्त्री) बार बरदारी के घोड़े की निगाह को यकसूँ रखने के लिए क़रीब छः इंच मुरब्बअ़ शक्ल के चमड़े के बने हुए मुखवे जो दहाने के तस्मे मे सिले और दोनों आँखों की हुए मुखवे जो दहाने के तस्मे मे सिले और दोनों आँखों की बग़लियों से मिले हुये बतौर पर्दा लगे रहते हैं। **देखें** साज़बर।

बाला तंग (पु0) घोड़े पर चार जामा के ऊपर कसा हुआ एक ज़ाइद तंग जो चार जामा को घोड़े की कमर पर ज़ियादा मज़बूत कर देता है। **देखें** तंग।

बकसूवा/बकस्वा (पु0) हिन्दी लफ़्ज़ बंक या बाँक सुये का उर्दू तलफ़्फुज़ एक ख़ास क़िस्म का बना हुआ आहनी या पीतली काँटा जो ज़ीन या साज़ के तस्मों को आपस मे एक दूसरे के साथ हस्बे जुरूरत जोड़ने और खोलने के लिए तस्मे के सिरे पर सी दिया जाता है। **देखें** साज़।

बंगला (पु0) घोड़े के साज़ का वह हिस्सा जो कमर पर कसा जाता है। इसमें मरकस, चिड़िया, चुंगी (चुंगियाँ) और दुम्ची शामिल होती है। वज़नी गाड़ियाँ खींचने वाले घोड़े के साज़ों मे कमर से अलाहिदा ज़रा ऊँचा उठा हुआ कमानीदार बनाया जाता है और यही सूरत उसकी वजह तस्मिया है। **देखें** साज़बर।

बाँगी (स्त्री) मख़्रूती शक्ल की चोबी मेख़ की शक्ल का चमड़े के तस्मे के किनारे पर लकीर का निशान बनाने का ज़ीनसाज़ों का औज़ार।

बैठक (स्त्री) काठी का वस्ती हमवार हिस्सा। **देखें** काठी।

भारकस (पु0) फ़ारसी लफ़्ज़ बारकस का ग़लत तलफ़्फुज़। घोड़े की कमर के साज़ के लम्बे और मोटे तस्मे जो हर सरे पर एक एक होता और गाड़ी के बम को कमर के साज़ के साथ बाँध देने को काम आता है। **देखें** साज़।

पाखर (स्त्री) सवारी के घोड़े के पुट्ठे पर डालने की ज़िरह। जो जंग के मौक़े पर तलवार की ज़र्ब से पुट्ठे की हिफाज़त के लिए डाली जाती है। अम्न के जमाने में बादशाहों और अमीरों के घोड़ों पर ज़ीनत के लिए सोने चाँदी की पाख़्री लगाई जाती हैं और घोड़े के ज़ेवर मे शुमार होती है।

पट्टा (पु0) घोड़े के चेहरे का साज़ जिसको फ़ारसी मे पोज़ी और मुहरा और हिन्दुस्तान मे सरदो आली कहते है इस हिस्से मे दहाना। सीस आवेज़ा, टीका कबाड़ी, कनसिरा, गुलथई और नकवा शामिल है। **देखें** साज़।

पुश्तंग (पु0) अंग्रेजी मे सरसिंगल कहलाता है। **देखें** मानक जोत।

पोज़ी (स्त्री) देखें टप्पा।

तस्मा (पु0) चमड़े की पतली डोरी से लेकर डेढ़ दो इंच चौड़ी पट्टी तक ख्वाह वह किसी लम्बान

की हो। इस्तिलाह मे तस्मा कहलाती है। **बाँधना, लगाना** के साथ बोला जाता है।

तंग (पु0) अंग्रेज़ी बेली बैंड, घोड़े की कमर पट्टी। ज़ीन या कमर के साज़ को घोड़े की पीठ पर कसने की चमड़े, सूत या ऊन की बनी हुई मज़बूत पट्टी। **देखें** पेशा नअ़ल बंदी, पृ0 **कसना, खींचना** तंग को घोड़े की कमर के गिर्द पेटी की तरह मज़बूत बाँधना।

थरू (पु0) वह तहरू का इस्तिलाही ग़लत तलफ़्फ़ुज़। **घिस्सा, मयानतह** नमदे की गद्दी जो काठी या ज़ीन की रगड़ से घोड़े की कमर की हिफ़ाज़त को पीठ पर डाली जाती है।

टीका (पु0) घोड़े के चेहरे के साज़ मे माथे पर लटकने वाला मख़रूती शक्ल का चमड़े का आवेज़ा। **देखें** साज़ मअ् टप्पा।

जुल साज़ (पु0) ज़ीन साज़ का ग़लत तलफ़्फ़ुज़ जो अव्वल ज़ीन से जुल हो गया और ज़ीन साज़ों की इस्तिलाह मे घोड़े की झूल तैयार करने वाले को कहने लगे।

जोत (पु0) (अंग्रेज़ी ट्रेसीज़) रस्सी या चमड़े के बने हुये हस्बे ज़रूरत मोटे और मज़बूत बंद जिससे घोड़े को गाड़ी के साथ जोड़ या जोत दिया जाता है या गाड़ी को घोड़े के साथ बाँध दिया जाता है। **देखें** साज़। **डालना, लगाना** जोत को गाड़ी के साथ अट्काना ताकि घोड़ा गाड़ी के साथ जुड़ जायें। **खींचना** जोत को तान कर गाड़ी के साथ अटकाना ताकि घोड़ा गाड़ी से मिला रहे।

झवुन (पु0) देखें नकुवा।

चार जामा (पु0) चौतहा कपड़ा या नमदे के गद्दी जो मामूली ज़रूरत के लिए ज़ीन या काठी के बजाये घोड़े पर कसी जाये।

चाल (स्त्री) देखें बंगला।

चाँप (स्त्री) वह औज़ार जो सिलाई के वक़्त चमड़े की कोरों को मज़बूती से पकड़े। लफ़्ज़ जमना से जाम और फिर उसका ग़लत तलफ़्फ़ुज़ चाँप ज़ीनसाज़ों की इस्तिलाह हो गयी।

चुटकी (स्त्री) देखें चाँप।

चिड़िया (स्त्री) घोड़े के साज़ यानी बंगले के बीच मे लगा हुआ पीत्ली आँकड़ा जिसमे मुंह ज़ोर घोड़े की गोलबाग अटका दी जाती है। **देखें** साज़।

चुंगी (स्त्री) नांगल घोड़े के कमर के साज़ मे बंगले के दोनों तरफ गाड़ी की बम् के सिरे डालने को चमड़े के बने हुए हल्क़े। **देखें** साज़।

छिपनी (स्त्री) तस्मे मे सूराख़ करने का औज़ार।

ख़ारदार दहाना (पु0) देखें दहाना।

खूगीर (पु0) देखें चारजामा।

दुफ़्ची (स्त्री) घोड़े की कमर के साज़ के पीछे लगा हुआ चमड़े का हलक़ेदार तस्मा जिसके हल्क़े मे घोड़े की दुम डालकर ऊपर को खींच लिया जाता है। **देखें** साज़।

दहाना (पु0) घोड़े के मुंह मे डालने की आहनी कड़ी जिसके सिरों पर लगाम और मुहरे के तस्मे बाँधने को कड़े लगे होते हैं। **देखें** साज़। **1** मुह ज़ोर घोड़े के लिए ख़ारदार दहाना बनाया जाता है जो ख़ारदार दहाना या क़ज़ई के नाम से मौसूम किया जाता है। मुंह ज़ोर घोड़े के लिए एक दूसरी क़िस्म का दहाना अंग्रेजी हर्फ़ (H) एच की शक्ल का होता है। जिसकी बग़लियाँ घोड़े की बाँछों के बाहर खड़ी रहती हैं उनके निचले सिरों मे लगाम के तस्मे बंधे रहते हैं जिसकी दाब से घोड़ा बे क़ाबू नहीं होने पाता।

दीवाल (स्त्री) ज़ीन के बग़ली चमड़े जो घोड़े की पस्लियों पर रकाब के तस्मों के नीचे फैले रहते हैं।

डंडेदार दहाना (पु0) देखें दहाना और ज़ीन।

रास (स्त्री) बाग, लगाम। **देखें** पेशा चाबुक सवारी पृ0।

रास कड़ी (स्त्री) घोड़े के गले के साज़ यानी हंस्ले के कड़े जिनमे से रास के सिरे निकालकर दहाना में बाँधे जाते हैं। **देखें** साज़। अंग्रेज़ी मे (रेनइंग) कहते हैं।

रकाब (स्त्री) सवार के पैर रखने को ज़ीन के दोनों तरफ तसमे में लटके हुए आहनी पा अंदाज़, घोड़े

पर सवार होते वक्त उसी में पैर डालकर चढ़ते हैं। **देखें** ज़ीन।

रहरवा (पु0) देखें फित्राक।

ज़ेरबंद/ज़ेर तंग (पु0) अलफ़ होने वाले घोड़े के डंडेदार दहाने और तंग के दरमियान बंधा हुआ दो मुआ तस्मा। **देखें** ज़ीन।

ज़ीन (पु0) अरबी लफ़्ज़ ज़ेन बमानी आरास्तगी से फ़ारसी मे ज़ीन घोड़े की काठी के मानों मे इस्तेमाल होने लगा। उर्दू में लफ़्ज़ ज़ीन मग़रबी तर्ज़ की चमड़े की बनी हुई काठी के लिए बोला जाने लगा है। जो काठी की निस्बत छोटी, हल्की, सादा और साफ़ बनी होती और घोड़े की कमर पर सवार के बैठने के लिए गद्दी का काम देती है। **धरना, डालना, लगाना** सवारी के लिए घोड़े की कमर पर ज़ीन कसना। **कसना** सवारी के लिए घोड़े की कमर पर ज़ीन बाँधना।

चित्र–ज़ीन

साज़ (पु0) फ़ारसी मे बनाव और हथियार के मानों मे आता है। चाबुक सवारों की इस्तिलाह मे घोड़े के उस तमाम सामान को कहते हैं। जो सवारी और बारबरदारी की जुरूरत के लिए घोड़े पर लगाया जाये, घोड़े के साज़ को तीन हिस्सों मे तक़सीम किया है। अव्वल चेहरे का साज़ उसको इस्तिलाहमे **पट्टा, पोज़ी** सरदाअलि और मुहरा कहते हैं इसके कई हिस्से हैं और हर हिस्से के जुदा जुदा इस्तिलाही नाम है, दोम, छाती का साज़ वह इस्तिलाह मे हंस्ला कहलाता है और कई हिस्सों पर मुश्तमिल है। सोम, कमर का साज़ यह इस्तिलाह मे चाल और बंगले के नाम से मारूफ़ है तस्वीर मे हर हिस्से और उसके अज़ज़ा की शक्ल बताई गयी है। **डालना, लगाना** के साथ बोला जाता है।

सरदो आली (स्त्री) देखें पट्टा।

सुरवाल (स्त्री) काठी के सामने का उभरा हुआ हिस्सा। **देखें** काठी।

सीस (पु0) देखें टीका।

सीना बंद (पु0) घोड़े के सीने का साज़। **देखें** साज़।

शीराज़ (पु0) अरबी लफ़्ज़ सर्राज़ बमानी ज़ीन साज़ का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। **देखें** जिल्द दोम, पेशा जूतीसाज़ी लफ़्ज़ शीराज़ी जूती।

ग़ाशिया (पु0) देखें क़जरी।

फ़ितराक (पु0) ज़ीन या गाठी के पीछे लगा हुआ सवार का मुख़्तसर सामान बांधने का तस्मा।

फ़राख़ी (स्त्री) देखें बाला तंग, पुश्तंग, ज़ेर बंद।

क़ाइज़ा (पु0) देखें दहाना।

क्या एक नीम की लकड़ी हो छोटी।
अंगूठे से ज़्यादा जो हो मोटी।।
उसे दे क़ाइज़े की तरह ऐ यार।
खड़ा कर थान पर उस को घड़ी चार।। (रंगीन)

क़जरी/कजरी (स्त्री) कजली बमानी कारचोबी ज़ीन, पोशिश या चार जामा का तलफ़्फ़ुज़।

क़ज़ई (स्त्री) क़ाइज़े का इस्मे मुसग़्ग़र। **देखें** क़ाइज़ा।

काठी (स्त्री) मश्रिक़ी या एशियाई तर्ज़ का बना हुआ ज़ीन जिसका पिछला हिस्सा सवार के कमर टिकाने को तकियागाह के तौर पर ज़रा ऊपर को उठा हुआ होता है इसी तरह सामने का सिरा भी किसी क़दर उभरा हुआ बनाया जाता है। जिसको सुरवाल कहते हैं और पिछले सिरे को **मोख़्रा** और मेंड़ और दरमियानी हिस्सा बैठक कहलाता है।

चित्र काठी।

कबाड़ी (स्त्री) घोड़े के चेहरे के साज़ का वह तस्मा जिसके सिरों से दहाना बंधा रहता है, मुराद चेहरे का पूरा साज़। **बाधना** के साथ बोला जाता है। **देखें** पट्टा और साज़।

कजरी/कजली (स्त्री) देखें कजली।

किलाम (पु0) अंग्रेज़ी लफ़्ज़ किलिप का ग़लत तलफ़्फ़ुज़, जो ज़ीन साज़ो की इस्तिलाह हो गया है और उस औज़ार के लिए बोला जाता है। जो चमड़े को सीते वक़्त उसकी कोर को दबाए या मज़बूत पकड़े रहे।

कल्ग़ी (स्त्री) घोड़े के चेहरे के साज़ का ज़ेवर जो खुशनुमाई के लिए सर के ऊपर के चमड़े पर लगाया जाता है।

कमर घिस्सा (पु0) देखें चार जामा।

कन सिरा (पु0) चेहरे के साज़ का वह तस्मा जो घोडे के कानों के दरमियान माथे पर रहता और कानों के पीछे बँधा होता है। **देखें** साज़।

कोतल कश (पु0) वह तस्मा या लगाम का हिस्सा जिसको सवार कोतल घोड़े के दहाना से बाँधकर अपनी काठी से बाँध लेता है ताकि कोतल घोड़ा सवार के घोड़े के साथ चले।

गलथई (स्त्री) घोड़े के चेहरे के साज़ का वह तस्मा जो जबड़े के नीचे घोड़े के गले से मिला बँधा रहता है। **देखें** साज़।

गोल बाग (स्त्री) छोटी लगाम जो मुंह ज़ोर घोड़े के दहाने मे बाँधकर कमर के साज़ यानी बंगले की कड़ी मे डाल दी जाती है उसकी वजह घोड़ा ठोकर खाने और ज़मीन की तरफ मुंह मारने से बचा रहता है। **देखें** साज़।

घुटन्ना (पु0) घोड़े के घुटने पर बाँधने की चमड़े की बनी हुई गद्दी जो ऐसे घोड़े के बाँधी जाती है जिसको ज़ाँवा यानी घुटने की बीमारी होती है।

लीद ख़ोरा (पु0) दुमची का वह हिस्सा जो घोड़े की मिक़अद के ऊपर रहता है बाज लोग दुमची को लीदख़ोरा कहते हैं। **देखें** साज़।

मानक जोत (पु0) पुश्तक मारने वाले घोड़े की दुम्ची में पड़े हुये तस्मे जिनके सिरे जोतों में डाल दिये जाते हैं जिनकी वजह घोड़ा पुश्तक नहीं मार सकता। **देखें** साज़।

मुज़म्मे (पु0) अरबी लफ़्ज मुज़मिन, बमानी लंग्ड़ा, अपाहिज का ग़लत तलफ्फुज़, जीन साज़ों की इस्तिलाह मे चमड़े या नमदे की गद्दी को कहते हैं। जो घोड़े के गट्टे पर बाँधने के लिए बनाई जाती है ताकि गट्टे टकराने वाले घोड़े के गट्टे ज़ख़्म पड़ने से हमफूज़ रहें।

मुखेरा (पु0) मक्खियों से हिफ़ाज़ के लिए घोड़े की आँखों पर डालने की बारीक तस्मो की बनी हुई झालर।

मोख़र (पु0) देखें काठी।

मुहरा (पु0) देखें पट्टा।

मैंड़ (स्त्री) देखें काठी।

नागल/नगला (पु0) घोड़े की कमर के साज़ मे बम अटकाने के चमड़े के हल्क़े। **देखें** चुंगी।

नुक्का/नुक्के (पु0) गले के साज़ यानी हँस्ले मे रास कड़ी के नीचे जोत बाँधने का बकसुवा जो क़रीब एक फुट लम्बे तस्मे मे सिला होता है और हँस्ले के दोनों तरफ के कुंडों में एक एक लटका रहता है। **देखें** साज़।

नकुवा (पु0) घोड़े के चेहरे के साज़ का वह तस्मा जो घोड़े की थूथ्नी के बीच मे हल्क़ा किये रहता है। **देखें** साज़।

नहोर (पु0) देखें नुक्का/नुक्के।

हत्ता/ हत्ते (पु0) देखें बाँगी।

हट कस (पु0) देखें बाँगी।

हँस्ला (पु0) घोड़े की छाती का साज़ जो गर्दन पर ठीक आता हुआ बैज़वी शक्ल का चमड़े का बना होता है उसकी मज़बूती के लिए ऊपर पूरे दौर मे पीतल या किसी और धात की कड़ी लगी होती है जिसमे रास कड़ी और जोत के बक्सुओं की कड़ियाँ जुड़ी होती है बाज़ साज़ों मे हँसले के बजाये चमड़े का हल्का पट्टा होता है जिसको तस्मे से गर्दन मे बाँध देते हैं। **देखें** साज़।

3 पेशा बैल बानी

आर (स्त्री) बैल हाँकने वाले के साँटे की आहनी तेज़ नोक जो साँटे के सिरे मे जड़ी रहती और बैल की रफ़्तार को तेज़ करने के लिए उसके पुट्ठे में चुभाई जाती है। **करना** बैल की रफ़्तार को तेज़ करने के लिए आर को उसके पुट्ठे मे चुभोना।

अजोता (पु0) बैल का वह नौजवान पट्ठा जो काम मे ना लाया गया हो यानी गाड़ी या हल मे न जोता गया हो।

अड़ियल/अढियल (पु0) गाड़ी खींचने से जी चुराने और एक जगह जमकर खड़े हो जाने वाला बैल। जी छोडू बैल।

इकहरा (पु0) वह बैल जो फितरत मे दुबला और कम ख़ोर हो इसलिए ज़ियादा मेहनत न बरदाश्त कर सकता हो।

अल्लड़ (पु0) बे सधा बैल। वस्त हिन्द में कम उम्र लड़की या नातख़दा औरत को कहते हैं। **देखें** अजोता।

अँधौनी (स्त्री) बैल की आँखों की जाती या नक़ाब जो उसकी आँखों पर बवकत जुरूरत लटका दी जाती है। अंग्रेज़ी मे बिलिंकर कहते हैं।

अंडवा (पु0) वह बैल जिसके बैज़े न निकाले गये हों।

अंडियाना (क्रिया) बैल की रफ़्तार को तेज़ करने या बैल को तेज़ हाँकने के लिए उसके बैज़ों को डंडे की आर से छेड़ते रहना।

अनन्दी (पु0) नाक़िसुल खिलक़त बैल जिसको अपाहिज समझकर मज़हब के नाम पर छोड़ दिया गया हो या साधू को दे दिया गया हो क्योंकि वह किसी मशक़्कत मे काम के लायक़ नही होता।

बाँडा (पु0) दम टूटा या दुम कटा बैल।

कहावत ठाड़े बाँड खेत पर हँसे।
आज बालम माहरा तिन ठोर बसे।

बिजार (पु0) वह क़वी जुफ़्ती बैल जो अफ़ज़ाइशे नस्ल के लिए गायों के गल्ले मे छोड़ दिया जाये या अफ़जाइशे नस्ल के लिए बहिफ़ाज़त आज़ाद परवरिश किया जाये। **छोड़ना, डालना** गाय से जुफ़्ती कराना।

बछ्ड़ा (पु0) बैल का नौ उम्र बच्चा जो काम पर न लगाया गया हो।

बछिया (स्त्री) बछड़े का इस्मे मुअन्नस।

बधिया (पु0) संस्कृत बधिया बमानी ज़ायअ करना। अंग्रेज़ी मे (कास्ट्रेट) वह बैल जो मादा के काम का न रखा गया हो यानी जिसके बैजे निकाल दिये या मसल कर बेकार कर दिये गये हों ताकि उसको मादा की तरफ रग़बत न रहे।

बधियाना (क्रिया) बैल के बैज़े ज़ायअ़ कर देना, नर न रखना। **देखें** बधिया।

बर्द/बल्द (पु0) बैल, बिजार, साँड़।

कहावत *पूरब का बर्द पच्छिम का मर्द, उत्तर का नीर, दक्खिन का चीर।* मुराद यह है कि हिन्दुस्तान के मश्रिक़ी का बैल और मग़रिबी इलाक़े का मर्द तवाना और जफ़ाकश होता है इसी तरह शिमाली इलाक़े का पानी तवानाई बख़्श और दक्खिन का तागा यानी कपड़ा मज़बूत रहता है।

बर्दाब/बर्दाना (पु0) बर्धवाना, गाये को बैल से जुफ़्त कराना।

बर्धा (पु0) बैलों का ब्योपारी या सौदा कराने वाला दल्लाल।

बक्का/बग्गा (स्त्री) लफ़्ज बाग का गंवारूँ तलफ़्फुज़, वह रस्सी जिसका एक सिरा बैल की नाथ मे बंधा और दूसरा बैल वाले के हाथ मे रहता है जिसतरह चाबुक सवार के हाथ में घोड़े की लगाम।

बल्द (पु0) वर्द का दूसरा तलफ़्फुज़। **देखें** बर्द।

बल्दिया/बल्देव (पु0) बैलों का रखवाला। **देखें** बैल बान।

बिंड़ा (पु0) वह बैल जिसकी दुम के सिरे पर बालों का गुच्छा न हो या मामूल से कम हो।

बहेड़ी (स्त्री) दो दाँत का पछड़ा या बछिया।

बैल (पु0) हिन्दुस्तान के इस निहायत कार आमद मवेशी के हालात जुहला काश्तकारों के ज़ेहन मे कुछ ऐसे उतरे हुए हैं कि गैर मुतअल्लिक़ अशख़ास को इस के हालात मालूम करना, कोह कुंदन और काह बर आवरदन का मिसदाक़ बन जाता है। **अव्वल** तो हर मुक़ाम की बोली मे इख्तिलाफ, **दोम** उनके तलफ़्फुज़ का फर्क़ **सोम** क़दामत परस्ती और फिरक़ा बंदी की इल्लत जो एक दूसरे से लग्गा ही नही खाने देती इन हालात मे उस जानवर के मुतअल्लिक़ जो कुछ मालूम हुआ। वह इन्हीं गवाँरों का बताया हुआ है अपने कलाम मे उन्होंने जो तलफ़्फुज़ इस्तेमाल किया वही लिख देना पड़ा जहाँ कहीं अपने समझने काम किया वहाँ उस की तशरीह भी कर दी है। काश्तकारों मे जमना पार के बैल अच्छे खेत के समझे जाते हैं। उनको उनकी इस्तिलाह मे जमनेत कहते हैं बैलों की रंगतों और वज़अ़ क़तअ़ के लिहाज़ से उनके मुख़तालिफ़ नाम रख लिए हैं जो इसमे ख़ास की तरह बोले और

समझे जाते है जिनमें से मशहूर नाम हल्दा, गोरा, धौला, कब्रा, सुखन, झब्रा ख़ासतौर से मशहूर है। बैल की क़िस्मत के मुतअल्लिक़ गँवारों मे मुंदर्जा ज़ेल कहावत मशहूर है।

मर्द भये फिर बर्द भये फिर गाड़ी नाधें।
तेली के कोल्हू चलें बहुर क़साई लें।
गाला काटा बोटी लूटी खालन बना निगार।
कछू औगन बाक़ी रहा पड़त खाल परमार।।

बैंगन खुर (पु0) वह बैल जिसके खुर बैगन की तरह ऊपर को उभरे हुए हों चलने मे अच्छा होता है।

कहावत *काल कछोटी बैंगन खुरा।*
कंथा बैल बसा हो पूरा।।

बैलान/बेलान (स्त्री) वह गाय जिसके बच्चा न हो।

बैल बान (पु0) बैलों का रखवाला या बैलों की परवरिश और उनकी खरीदो फ़रोख़्त करने वाला।

बेनाथ (पु0) वह बैल जिसकी नाक न छिदी हो या जिसकी नाक मे रस्सी न पड़ी हो। **देखें** नाथ।

भड़कन (पु0) देखें मरखना।

भड़कीला (पु0) वह बैल जो हर ग़ैर मामूली हालत से परेशाँ ख़ातिर हो जाये और मरखन्ना बन जाये।

चौंखा ( ) देखें भड़कीला।

बिदकना ( ) देखें भड़कीला।

चौकन्ना ( ) देखें भड़कीला।

भुंडा (पु0) बगैर सींगों का बैल।

भेड़िया/भेंड़ा (पु0) वह बैल जिसके सींग मेंढ़े के सींगों की तरह मुड़े यानी हल्क़ेदार हों दोनों सींगों की नोंकें मिलकर एक हल्क़ा बनाती है।

पालान/पलान (पु0) बैल और दूसरे लद्दू जानवरों की कमर को बोझ की रगड़ से महफ़ूज़ रखने वाली गद्दी या दो तही जो खोरजीन और सूँडल के नीचे कमर पर डाली जाती है। **डालना** के साथ बोला जाता है।

परछई (स्त्री) एक क़िस्म का लम्बा और बीच मे से खुला हुआ सामान लादने का थैला जो छई या पालान के ऊपर बैल या लद्दू जानवर की कमर पर दोनों तरफ लटकता हुआ डाल दिया जाता है।

पगा/पगहा (स्त्री) भगोड़े बैल के पिछले पैर में बाँधने की रस्सी।

पग्हाड़ ( ) देखें पगहा।

पूँचकर (पु0) गुच्छेदार बालों की दुमवाला जानवर।

पैकार (पु0) ढोरों का ब्योपारी। **देखें** बर्धा।

फड़कन (पु0) देखें चलनसार।

तिरसूल (पु0) देवता के नाम पर छोड़े हुये साँड़ या बिजार पर सह शाखा दाग़ का निशान जो शिवदेवता की निशानी समझी जाती है और उन्हीं के नाम पर बैल या बिजार को आज़ाद छोड़ा जाता है। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

चित्र त्रिशूल

तोब्ड़ी (स्त्री) तोबड़े का इस्मे मुसग़्गर। बैल बान की जोतियाँ और छोटा–मोटा सामान रखने को पालान मे बनी हुई छोटी थैली।

टाल (पु0) बैल के रास्ते से बजने के लिए राहगीरों को होशियार और ख़बरदार करने वाला, बैल के गले मे बंधा हुआ हस्बेज़ुरूरत बड़ा घुंगरू या घंटी जो पीतल या काँसें की बनी होती है और बैल की हर्कत से उसका लटकन दूर से टकरा कर आवाज़ देता है।

टिट्कारी (स्त्री) बैल वाले की ज़बान की आवाज़ जो बैल को हाँकने और चलाने का इशारा समझी जाती है। **देना** के साथ बोला जाता है।

टिटकारना (क्रिया) बैल हाँकने और चलाने के लिए ज़बान बजाना।

टुंडा (पु0) सींग टूटा हुआ बैल।

जिताह (पु0) देखें अनन्दी।

जोआर (पु0) देखें जोट।

जोट (पु0) बैलों की जोड़ी जो एक साथ किसी काम मे जुती हुई हो। **लगाना, चलना** के साथ बोला जाता है।

जोड़ (स्त्री) बैलों की जोट को बाँधने की रस्सी।

जौंवड़ी (स्त्री) जौंवड का इस्मे मुसग्गर।

झब्रा (पु0) वह बैल जिसके जबड़ों पर घने बाल हों।

झबूआ (पु0) वह बैल जिसके कानों पर घने बाल हों।

कहावत *कर कछोटा झबड़े कान।*
उन्हीं छोड़ न लीजिए ओन।।

झंगी (पु0) देखें भेड़िया।

झूमर (पु0) बैल वाले का ढंडा जिसके सिरे पर ज़ंजीरों का गुच्छा या झाँज लगे होते हैं और नये भड़कील बैल को हाँकने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

चलसार (पु0) तेज़रौ बैल जो एक ही चाल से लम्बी मुसाफ़त तै करे। बैल आदत से चाल बदल कर चलता है यानी थोड़ी देर तेज़ चलता है फिर धीमा हो जाता है इसके खिलाफ़ जो दूर तक एक ही चाल चले अच्छा समझा जाता है।

छाँदना (क्रिया) रात के वक्त बैल के पाँव मे रस्सी बाँधना ताकि अपनी जगह खड़ा रहे।

छई (स्त्री) उर्दू रोज़मर्रा मे एक मुहावरा है। छई न दबाना या छई न दबाने देना। जिसका मतलब क़ाबू न आना लिया जाता है।

छींका (पु0) जाली, मुखा, बैल के मुंह यानी थूथ्नी पर बाँधने की जाली जो खास मौक़ओं मसलन खलियाँ पर चलने के वक़्त लगाई जाती है ताकि खलियाँ पर मुंह न डाले और काम के वक़्त चारे की तरफ़ रुख़ न करे। अंग्रेज़ी मज़ल।

दगौटा/दखोटा (पु0) दाग़ या दाग़ने का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। ढोरों पर निशानी का दाग़ लगाने का आहनी ठप्पा जो हर पैकार अपने मुक़र्रिरा निशान का रखता है। अंग्रेज़ी में ब्रांड कहते हैं।

दोहन (पु0) दो दाँत का बछड़ा यानी एक साल की उम्र का बैल।

दो दंता ( ) देखें दोहन।

बहड़ा ( ) देखें दोहन।

धौला (पु0) एक रंग सफेद बैल। दूधिया रंग का बैल।

ढाँगर/ढंगर (पु0) कमज़ोर, लाग़र, उम्र से उतरा हुआ बैल। **2** सींगों वाला कमज़ोर और दुबला मवेशी।

ढगार (स्त्री) बैल या सांड की आवाज़ जो जंगल मे मादा के लिए या दूसरे बैल से लड़ने के लिए गुस्से में निकाले।

ढगारना (क्रिया) बिजार या साँड की आवाज़ जो जंगल में मादा के लिए या दुश्मन के मुक़ाबले में आवाज़ निकाले।

ढ़ाटी/ढ़टियारी (स्त्री) बे नाथ के बैल की थूथ्नी पर बाँधने की रस्सी या कपड़ा जो बाग का काम दे और उसको क़ाबू मे रखे। **2** वह लकड़ी जो बैल के मुंह मे देकर बाँध दी जाये ताकि वह चारे पर मुंह न डाले या कुछ खा न सके। बाज़ हालतों मे कपड़े की थैली या जाली भी चढ़ा देते हैं। **3** ढ़ाटी लफ़्ज़ ढ़ाटे का इस्मेमुअन्नस है और ढाटा कपड़े की उस पट्टी को कहते हैं जो ठोड़ी के गिर्द लगाकर सिर के ऊपर बाँध दी जाती है यह अमल मुख़्तलिफ़ ज़ुरूरतों के लिए किया जाता है। **देना, चढ़ाना, लगाना** के साथ बोला जाता है।

ढ़ाँड़ा (पु0) बूढ़ा बैल जिससे कोई काम न लिया जा सके।

ढ़ोलना (पु0) बैल के गले का ज़ेवर जो ढ़ोल की वज़अ़ का पीतली बना हुआ होता है और खुशनुमाई के लिए इसके दोनों तरफ घुंगरू लगाकर, बैल के गले मे डालते हैं। **2** राहगीरों को होशियार करने की घंटी।

ढ़ाँटा (पु0) ढ़ाटे का ग़लत और गवाँरू तलफ़्फ़ुज़। **देखें** ढ़ाटी।

साँटा (पु0) बैल को हाँकने का आरदार डंडा। पूरबी ज़बान मे सन के दरख़्त की झड़ को सेंथा कहते हैं जिसको बैल बान सैंठा और साँटा कहने लगे जो बैल के हाँकने के डंडे का नाम हो गया।

साँड (पु0) देखें बिजार। **छुड़वाना** साँड़ से गाय को जुफ़्त कराना या गियाबिन कराना।

सुरा गाय (स्त्री) दोग़ली गाय जो तिब्बत के याक और हिन्दुस्तानी गाय के मेल से पैदा होती है बाज़ क़ौमों में बहुत मुतबर्रक समझी जाती है।

सुखन (पु0) बहुत हल्के भूरे रंग का बैल।

संडा/संड़का (पु0) संस्कृत शाँडा बमानी साँड या बिजार। **2** बैल के कंधों के ऊपर कोहाँ की शक्ल का उभार या उठान, इस उभार को संडका कहते हैं जो ख़ास क़िस्म के क़वी उल नस्ल बैलों के होता है साँड की वजह तस्मिया भी यही है।

सूँड/सूँडा (स्त्री/पु0) देखें सूँडन।

सूँडल (स्त्री) लद्दू बैल या गधे की कमर का गदेला जो मुड़ी हुई सूँड़ की शक्ल का बनाया और कमर की हिफ़ाज़त के लिए पालान के ऊपर बाँधा जाता है। ताकि बोझ की रगड़ से कमर बची रहे।

सींगा/सींगाला (पु0) खुशवज़अ और बड़े सींगों वाला बैल जो न सिर्फ खूबसूरत बल्कि मज़बूत भी समझा जाता है। मसल है–*बैल सींगा ला मर्द मूँछा ला।*

सींगोटी/सींगोटियाँ (स्त्री) सींग की नोंक पर चढ़ाने की किसी धात की खूबसूरत बनी हुई कलग़ी। **2** किसी उमदा कपड़े का बना हुआ सींगों का खुशनुमा ग़िलाफ़। **चढ़ाना** के साथ बोला जाता है।

कबरा (पु0) चित्तीदार रंग का बैल। **चितकबरा** भी कहा जाता है।

कुट्ना (पु0) देखें बधिया।

कन कंधा (पु0) वह बैल जिसके कंधे सियाह रंग के हों, काले कंधों वाला बैल जो अमूमन अच्छा समझा जाता है।

कनोदिया (पु0) रूहेलखंड के इलाक़े का पस्त क़द और मज़बूत नस्ल का बैल।

कूँचर (पु0) वह बैल या लद्दू जानवर जो चलते चलते बैठ जाये, कामहारू, जी छोड़ू बैल। इस क़िस्म के बैलों की कूँचें यानी पिछली टाँगों के घुटनों के पीछे के पुट्ठे फ़ितरती कमज़ोर होते हैं। जिसकी वजह वह चलने से जल्द थक जाता है।

कैंचा (पु0) कैंची का ग़लत तलफ़्फ़ुज़, वह बैल जिसका एक सींग खड़ा और एक लटका हुआ हो।

खरानो (स्त्री) थान पर बैल को बाँधने की रस्सी।

खटकन (स्त्री) वह बैल जो खूँटे से सर मारे। बहुत मनहूस समझा जाता है।

खुर पलटा (पु0) मवेशियों का व्यापारी, वह पैकार जो थके हारे बैलों का ताज़ादम बैलों से तबादला करता या कराता हो, काश्तकार आमतौर से दो चार साल के चले हुये बैलों को कम दाम देकर दूसरे तवाना और सुस्ताये हुए बैलों से बदल लेते है जिनको पैकार साल छः महीने खिला पिलाकर और आराम देकर फिर मोटा ताज़ा कर लेता है और दूसरे बाज़ार मे ले जाकर उनका अदला बदला कर लेता हो। ऐसे पेशेवर को अंग्रेजी में कोपर कहते हैं।

खुर चटक (पु0) वह बैल जिसके खुर के हिस्से फटे हुये हों और आपस मे एक दूसरे से अलाहिदा रहे ऐसा बैल चलने का बोदा होता है और न तेज़ चल सकता है।

खल्लर/कल्लर (पु0) दुबला बूढ़ा और नाकारह बैल।

खुंडा (पु0) कुनवाड़े का इस्मे मुसग्ग़र। रात को बैलों के बंधने की जगह।

खोंच (स्त्री) बैल का नोंकदार सींग या तेज नोक का सींग।

खेप (स्त्री) किसी जिंस की एक ख़ास मिक़दार जो बवक्ते वाहिद लादकर ले जाये। **लादना** के साथ बोला जाता है।

गाता (पु0) देखें जींवड़।

गाय (स्त्री) बैल की मादा।

गुंड़ा (पु0) देखें सूँडल।

गोदा (पु0) देखें दग़ोटा।

गोरा (पु0) हल्का भूरा या मलगुची रंगत का सफ़ेद बैल।

गोन (पु0) संस्कृत गोनी। **देखें** खुर्जी।

गोनी (स्त्री) गोन का इस्मे मुअन्नस। **देखें** गोन और परछाई।

गहनी गाय (स्त्री) नाक़िसुल खिलक़त गाये। **देखें** बैलान।

लातवा (पु0) देखें लतूआ।

लाँडा (पु0) दुम कटा बैल या वह बैल जिसके दुम के बाल झड़ गये हों।

लतूआ (पु0) लात मारने वाला बैल।

लात झाड़ू (पु0) देखें लतूआ।

लदाऊ (पु0) बोझ उठाकर ले जाने वाला बैल जो गाड़ी या हल में न चलता हो।

मट्ठा/मीठा (पु0) सुस्त और काहिल बैल जो मेहनत न बरदाश्त कर सके। चलने से जी चुराये।

मुचका (पु0) देखें छींका।

मुछीका/मुंछीका (पु0) देखें छीका।

मरखना (पु0) सींग मारने वाला बैल, वह बैल जो आदमी या जानवर को मारने के लिए दौड़े।

मुसीका (पु0) मुछीका का दूसरा गवाँरू तलफ़्फ़ुज़। **देखें** मुछीका, छींका।

मुकट (पु0) वह बैल जिसका एक सींग खड़ा और एक नीचे को लटका हुआ हो। देखने मे एक सींग का मालूम होता है।

मुखिया (पु0) देखें मुखेर मुखेरा।

मुखिरा/मुखेरा (पु0) मक्खियों से हिफाज़त को बैल के मुंह पर डालने की जाली या चमड़े के तस्मों की झालर। **डालना, लगाना** के साथ बोला जाता है।

मुंड़ा (पु0) बग़ैर सींगों या छोटे सींगों वाला बैल।

मोड़ी (स्त्री) देखें महेरा।

मूसीरिया (पु0) वह बैल जिसकी दुम के बाल बीच में सफेद और सिरों पर काले हों।

मुहरी (पु0) मोड़ी का गलत तलफ़्फ़ुज़। कम उम्र बैल जिसकी नाक न छेदी गयी हो।

मुहेरा (पु0) बैल के मुंह का साज़ जिसमे नाथ और मुखेरा वगैरह शामिल है। **2** बैल की नाथ। **डालना** के साथ बोला जाता है।

नाथ (स्त्री) वह रस्सी जो बैल की नाक के बासे के सूराख़ में डालकर सींगों के पीछे बाँध दी जाये। लफ़्ज़ नाक से नाथ और उससे वह रस्सी मुराद ली जाती है जो बैल की नाक में बंधी रहती और उसको क़ाबू मे रखती है। **बाँधना डालना** के साथ बोला जाता है।

नाथना (क्रिया) बैल की नाक छेदना यह अमल बाग डालने के लिए किया जाता है जिससे बैल क़ाबू में रहता है।

नाटा (पु0) बौना या पस्तक़द बैल जिसको नाक़िसुल खिलक़त समझा जाता है।

नागौरी (पु0) नागौर के इलाक़े का बैल जो खूबसूरती, मज़बूती और क़दोक़ामत मे दूसरे इलाक़े के बैलों से अच्छा और तेज़ रफ़्तार होता है।

नल कोल (पु0) देखें बिजार।

नियार (पु0) नहार का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। कुव्वत बख़्श ग़िज़ा जो सुबह बैल को काम पर लगाने से पहले दी जाती है। आम बोलचाल मे बैल के रोज़मर्रा के मामूली चारे को कहते हैं।

हारा बैल (पु0) वह बैल जो मेहनत से जी छोड़ चुका हो।

हालन (पु0) वह बैल जो खूँटे से बंधा हाथी की तरह झूमता रहे। ऐसे बैल को मनहूस समझा जाता है।

खटकन कहे खंदेल से हालन के घर जायें।
मालिक अपने घाट मे चलो पड़ोसन खायें।।

हुर पीटना (पु0) हुर लफ़्ज़ हूल का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। बैल को हाँकने वाला हाली या गाड़ीवान जो साटे की आर से उसको होल लगाता यानी आर चुभोता रहे।

हरी अंथ (पु0) हरियाना का बैल।

हल्दा (पु0) ज़र्द रंग का बैल।

4 पेशा नाल बंदी

पिरेग (स्त्री) अंग्रेज़ी लफ़्ज़ पिरक का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। इस्तिलाह में, नाल में ठोकने की फुल्लीदार कील को कहते हैं।

पुंजमाल/पूँजमाल (स्त्री) फ़ारसी लफ़्ज़ बूज़माल का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। बालों की बनी हुई रस्सी का हलका या पट्टा जो नाल लगाते वक्त कटखने घोड़े की थूथ्नी मे अल्बेट दे कर लगा देते हैं ताकि घोड़ा नाल ठोकते वक्त पास खड़े हुये आदमी को काट न सके। **देना, लगाना** के साथ बोला जाता है। **देखें** नालबंद।

पूज़ माल (स्त्री) देखें पुंजमाल।

ठोकरा नाल/ठोकरिया नाल (पु0) वह नाल जिसके बीच के हिस्से पर छोटी सी उभरी हुई कोर या कगर बनी हुई हो जो सुम पर बाहर के रुख़ से सही बैठ जाये।

ख़रीता (पु0) नालबंद का थैला जिसमे नाल बाँधने का ज़ुरूरी सामान और औज़ार वगैरह रखे जाते हैं।

बाड़दार नाल ( ) देखें ठोकरा नाल।

किस्बत/किस्वत ( ) देखें ख़रीता।

रंदक (पु0) चमड़े का पट्टा या पेटीनुमा बना हुआ हल्क़ा। नाल ठोकते वक़्त घोड़े का पैर उसमें डालकर ऊपर को उठाये रखते हैं। **देखें** नालबंदी।

सलामीदार नाल (पु0) वह नाल जिसकी चौड़ान अंदर के रुख पीतली और बाहर की तरफ मोटी हो। इस क़िस्म का नाल ठोकर खाने वाले घोड़े के लगाया जाता है।

सुमतराश (पु0) घोड़े के सुम की बढ़ी हुई कोर तराशने का दराँती की वज़अ़ का तेज़ धारदार औज़ार। **देखें** नालबंदी।

सींगोटी (स्त्री) नालबंद का सींग की शक्ल का औज़ार जिससे घोड़े के सुम का तला साफ़ किया जाता है चूँकि यह औज़ार आमतौर से नोकदार सींग की तरह का होता है इसलिए सींगोटी कहलाता है। **देखें** नालबंदी।

शाख़ (स्त्री) घोड़े के सुम की सामने की कोर जिसपर नाल ठोका जाता है और जो इंसान के नाखून की तरह बढ़ती रहती है नालबंदों की इस्तिलाह में शाख़ कहलाती है। **तराशना काटना** के साथ बोला जाता है।

काँड़ा नाल (पु0) वह नाल जिसका एक रुख़ दूसरे रुख़ की निस्बत मोटा बना हुआ हो। इस क़िस्म का तैयार किया हुआ नाल उस घोड़े के लगाया जाता है जिसके पैर चलने मे एक तरफ को गिरते और आपस मे टकरा कर ज़ख़मी हो जाते हैं।

किलपदार नाल (पु0) देखें ठुकरा या ठुकरिया नाल।

खुरी या खुरियाँ (स्त्री) बैल के खुर के हिस्सों में लगाने के नाल जो घोड़े के नाल से मुख़तलिफ़ शक्ल के खुरियों के बराबर और उन्हीं की शक्ल के बने होते हैं।

गुँज (स्त्री) नाल में ठोकने की कील की फुल्ली जो घुंडीनुमा होती है।

मित्रक़ा (पु0) नालबंद का हथौड़ा।

नाल/नअ़ल (पु0) अरबी लफ़्ज़, बमानी जूती। लेकिन उर्दू में इसका मफ़हूम घोड़े या बैल के नाल के लिए मख़सूस हो गया है। जो सुम की कोर पर ठीक बैठता हुआ आहनी बनाया जाता है और हस्बे ज़ुरूरत इसमें कमी बेशी की जाती है। **देखें** नालबंदी। **बाँधना, ठोकना, जड़ना, लगाना** नाल को घोड़े या बैल के सुम के नीचे कोर से मिलाकर कीलों से जड़ देना।

नालबंद (पु0) घोड़ों और बैलों के नाल जड़ने वाला पेशेवर कारीगर। हिन्दुस्तान मे नाल बंदी का रवाज और तरक्क़ी मुसलमानों के अहेद से हुई यहाँ आमतौर से नाल बाँधने का रवाज नही था चुनाँचा अब तक कसबों मे घोड़ों और बैलों के नाल बंधवाने का तरीक़ा कम है।

नालबंदी (स्त्री) घोड़े और बैल के सुमों के नीचे नाल जड़ने का अमल या तरीक़ा।

चित्र नालबंदी।

5 पेशा शुतबानी

ऊँट (पु0) रेगिस्तानी मुमालिक का मशहूर व मारूफ़ जानवर हिन्दुस्तान में राजपूताना और सिंध के इलाक़े में जो अमूमन गर्म और रेतीले मुक़ाम है। ज़ियादा पाला या परवरिश किया जाता है। मेहनती, जफ़ाकश और निहायत कारआमद होने के बावजूद बहुत सादा खूराक और मामूली निगेहदाश्त मे गुज़र बसर कर लेता है इस के मिज़ाज, आदत और हालात की कैफियत तहक़ीक़ न हो सकी पेशे के नाम की वजह से चंद मामूली बातें जो मालूम थी दर्ज कर दी गयी है। आईने अकबरी में शुतरख़ाने के तहत जो

उमूर लिखे गये हैं। वह भी असल मालूमात से मुअर्रा हैं। ऊँट कुछ ऐसा अजीब डील डौल रखता है कि उस पर उर्दू में यह कहावत मशहूर हो गयी *है '' ऊँट रे ऊँट तेरी कौनसी कल सीधी''* और ग़ैर मुतनासुब हालात के मौक़े पर *'' ऊँट के मुंह में ज़ीरा''* नेज़ '' ऊँट किस करवट बैठता है'' बतौर मिसाल कहा जाता है।

ऊँट कटारी (स्त्री) एक क़िस्म की काँटोंदार झाड़ी या झाड़ियाँ जो ऊँट का एक आम चारा होती हैं यही उसकी वजह तस्मिया है।

ऊँटनी सवार (पु0) देखें साँडनी सवार।

बोता (पु0) ऊँट का शीर ख़्वार बच्चा या वह कम उम्र ऊँट जो सवारी के लायक न हुआ हो।

तली (स्त्री) ऊँट के पैर का निचला रुख़ जो नर्म गद्दी के मानिंद होता है।

बड़बड़ाहट (स्त्री) ऊँट की आवाज़ जो वह बोझ लादते वक्त निकालता है यह उसकी आदत है इसलिए मसल मशहूर हो गयी है कि ''ऊँट लदते वक्त बड़बड़ाता है या ऊँट को बड़बड़ाहट लगी है।

पैकड़ा/पैंकड़ा (पु0) देखें दामन।

दामन (स्त्री) ऊँट के पैर मे बाँधने की रस्सी।

रिहल (पु0) देखें कजावा।

सारबान (पु0) ऊँट को हाँकने वाला, ऊँट की सवारी के साथ रहने वाला शख़्स।

साँड (पु0) जवान, तेज़ रफ़्तार और त़वील मुसाफ़त तय करने वाला ऊँट।

साँडनी (स्त्री) साँड का इस्मे मुअन्नस, तेज रफ़्तार और त़वील मुसाफत तै करने वाली ऊँटनी जो नर की निस्बत ज़ियादा लम्बी मंजिल तय करती और तेज़ रौ होती है।

साँडनी सवार (पु0) ऊँट की सवारी जानने वाला माहिर और मश्शक़ शख़्स।

शुतार बान (पु0) ऊँट का रखवाला ऊँट की ख़िदमत और उसकी निगह दाश्त करने वाला।

शुतर बे मुहार (पु0) बे नकेल का ऊँट, जंगल में आज़ार फिरने वाला ऊँट जिसको किसी वजह से छोड़ दिया गया हो उर्दू में आज़ाद मुनिश के लिए बतौर मिसाल बोलते हैं।

शुतर सवार (पु0) ऊँट की सवारी करने वाला या जानने वाला शख़्स।

ग़ब्ग़ब (स्त्री) ऊँट के हलक़ की जगह गले के ऊपर बढ़े हुये बालों का गुफ्फा।

काठी (स्त्री) लकड़ी का बना हुआ दुहरा निशस्त का ज़ीन जो सवारी के लिए ऊँट की कमर पर कर दिया जाता है। **देखें** ऊँट।

कजावा (पु0) सवारियों के बैठने के लिए ऊँट की कमर के दोनों तरफ लटकी हुई हौदे या टोकरे की वज़अ़ की निशस्तें जिनमें एक एक, दो दो, या ज़ियादा सवारियाँ बैठ सकें। **देखें** ऊँट।

कोहन/कुहान (पु0) ऊँट के शानों के ऊपर कमर के सिरे पर गुमटीनुमा उभरा हुआ उज़्व जो आदमी के कुब की शक्ल का होता है और ऊँट के लिए कुदरत का एक बहुत बड़ा अतिया समझा जाता है। **देखें** ऊँट।

महमिल (पु0) कजावे की एक मुख़्तसर और आरामदह सूरत जो सवारी के बैठने के लिए काठी की तरफ़ ऊँट की कमर पर कस दिया जाता है। जिसके ऊपर धूप से हिफाज़त को छतरी भी होती है। कजावे की निस्बत ज़ियादा शानदार और आरामदह होता है। **देखें** कजाव़ा।

कोबा ( ) देखें कोहान/कुहान।

संडा ( ) देखें कोहान/कुहान।

नकेल (स्त्री) ऊँट की नाक के नथने को छेद कर उसमे डाली हुई एक छोटी सी चोबी मेंख़ और मजाज़न उस लम्बी रस्सी को कहते हैं जो उस चोब मे बँधी होती है और ऊँट के लिए बाग का काम देती है। **डालना** ऊँट की नाक के नथने की चोब मे रस्सी बाँधना। **2** ऊँट के नथने को छेद कर उसमें चोबी मेख डालना। **देखें** ऊँट।

6 पेशा फ़ीलबानी

आलान (स्त्री) हाथी के पैर मे बाँधने की ज़ंजीर। **डालना** हाथी को थान के ऊपर खड़ा रखने के लिए उसके पैर मे ज़ंजीर बाँधना।

अंजन (पु0) हाथी का वस्फी नाम।

अंकस (पु0) संस्कृत अंक्षा, महावत के हाथ का भालानुमा आहनी आँकड़ा जिसकी नोक से हाथी की गर्दन पर और कानों के बराबर हूला यानी गुदगुदाया जाता है ताकि हाथी रफ़्तार में सुस्ती और तरतीबी न करे।

कहावत

हाथी तो अंकस तजे और घोड़ा तजे लगाम।
भलमानस गुन को तजे जब औगुण तजे गुलाम।।

चित्र अंकस

औधी/औगी (स्त्री) जंगली हाथी को पकड़ने का रस्सी का बना हुआ एक ख़ास क़िस्म का फंदा जो हाथी के रास्ते मे इस तरह लगाया जाता है कि उसमें उसका पैर आ जाये। **देखें** पेशा घुड़बानी लफ़्ज़ औगी पृ0

उवा (पु0) बन मे हाथी के रहने का ठिकाना जो बड़े गार या खड की शक्ल का हर तरफ से महफ़ूज़ होता है।

ऐरावत (पु0) हाथी का वस्फी नाफ।

बाल (पु0) हाथी का वस्फ़ी नाम।

बामन (पु0) हाथी का वस्फ़ी नाम।

बान अंदाज़ (पु0) सवारी में हाथी के साथ रहने वाले वह मुलाज़िम जो अपने साथ आतिशी तीर रखते हैं ताकि सवारी के मौक़े पर रास्ते में हाथी अगर मस्त हो जाये या उसके मस्ती के आसार मालूम हो तो यह गिरोह आतिशी तीरों से डराकर काबू मे रखने की कोशिश करे।

बिर्रीबिर्री/ बिरी बिरी (पु0) मोहमिल कलमा जो महावत हाथी को काम बंद करने या रोकने के लिए बतौर इशारा मुंह से निकलता है।

बरी धोत हेल (स्त्री) महावत की मुहमिल आवाज़ जो हाथी को ठहराने और रोके रखने के लिए वह इशारे के तौर पर इस्तेमाल करता है।

बरेमन मिज़ाज (पु0) हाथी का वस्फ़ी नाम।

बक्का (पु0) बीस बरस की उम्र का हाथी।

बमिज़ाज खत्री (पु0) हाथी का वस्फ़ी नाम।

बैले का हाथी (पु0) शाही सवारी के आगे आगे चलने का हाथी जिसपर खैरात करने की अश्या लदी होती है और बटती जाती है।

भाले बरदार (पु0) हाथी के निगहबान मुलाज़िमीन मे का एक गिरोह जो सवारी मे हाथी के साथ रहते और अपने पास भाले रखते हैं ताकि हाथी रास्ते मे अगर मस्त हो जाये तो भालों के ज़रिए उसको क़ाबू मे रखा जाये।

पायल (पु0) सुस्त रफ़्तार हाथी जो फितरत मे कोताह क़दम होता है।

पुट्ठा (पु0) फ़ील बानों की इस्तिलाह मे उस हाथी को कहते हैं जिसके दिखावे के दाँत निकलने शुरू हो जाते हैं।

पंडरेक (पु0) हाथी का वस्फ़ी नाम।

पूत (पु0) दस साल की उम्र का हाथी।

फान (स्त्री) जंगली हाथी पकड़ने के लिए बन में लकड़ियों का एक ख़ास तरीक़े से बाँधा हुआ बाड़ा या इहाता। **बाँधना** के साथ बोला जाता है।

फुप्दंत (पु0) हाथी का वस्फ़ी नाम।

तफ्ती (पु0) हाथी का वस्फ़ी नाम।

तलजोर (पु0) हाथी का वस्फ़ी नाम।

झूमना (क्रिया) हाथी के अ़अ़ज़ा की धीमी और ढीली आगे पीछे को जुंबिश जो वह एक जगह खड़े रहने की हालत मे करता रहता है।

चर्ख़ीमार (पु0) जंगली और वहशी हाथी को सधाने वाले मुलाज़िम।

चरकटा (पु0) जंगल या खेत से हाथी के लिए चारा काटकर लाने वाला मुलाज़िम।

चिंघाड़ (स्त्री) हाथी के चीँखने की आवाज़।

चै/चैदत (पु0) मुहमिल कलमा जो हाथी बान या महावत हाथी को पलटाने के लिए इशारे के तौर पर बोलता है।

दब्दत (पु0) मुहमिल कलमा जो महावत हाथी को पीछे हटने के लिए इशारे के तौर पर बोलता है।

दत (पु0) मुहमिल कलमा जो महावत हाथी को निचला रहने को बतौर हुक्म ज़बान से निकलता है।

देव मिज़ाज (पु0) हाथी का वस्फ़ी नाम।

ढग (पु0) हाथी को ऊपर क़दम रखने के लिए महावत का कलमा जो वह हाथी को बतौर हुकम सुनाता है।

राक्षस मिज़ाज (पु0) हाथी का वस्फी नाम।

साँटे बरदार (पु0) हाथी के निगेहबानों का एक गिरोह जिनके पास छोटे–छोटे डंडे होते हैं। जब कभी हाथी मस्ती मे आकर बे क़ाबू होता है तो वह उस को घेरकर साँटों से उसकी ख़बर लेते हैं और मस्ती उतार देते हैं।

साँकल (स्त्री) थान पर हाथी के पैर में डालने की मोटी ज़ंजीर। **देखें** आलान।

सिपरतयक (पु0) हाथी का वस्फ़ी नाम।

सर बरी (पु0) हाथी का वस्फ़ी नाम।

सूद्र मिज़ाज (पु0) हाथी का वस्फी।

सूँड़ (स्त्री) हाथी की नाक जो ज़मीन तक लम्बी लटकती और गाव दुम शक्ल की होती है हाथी इससे बहुत काम लेता है। हाथी इससे पानी पीता और चारा खाता है गोया वह उसको हाथ का काम देती है।

सैंका ढ़ाल (पु0) हाथी का वस्फी नाम।

अम्मारी (स्त्री) हाथी की कमर पर बाँधने का छतरीदार हौदा जिसकी छतरी बुर्जीनुमा होती है।

फौजदार (पु0) देखें फीलबान या महावत।

फ़ीलबान (पु0) हाथी का रखवाला, ख़िदमती या निगहबान।

फ़ील बे ज़ंजीर (पु0) आज़ाद छूटा हुआ हाथी या वह हाथी जिसके पैर में ज़ंजीर ना बाँधी जाये और फ़ील खाने में जिधर चाहे घूमे।

फ़ीलख़ाना (पु0) हाथी बंधने या रहने की जगह या इमारत।

कजरी (स्त्री) हाथी के ऊपर डालने की झूंल।

कुद (पु0) हाथी का वस्फी नाम।

कड़ केत (पु0) शाही सवारी के हाथी के आगे *''हटो बचो और अदब आदाब से रहो''* के नारे लगाते हुए मुलाज़िम।

कुलिया (पु0) हाथी का ढाई तीन साल की उम्र का बच्चा।

गजबाग (स्त्री) हाथी की बाग डोर जो एक ख़ास तरह से फंदे लगाकर बनाई और उसकी गर्दन में डाली जाती है। फंदों मे महावत अपने पैर डाल लेता है और पैरों की उंगलियों से हाथी के कानों के पीछे टहोके लगाकर चलने या दौड़ने को इशारे देता है। यह लफ़्ज़ गज और बाग से मुरक्कब है।

गजबंधन (स्त्री) हाथी को बांधने की रस्सी।

गंधर्व मिज़ाज (पु0) हाथी का वस्फी नाम।

गेंद (पु0) बाज़ मुक़ामी बोलियों मे हाथी को कहा जाता है।

कहावत तिनका गिरा गेंद मुख नेक न घटेव अहार।
सो ले चली पील्का पालन को परिवार।।

मतलब यह है कि हाथी के मुंह से तिनका गिर जाये तो उसके नाश्ते में कुछ कमी नहीं आती मगर चींटी जो उसको उठा ले जाये तो उस का कुनबा परवरिश पाता है।

लंगर (पु0) देखें गजबंधन, आलन और साँकल। **डालना** के साथ बोला जाता है।

मस्त हाथी (पु0) बहार पर आया हुआ हाथी, मस्ती चढ़ा हुआ।

मुग़ाक (पु0) देखें फान।

मुख़ना (पु0) वह हाथी जिसके दिखावे के लम्बे दाँत न हो। ख़्वाह काट लिये गये हों या निकले ही न हों।

महावत (पु0) हाथी को हाँकने और उसकी सवारी जानने वाला शख़्स।

मुहरा करना (क्रिया) हाथी का किसी चीज़ पर हमला करने के लिए झूम झूम कर झपट्ना और घूम घूम कर पैरों और सूँड़ से रौंदना। **प्रयोग** हाथी महावत की पगड़ी पर पे दर पे मुहरे करने लगा।

मैग्डमबर (पु0) देखें अम्मारी।

मेल अगदबिरी (पु0) हाथी को उठाने और रवाना होने का कलमा जो महावत कहता है।

नछोल (पु0) तेज़ रफ़्तार हाथी।

निशान मिज़ाज (पु0) हाथी का वस्फ़ी नाम।

होदज (पु0) हौदे का इस्मे मुसग़्ग़र। **देखें** हौदा।

हौदा (पु0) अरबी लफ़्ज़ हौज़ा बमानी मिस्ल हौज़ का उर्दू तलफ्फुज़ व रस्मे ख़त। पलंगनुमा चौकटा जो सवारियों के लिए हाथी की कमर पर बाँध दिया जाये। अमूमन गहवारे की शक्ल का

होता है इस पर छतरी या साये को कोई आड़ नहीं होती। खुली हुई यानी बग़ैर छतरी की अम्मारी।

हूलना (क्रिया) हाथी की गर्दन और गालों के क़रीब अंकस की नोक चुभोना। नेज़े की अन्नी को इस्तिलाह मे होल कहा जाता है। **प्रयोग** महावत हाथी को हूल्ता जाता है।

7 पेशा गल्ला बानी (चरवाही)

आर्क़ा (पु0) देखें रिज़्क़ा।

आरगोड़ा/आड़गोरा (पु0) देखें लंगर।

आँकड़ा (पु0) देखें लंगर।

अर्ना/अर्ना भैंसा (पु0) अफ़्ज़ाइशे नस्ल के लिए भैंसों के गल्ले मे आज़ाद छोड़ा हुआ भैंसा जो जंगल मे भैंसो के साथ रहे।

उर्तक/उड़तक (पु0) चरागाह मे मवेशियों के पानी पिलाने की जगह।

अड़गड़ा/अड़गोड़ (पु0) जंगल मे गल्ले के बंद करने को लकड़ियों का बनाया हुआ जाल। **2** नये घोड़े को सधाने के लिए भारी क़िस्म का मामूली दो पय्या। **भारकस** भी कहा जाता है।

इस्केल (स्त्री) देखें छान या छन।

औआरा (पु0) ढ़ोरों के गल्ले को चरागाह मे किसी तालाब या जोहड़ के किनारे पानी पिलाने की जगह।

अहरा/अहुरा (पु0) देखें बाँगा।

ऐवारा (पु0) देखें नुहरा, या नौहरा।

बाड़ा (पु0) देखें नौहरा।

बाखर/बाखल (स्त्री) देखें नौहरा।

बिठान (स्त्री) चरागाह में दो पहर के वक्त मवेशियों के बैठने की जगह कुल मवेशी थोड़ी देर आराम कर सकें।

बर्द आब (स्त्री) गल्ले मे गाये भैंस की भरवाई यानी गियाबिन कराई का अमल।

बर्दाना (क्रिया) गल्ले मे गाय या भैंस की गियाबिन कराई।

बर्दौर/बरदूआर (पु0) मवेशियों में गाय या भैंस की गियाबिन कराई।

बर्दिही (स्त्री) जंगल की चराई की उजरत जो गल्ले बान ज़मीनदार को अदा करें।

बर्दिया (पु0) काश्कारों के बैलों और दूसरे जानवारों को तराई में चराने वाला गल्ला बान।

बर्धवाना (क्रिया) देखें बर्दाना।

बरवा (स्त्री) देखें गंजी।

बलद्ना/बलध्ना (क्रिया) देखें बर्दाना।

बोंदा (पु0) देखें अर्ना भैंसा।

बोंगा (पु0) भुस के ज़ख़ीरे का बुर्जी नुमा बना हुआ अम्बार जो जाड़े के मौसम में इस्तेमाल करने को बरसात से महफ़ूज़ किया जाता है बनाना के साथ बोला जाता है।

बोंगी (स्त्री) बोंगे का इस्मे मुसग़्ग़र। देखें बोगा।

बहड़ा (पु0) बीड का इस्मे मसग्गर। देखें बीड़।

बैतूल (स्त्री) मवेशियों के चरने का जंगल या खेतों के दरमियान ख़ाली छोड़ा हुआ मैदान और दामने कोह बग़ैरह जो मवेशियों के लिए बतौर चरागाह मख़सूस हो।

बेड़/बीर (स्त्री) गाँव वालों के ढ़ोर चरने की मुश्तरक अराज़ी जो गाँव के किसी ख़ास इलाके में गल्लाबानी के लिए छोड़ दी जाए।

बेकस (पु0) दूब से कमज़ोर क़िस्म की घाँस जिस में सत बहुत कम होता है। ढ़ोर पेट भरने को खा लेते हैं ढ़ोर के लिए मुफीद नहीं होती।

चरोख ( ) देखें बेड़/बीर

भरना (क्रिया) गाय भैंस का गियाबिन करना।

कहावत *सावन घोड़ी भादों गाय।*
माघ मास में भैंस भराए।।

भुस (पु0) गेहूँ और जौ के पौदों की सूखी शाखों का चूरा जो दाने निकालने में हो जाता है और जाड़े के मौसम में मवेशियों को बतौर चारा खिलाया जाता है।

भुसौली/भुसैरी (स्त्री) भूसे की छोटी गंजी, कोठा। **देखें** बोंगी।

भुसैरा/भुसैला (पु0) भूसे का बाक़रीना बड़ा अंबार जो ख़ास मौसम के लिए ढ़ोरों के चारे के लिए महफ़ूज़ किया जाए। देखें बूँगा।

कहावत **छोटे घोड़े भुसैले ठाड़।**

भुसैंडा (पु0) देखें पेकोड़ा।

पाछन (स्त्री) देखें पेकोड़ा।

पाला (पु0) झड़बेरी के सूखे पत्ते जो बतौर चारा इस्तेमाल किये जाए। ऊँट और भेड़, बकरी के लिए निहायत मुफीद चारा होता है।

पालतू (पु0) वह जंगली जानवर जो इंसान से हिल मिल बस्ती में रहने लगे, सधाये से सध जाए और जरूरत के वक्त काम आए।

पाँस (स्त्री) देखें गंजी।

पसर (स्त्री) मवेशियों की पिछली रात की चराई, ठंडा वक्त होने की वजह से उस वक्त की खिलाई उन को मोटा और तवाना बनाती है। इसलिए गर्म मुल्कों में आमतौर से गल्लाबान बड़े बड़े गल्लों को पिछली रात को चराते है। चराना के साथ बोला जाता है।

पसू (पु0) सींगो वाले मवेशी मुराद बैल, भैंसे और इसी क़बील के दूसरे जानवर।

कहावत– *ढ़ोल, गंवार, शूद्र, पशु नारी।*
यह सब तारणा के अधिकारी।।

मतलब यह है कि मज़कूराबाला इस्म मारखाने के आदी है।

पगहा (स्त्री) मैं कोड़ा ।

पल कटी (स्त्री) जंगल से चारे की झाड़ी काटकर लाने का महसूस।

पुनहाई (स्त्री) मवेशियों के चोर जो जंगल में से भूले–भटके मवेशी को बाँध ले जायें। मवेशी की छुड़ाई या वापसी का तावान या मुआवज़ा। देना के साथ बोला जाता है।

पूली (स्त्री) चारे के फंटों का मामूली मिक़दार में बाँधा हुआ मुटठा जो एक जगह से दूसरी जगह उठा लाने के लिये बना लिया जाये। **बाँधना** के साथ बोला जाता है।

पियाल (स्त्री) एक ख़ास क़िस्म की आबी घाँस जिस को मवेशी नहीं खाते और सूखने के बाद वह किसी काम नही आती ।

पैरन (स्त्री) देखें पे कोड़ा।

कहावत *सबसे भले गधय्या ।*
ताको पैरन लगे न पघय्या।।

पैकड़ा/पैंकड़ा (पु0) देखे छान/छन।

पैकोड़ा (पु0) वह लम्बी रस्सी जो गले से जुदा होने या भटक जानेवाले जानवर के पिछले पैरों में बाँधकर मैदान में चरने को छोड़ा जाता है ताकि वह गल्ले से बाहर न हो सके और दूसरे ढोरों के साथ चरता रहे ।

पैना (पु0) गल्ले बान का लठ या लाठी जिससे वह गल्ले की निगेहबानी और हाँकने का काम करता है।

फिरौती (स्त्री) देखे पुनहाई।

तौन/दौन (स्त्री) लफ़्ज़ तान का ग़लत तलफ़्फुज़। भगोड़े ढ़ोर के पैर मे डालने की बेड़ी। **देखें** छान।

तेग़ (स्त्री) गंड़ासे का धारदार आहनी हिस्सा। **देखें** गंड़ासा।

टाँच/टंच (स्त्री) दुरुस्त, ठीक, मज़बूत और कसी हुई बंदिश। देखें छान/छन।

ठरक (स्त्री) धड़क का ग़लत तलफ़्फुज़। देखे लंगर।

ठैंगोर (स्त्री) ढ़ींगुँर या ढीगने का दूसरा तलफ़्फुज़। देखे रंगर ।

जाड़ा (पु0) गंड़ासे का चोबी दस्ता। देखे गंड़ासा।

जुगाली (स्त्री) खुर फटे मवेशियों के पेट में भरे हुये चारे को थोड़ा थोड़ा उगलकर मुंह में लाने और चबाकर दोबारा निगलने का अमल। **करना** के साथ बोला जाता है।

जूड़ी (स्त्री) कम्बल का बना हुआ तिकोन जो गल्लाबान धूप के वक्त सर पर रख लेते हैं।

चित्र जूड़ी

झगराब (पु0) भेंड़, बकरी का गियाबिन होना, जुफ़्ती खाना।

झूजरू (स्त्री) एक क़िस्म की जंगली झाड़ी जो गर्म मुमालिक मे होती है ऊँट उसको बतौर ख़ास और दूसरे मवेशी आमतौर से खाते हैं।

चारा (पु0) मवेशियों के हर वक्त खाने की चीज़ें अज़ क़िसम घास पत्ते वगैरह जिनपर वह गुज़र बसर करे और बतौर चारा हर वक्त खाता रहे।

डालना मवेशियों के खाने को घास पत्ते वग़ैरह सामने डालना।

कहावत *पेट में पड़ा चारा।*
तो कूदने लगा बेचारा।

चरागाह (स्त्री) मवेशियों के चरने का जंगल या मैदान। **देखें** बैतूल और बीड। **चराई (स्त्री)** बैलों या मवेशियों के चराने की उजरत जो हस्बेदस्तूर माहाना या सालाना गल्ले बान को दी जाती है। 2 मवेशिये के चरने का फेअ़ल। **प्रयोग** जंगल दूर है इसलिए चराई की उजरत ज़ियादा होती है। **प्रयोग** इस साल बैलों की चराई अच्छी हुई इसलिए मोटे हो गये।

चरना (क्रिया) मवेशियों का चरागाह, जंगल या मैदान में इधर उधर फिरकर पत्ते और हरियाली वग़ैरह खाना।

चर्नी/चरही (स्त्री) ढ़ोरों को दाना या चारा खिलाने का बड़ा बर्तन, नांद वगैरह।

चरवाहा (पु0) मवेशियों के गल्लों को चरागाहों मे ले जाने और उनको चराने की खिदमत अंजाम देने वाला, गल्लाबान का मुलाज़िम।

चरवाई (स्त्री) देखें चराई।

चरई (स्त्री) ढोरों की चराई का लगान जो ज़मीनदार को दिया जाये।

चरय्या (पु0) देखें चरवाहा।

ग्वालिया ( ) देखें चरवाहा।

चुगाई (स्त्री) ढ़ोरों का जंगल में चराने का काम। 2 चरागाह 3 चारा, घास।

चमकना (पु0) डरने वाला मवेशी जो हर चीज़ से खौफ़ खाये और गल्ले से भागे। 2 डर से मुज़तरिब होना, बद्हवास होना।

चौपान (पु0) देखें चरवाहा।

छान/छन (स्त्री) भगोड़े ढ़ोर के आमने–सामने के पैर या गर्दन और एक टाँग मे डाली हुई रस्सी की बेड़ी जो उसको आर्ज़ी तौर पर लंगड़ा बना देती है और वह गल्ले से निकलकर भाग नहीं सकता यह बेड़ी या बंधन मज़कूर उस–सदर मुख़तालिफ मुक़ामी नामों से मारूफ़ है।

चित्र

छाँदन/छाँद (स्त्री) छान का इस्मे मुसग़्गर। **देखें** छान।

छाँदवा (पु0) वह भगोड़ा मवेशी जिसके छान बँधी हो। **देखें** छान।

चित्र छाँदवा

छोला (पु0) देखें लंगर।

दखील (पु0) देखें नौहरा/नुहरा।

दँतौला (पु0) एक क़िस्म की लम्बी दराँती जिससे घसियारा लम्बी घास काटता है।

दूब (स्त्री) छोटी क़िस्म की घास जो ज़मीन से लगी लगी जाल बनाती हुई फैलती है घोड़ा खुसूसन और दूसरे मवेशी अमूमन इस को रग़बत से खाते हैं। यह घास ज़मीन पर लगी हुई जानवर के मुंह में नहीं आती इसलिए चारे की जुरूरत के लिए घसियारा उसको खोदकर निकालता ह।

धड़क/धड़का (स्त्री/पु0) देखें लिंगर।

धकना/धगना (पु0) देखें लिंगर।

ढाँगर/ढंगर (पु0) सींग वाले मवेशी। 2 काश्तकारी के काम के ढ़ोर।

ढरहरी (स्त्री) देखें लिंगर।

ढँकना (पु0) ढकने का दूसरा तलफ्फुज। **देखें** लिंगर।

ढ़ोर (पु0) देखें ढाँगर और मवेशी।

ढोला/ढ़ोलना (पु0) देखें लिंगर।

ढ़ँगुर (पु0) देखें ठेंगोर और लिंगर।

राँभना (क्रिया) गाय भैंस का बच्चे के लिए आवाज़ निकालना। बच्चे की तलाश में ख़ास क़िस्म की आवाज़ में चींख़ना। डगराना भी बोला जाता है।

रल्ना/रिल्ना (क्रिया) मवेशी का अपने गल्ले से भटककर दूसरे गल्ले में मिल जाना। 2 गल्ले से अलाहिदा हो जाना।

रिज़क़ा (पु0) एक ख़ास क़िस्म की घास जो मवेशियों के चारे के लिए मौसमे गर्मा में बोई जाती है और घोड़ों को खास तौर से खिलाई जाती है।

रम्ना (पु0) गल्ले के मवेशियों के जमा होने और क़याम करने का चरागाह मे कोई महफ़ूज़ मैदान। ढ़ोरों के बैठने और आराम लेने का मैदान।

रैंगटा (पु0) गधे का बच्चा।

रेंगना (क्रिया) गधे का चीखना या आवाज़ निकालना।

रेवड़ (पु0) मवेशियों का गोल यानी एक मजमूई तादाद जो चरागाह को जाने के लिए इकट्ठी कर ली गयी हो।

सार (पु0) मवेशियों के गल्ले के बंद करने का लकड़ियों का बनाया हुआ बाड़ा जो जुरूरत के वक्त जंगल में बना लिया जाये।

सानी (स्त्री) मवेशियों को खिलाने के लिए दाने और चारे को मिलाकर बनाई हुई खूराक जो उसको काम के बाद रात को दी जाती है। **बनाना** के साथ बोला जाता है।

सुर्गा (पु0) चारे के लिए जंगली झाड़ियाँ काटने को घसियारों का एक क़िस्म का गंड़ासा।

सींगोटी (स्त्री) नख्ख़ास में मवेशियों के फ़रोख्त करने की जानवर पीछे तहबाज़ारी या फी अ़दद बिकरी का महसूल। **लगाना, लेना** के साथ बोला जाता है।

कुट्टी (स्त्री) जुवार के डंठलों को गड़ासे से काटकर भूसे की तरह का बनाया हुआ चारा।

कहावत *कुट्टी, मिट्टी, कपड़े मूँत, सानी और टाट।*
यह छयों जत्थे भले और सातवाँ जाट।।

कुटेरा (पु0) चोबी मुड़ढी जिससे गंड़ासे से चारा काटा या कुट्टी बनाई जाती है।

कुर्रा (पु0) खुश्क चारा अज़क़िस्म भूसा और पाला वगैरह जो ख़िज़ाँ और गर्मी के मौसम में ढोरों को खिलाने के लिए जमअ़ कर लिया जाता है।

कमपटी (स्त्री) क़मची (छड़ी) का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। गर्दन और टाँग में मिलाकर बाँधी हुई लकड़ी ताकि जानवर पलटकर मुंह न मारे। **देखें** लंगर।

कम चारू (पु0) कम खाने वाला मवेशी जो दुबला और कमज़ोर रहे।

कुन वाड़ा (पु0) ढ़ोरों के बंद करने का इहाता।

खारा (पु0) घस्यारे का टोकरा या जाल जिसमें वह घास इकट्ठी करके मंडी में लाता है।

खताना (पु0) देखें नौहरा।

खुरचराई (स्त्री) जंगल में मवेशियों के चराने का लगान जो ज़मीनदार या काश्तकार को अदा किया जाये।

खरक (स्त्री) देखें बिठान।

खुंरा (पु0) खुंडले का गंवारू तलफ़्फ़ुज़ और कुंवाड़े का इस्मे मुसग़्ग़र। **देखें** कुनवाड़ा।

खोपा (पु0) देखें जूड़ी।

खोगी (स्त्री) देखें जूड़ी।

खेदना/खेदे जाना (क्रिया) चरागाह में मवेशी को गल्ले से भगा ले जाना। घेरकर ज़बरदस्ती भगा ले जाना।

खैल (स्त्री) चरागाह के करीब या उसके रास्ते में मवेशियों के पानी पीने को बनाया हुआ चौबच्चा या बड़ा हौदा।

गुट्ठर (पु0) गुठल का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। भूसे की गाँठे या गाँठदार सख़्त क़िस्म का चारा जिसको मवेशी चबा न सकें और उस वजह से नाकारा रहे।

गड़रिया (पु0) देखें चरवाहा।

गड़ाऊ (पु0) गंड़ासे का इस्मे मुसग़्ग़र। **देखें** गंड़ासा।

गुलगावा (पु0) भगोड़े और मरखने मवेशी की गर्दन और टाँग में बँधी हुई रस्सी की बेड़ी जिसकी वजह से न वह भाग सके और न सींग मार सके। **देखें**

गल्ला (पु0) मवेशियों का बड़ा रेवड़ या मंदा।

गल्ला बान (पु0) मुखतालिफ़ क़िस्म के मवेशियों के गल्ले रखने और उनकी परवरिश और अफ़ज़ाइश का एहतिमाम करने वाला आजर, ब्योपारी या पैकार जो बड़ी मंडियों और बाजारों में ज़रूरत के मवेशी फराहम करता है।

गंजा (पु0) गंजी का इस्मे मुकब्बर। **2** घास के ढेर का गट्ठर बाँधने की रस्सी।

गंजी (स्त्री) सूखी घास का बाक़रीना बनाया हुआ अंबार जो जाड़े और गर्मी के मौसम में मवेशियों के चारे के लिए महफ़ूज़ रखने को बना लिया जाता है।

गँडासा/गँड़ासा (पु0) डंठलदार और सख्त क़िस्म के चारे को काटकर छोटे–छोटे टुकड़े या चूरा करने का धारदार औज़ार।

गुवालिया/गुवाला ( ) देखें चरवाहा **देखें** पेशा घोसी भाग दो पृ0

गोथान/गऊथान (पु0) चरागाह को जाने के लिए क़स्बे के गाय बैल के जमा होने की जगह जहाँ आकर वह अज़खुद ठहर जाते और चरवाहे का इन्तज़ार करते हैं।

गऊ चराई/गाव चराई (स्त्री) गायें चराने की उजरत।

गऊ घाट (पु0) मवेशियों के पानी पिलाने का घाट।

गऊ हेरा (पु0) जंगल में गाय बैल बंद करने को लकड़ियों की बनाई हुई बाड़।

घाट्ला (पु0) देखें लंगर।

घस कटा (पु0) चरागाह की बढ़ी हुई खाँस का काटने वाला मज़दूर। **देखें** घसियारा।

घसिया (पु0) सिर्फ घास खाने वाला चौपाया या मवेशी।

घसियारा (पु0) मवेशियों के लिए जंगल से घास छीलकर या काटकर लाने वाला पेशेवर मजदूर।

घैंटा (पु0) भेंड़ बकरी का बच्चा।

लटकन (पु0) देखें लंगर।

लंगर (पु0) भगोड़े बैल या ढोर के गले में लटका हुआ लकड़ी का मोटा डंडा जिसका दूसरा सिरा ज़मीन पर पड़ा रहता और ढोर के चलने के साथ घसीटता हुआ चलता रहता है अगर ढोर तेज़ क़दम चले या भागने लगे तो यह डंडा उसकी दोनों अगली टाँगों के बीच में अटककर आड़ा हो जाता है और भागने नहीं देता।

चित्र लंगर

लंगूरी (स्त्री) देखें पुनहाई।

मिस्सा भुस (पु0) मूँग मूठ का भूसा यानी छिल्के जिसमें दाने का कुछ हिस्सा मिला रहता है और इस वजह से मवेशी उसके खाने से मोटा होता है।

मिम्ना (पु0) भेंड़ बकरी का कम उम्र का बच्चा।

मिम्याना (क्रिया) भेंड़ बकरी के छोटे बच्चे की चीख़ने की आवाज़ जो वह माँ की तलाश में लगाये।

मंदा (पु0) देखें गल्ला, रेवड़।

मौंधू/भौंदू (पु0) गधे का छोटा बच्चा।

मवेशी (पु0) काश्कारी इस्तिलाह में ढोर या चौपाये जो खेती बाड़ी यानी काश्तकारी के काम आये।

मैंढ़ा (पु0) मेढ़यों के गल्ले के साथ रहने वाला नर जो अफ़्ज़ाइशे नस्ल के लिए परवरिश किया जाता है।

कहावत *मैंढ़ा हटाऊ न जानिये और कैर सको चंत।*
जो बैरी हँसकर मिले चौकस रहिए कंत।।

निखुरा (पु0) देखें कम चारु।

नौह्रा/नुहरा (पु0) रात के वक्त गल्ले के, मवेशियों के बंद करने की महफूज़ जगह, इहाता या मकान।

निहारा/निहारी (पु0) लद्दू और दूसरे बारबरदारी व काश्तकारी के जानवरों को काम पर लगाने से क़ब्ल खिलाने की मुक़व्वी ग़िज़ा जो ऐसे जानवरों की हैसियत और काम के लिहाज़ से मुख़्तलिफ़ क़िस्म की होती है।

नियार (पु0) निहार या निहारा का गलत तलफ़्फुज़। काम पर ले जाने से क़ब्ल ढोरों को खिलाने का चारा। **देखें** निहारा।

हाथी चक (स्त्री) एक खास क़िस्म की लम्बी डांडी की पहाड़ी घास जिस पर गेहूँ की बाल की तरह चुभने वाला तुर्रा निकलता है और कपड़े पर चिमट जाता है।

हराना/हेराना (पु0) देखें नौहरा।

हरनिया (पु0) एक खास क़िस्म की घास जो बियाई हुई यानी बच्चा जनी हुई गाय भैंस को खिलाई जाती है।

हरी/हरियाई (स्त्री) बरसात की नई फूटी हुई हरी और नर्म घास जो ढोरों के लिए मुफीद नहीं होती है।

हीराना (पु0) देखें हिराना।

हेरी (स्त्री) ढोर या भेंड़, बकरी का गल्ला जो फरोख़्त के लिए जगह जगह ले जाया जाये।

7 पेशा सलोत्री (घोड़ों का डॉक्टर)

आँत कट्टू (पु0) मवेशियों के पेट का मर्ज़, एक क़िस्म की बदहज़मी जिसमें थोड़ा थोड़ा पतला पाख़ाना आने लगता है और मवेशी को कमज़ोर कर देता है। अंग्रेजी में डायरिया (क्पमतपवीं) कहते हैं।

आँसू ढाल/आँसू धार (स्त्री) मवेशी और घोड़े की आँख की बीमारी जिसमें आँख से पानी जारी हो जाता है।

अभीरोग (पु0) मवेशी की ज़बान की बीमारी जिससे ज़बान में छाले और ज़ख़्म पड़ जाते और उनमें कीड़े पैदा हो जाते हैं।

अफार (पु0) मवेशी की पेट फूलने की बीमारी जो बदहज़मी की वजह से जुगाली बंद होने से होती है इसकी वजह से पेट फूल जाता है और ज़ियादती की सूरत में बंद हैज़ा हो जाता है।

अगनबाद (पु0) घोड़े के आठ मशहूर इमराज़ में से एक मर्ज़ का नाम जिसमें उसके जिस्म पर से बाल और कहीं कहीं खाल भी उड़ जाती है।

अगन बाद उसको सब कहते हैं ऐ दोस्त।
कि उड़ जाते हैं जिससे बाल और पोस्त।।
निकाले गर कोई घोड़ा अगन बाद।
तो उसका भी बता दूँ तुझको इक आद।। (रंगीन)

अमा (पु0) मवेशी की एक बीमारी का नाम जो रसौली की क़िस्म की होती है और आँख के पपोटे या हल्क़े के क़रीब हो जाती है।

बादसूल (पु0) रियाही दर्द या मरोड़ जो पेट में हवा रुकने से घोड़े और दूसरे मवेशियों के होता और बेचैन कर देता है।

जो घोड़ा लौटकर बग़लों में झाँके।
व या हर लहज़ास मुज़तर हो के काँखे।।
तो है वह बादसूल इतना तू पहचान।
कि जिसके किरकिरी करता है हैवान।। (रंगीन)

बादखाना/बादखानी (पु0/स्त्री) घोड़े का ढकारें लेना। अगर घोड़े का यह फेअ़ल रुक जाये जो उस का पेट उफर जाता और बीमारी की शक्ल पैदा हो जाती है जिस तरह जुगाली करने वाले जानवरों की हालत जुगाली भूलने से होती है और बाज़ औक़ात वह मर जाते हैं इसलिए इस मर्ज़ का इलाज़ जुरुरी होता है।

कि था जो बादखाना उसका मामूल।
सो है वह बादखाने को गया भूल।।

घोड़े के लिए उसका इलाज गुड़ से किया जाता है। जिसकी एक गोली बनाकर घोड़े के मुंह में दे दी जाती है। जिस तरह जुगाली करने वाले जानवरों के मुंह में लकड़ी बाँध दी जाती है।

मलेगा मुंह वह गुड़ सब होगा पानी।
उसे याद आयेगी वह बादखानी।। (रंगीन)

बादी (स्त्री) देखें बादखाना।

बाव बंद (पु0) देखें बादखाना।

बताना (पु0) घोड़े की आँख का कोया या आँख की नाक की तरफ के कोने के नीचे का पेंचदार हिस्सा जहाँ आँख का पानी आकर रुकता है और आँख की बीमारी पैदा होने का अंदेशा होता है। इस लिए उस हिस्से को साफ़ रखना और धोते रहना ज़ुरूरी होता है।

बताना आँख के कोये का है नाम।
बताना उसको यूँ मेरा ही था काम।। (रंगीन)

बत्रा रोग/बुत्रा रोग (पु0) देखें पुर्बा रोग।

बट (स्त्री) घोड़े की आँट का सिरा जो मिक़अ़द यानी पाख़ाना करने के सूराख़ से ज़रा ऊपर की तरफ का हिस्सा जिसके सिकुड़ने या फूल जाने से घोड़े को लीद करने में तकलीफ़ होती है इसलिए वह एक बीमारी समझी जाती है।

तो फिर यह जान मुंह छोटा है बट का।
कोई सुद्दा बड़ा है उसमें अटका।। (रंगीन)

बदनाम (पु0) घोड़े के मशहूर इमराज़ में से एक मर्ज़ का नाम जिसमें घोड़े के जिस्म पर एक क़िस्म का बड़ा फोड़ा निकल आता है। जिसको इस्तिलाह में गट्टा कहते हैं इस गट्टे से खून निकलता रहता है और बड़ी मुश्किल से अच्छा होता है।

किसी घोड़े के गर हो जाये बदनाम।
तो फिर जो मैं कहूँ तू कर वही काम।।

बरसाती (स्त्री) घोड़े के फोतों की एक बीमारी का नाम जो फुंसियों की किस्म में होती है जो

बढ़कर पेशाब करने के सूराख़ और फोतों के करीब बद गोश्त पैदा कर देती है।

रखे दिल से अगर मेरी तरफ कान।
तो कह दूँ तुझ से बरसाती की पहचान।।
गरज़ जो चुप रहे बरसात भर नर।
तो बरसाती है तू उससे बहुत डर।। (रंगीन)

बड़ा रोग (पु0) गाय, बैल और भैंस की चेचक की बीमारी। **देखें** बसंती।

बसंता (पु0) ढोरों की बड़ी और ख़तरनाक क़िस्म की चेचक।

बसंती (स्त्री) मवेशियों की चेचक जो अमूमन शुरू मौसमे बहार में जिसको बसंत कहते हैं, हुआ करती है और यही उसकी वजह तस्मिया है। यह लाइलाज मर्ज़ है उसमें मवेशी बहुत ज़ायअ़ होते हैं।

बग़लन (स्त्री) घोड़े की बग़लें पकने की बीमारी। बग़लें आना, जिसमें घोड़े की बगलों में फुंसियाँ निकल आती है। अक्सर मौसमे बहार के शुरू में घोड़ों को यह बीमारी हुआ करती है जिस तरह दूसरे मवेशियों को चेचक निकलती है।

बोग्मा (पु0) घोड़े की मशहूर बीमारियों में से एक बीमारी का नाम जिसमें घोड़े को कसरत से पसीना आता है और उसकी मौत का बाअ़स हो जाता है।

अगर हद से परे आवे पसीना।
फिर मुश्किल है भाई उसका जीना।
उसे ही बोग़मे ने आके मारा।
नहीं उसके सिवा कुछ और चारा। (रंगीन)

बेल हड्डी (स्त्री) (इस्प्लेनेट) घोड़े की पिंडली के एक मर्ज़ का नाम जिस में नली की हड्डी में एक हड्डी उभर आती है और घोड़ा लंगड़ा और माजूर हो जाता है।

नली में से जो उभरी हड्डी फिलजाल।
फिलहाल, तो बेल हड्डी उसे कहते हैं दल्लाल।। (रंगीन)

पाइन (स्त्री) देखें खुरपक्का।

पाई (स्त्री) घोड़ों और मवेशियों की टाँगों का मर्ज़ जिसमें पैरों पर वरम आ जाता है और जानवर चलने से माजूर हो जाता है।

पालिया/पलिया (पु0) देखें राल और नीलूआ।

फेप्डी (स्त्री) मवेशी के जिगर और फेफड़ों के मरज़ों में से एक मर्ज़ जिस में फेप्ड़े और जिगर के अंदर कीड़ा पैदा हो जाता है।

तालूआ/तालू (पु0) अंग्रेजी में (चंसंजंस)घोड़े या मवेशी की तालू की बीमारी जिसमें तालू सूज जाता और उसमें ज़ख्म पड़ जाता है।

जिगर कीड़ा (पु0) देखें फेप्ड़ी।

झोली (स्त्री) घोड़े के पेट की बीमारी जिसमें उसका पेट उभरा रहता है।

जो चाहे तेरा घोड़ा छोड़े झोली।
तो पस्ली पर जो उसकी जा है पोली।।
दिया कर चार पारा दाग़ फिलफौर।
न कर उसके सिवा उस की दवा और।।

चाँदनी (स्त्री) घोड़े की एक बीमारी का नाम जो लक़वे की क़िस्म से होती है। जिसमें नीचे का जबड़ा बिगड़ जाता है। **मारना** के साथ बोला जाता है।

वह पाये जिंदगी घोड़ा दो बारा।
बचे गर चाँदनी का कोई मारा।।

चटिया (स्त्री) देखें हड्डा।

चकाबल/चकरावल (स्त्री) घोड़े के सुम की बीमारी जिसमें अगली टाँग के सुम की खाल की कोर फूल जाती है और घोड़े के लंग करने का बाअ़स होती है।

छौंका (पु0) देखें नाल।

दाग़ चारबंद (पु0) घोड़े और दीगर मवेशियों के पुट्ठे और शानों पर दिये हुये दाग़ जो टाँगों की बीमारी (दर्द या अकड़) लिये लोहा गर्म करके दिये जाते हैं।

घाँस (स्त्री) दमे की क़िस्म से घोड़े की एक बीमारी का नाम।

राल (स्त्री) मवेशियों के हलक़ की बीमारी का नाम जिसमें उसके मुंह से पानी जाने लगता है। **देखें** नीलुआ।

रस/रस्सा (पु0) अंग्रेज़ी यर्श। घोड़े के गले की बीमारी जिसमें सुम की गद्दी फूल जाती है और उसमें मवाद आ जाता है।

रेजिश (स्त्री) रेज़िश का गलत तलफ़्फुज़। घोड़े के गले की बीमारी जिसमें उसके गले के गदूद फूल

जाते हैं और मुंह से राल टपकने लगती है। **देखें** नीलुआ।

ज़ानुआ/ज़ानवा (पु0) घोड़े के घुटने की बीमारी जिसमें घुटने के जोड़ में हड्डी निकल आती है। **देखें** हड्डा।

जो हों हाथों के घुट्नों मे बदस्तूर।
तो उस घोड़े से भी तू भाग जा दूर।
सबब है यह कि उसको ज़ान्वा है।
उसे हरगिज न ले तू वह बुरा है।

ज़क (स्त्री) घोड़े की बांझ की बीमारी का नाम जिसमें बाछ पक जाती है और घोड़ों को बेकार कर देती है।

किसी घोड़े की जावे बाछ गर पक।
मुबस्सिर सारे उसको कहते हैं ज़क।।

ज़हर बाद (पु0) हाथी की एक ख़ास बीमारी जिससे सूजन आ जाती है और उसकी मौत का बाअ़स होती है।

साड़ा (पु0) मवेशी और घोड़े के फेप्ड़े की बीमारी जिसमें उसका सीना जकड़ जाता है और साँस लेने में हाँपता है।

सलोत्री (पु0) घोड़ों और मवेशियों की बीमारियों को पहचानने और इलाज करने वाला माहिर शख़्स।

सुमफटा (पु0) घोड़ों और मवेशियों की सुम की बीमारी जिसमें सुम फट जाते हैं और जानवर चलने फिरने से रह जाता है। **2** सुमों की बीमारी वाला मवेशी।

सुम सुकड़ा (पु0) मवेशी की एक बीमारी जिसमें सुम मिच जाते हैं और उनको सूखा लगने लगता है और एक क़िस्म की खुश्की पैदा हो जाती है **2** वह मवेशी जिसके सुमों में सूखा लग जाये।

सुँगा (पु0) देखें साड़ा।

सूर (पु0) घोड़े या मवेशी की पीठ यानी कमर का ज़ख्म जो आमतौर से अच्छा नहीं होता और इसमें चोर रह जाता है जो एक क़िस्म का नासूर बन जाता है।

लगे गर पीठ घोड़े की पड़े चोर।
सिपाही लोग कहते हैं जिसे सूर।।

काँखना (क्रिया) घोड़े और मवेशी का मर्ज़ की तकलीफ़ में कराहना न कूलना।

जो घोड़ा लौटकर बग़लो मे झाँके।
व या हर लहज़ा मुज़्तरिब हो काँखे।।

कुप्पक (पु0) घोड़े, गधे और दीगर मवेशियों के गले की बीमारी एक क़िस्म का वबाई ज़ुकाम जिसमें गले की रगें और ग़दूद फूल जाते और हलक़बंद हो जाता है।

किरकिरी/कुरकुरी (स्त्री) घोड़े और मवेशी के पेट का मरोड़ जो दर्द की वजह से होता और बहुत तकलीफ़ देता है।

कफ्गीरा (पु0) घोड़े के सुम की पुतली की बीमारी जिसमें सुम के नीचे तले हिस्से में खाली जगह गोश्त उभर आता और बहुत तकलीफ़ देता है घोड़ा पैर नहीं टिका सकता।

निहायत ही बुरा है यार यह रोग।
कहा करते है कफ़्गीरा उसे लोग।

किल्किया (पु0) देखें लहरूआ।

किनार/गिनार (पु0) घोड़े की एक बीमारी का नाम जो ज़ुक़ाम की क़िस्म से होती है। जिससे दिमाग़ की कोई झिल्ली फूल जाती है और घोड़ा नथनों से साँस न ही ले सकता।

अगर तेरा किनारा जाये घोड़ा।
पुराना टाट तू ले करके थोड़ा।। (रंगीन)

कूरा (पु0) घोड़े के सुम की बीमारी जिसमे सुम के नीचे का हिस्सा पक जाता है।

खाज (स्त्री) मवेशियों खुसूसन कुत्ते की खुजली जो सख़्त क़िस्म की और नाक़ाबिले इलाज होती है।

खुर फटा (पु0) देखें सुम फटा।

खुर चटक (पु0) देखें सुम फटा।

खुर सीना (पु0) देखें सुम फटा।

खोरा (पु0) घोड़े या मवेशी की खुश्क खाँसी ख़ास कर बिल्ली की खाँसी।

खोराँटा (पु0) सुमों की बीमारी वाला घोड़ा या मवेशी जिसके सुमों में ज़ख़्म पड़ गये हो। **देखें** सुम फटा।

खमरोटा (पु0) देखें खाँराटा।

गाना/गहना (पु0) घोड़े के सुम के मर्ज़ का नाम जो सुम की ऊपर की खाल की रगों के फूलने से पैदा हो। जिससे वह लंगड़ा हो जाता है।

जियेगा जब तलक यूँ ही रहेगा।
जो दाना है उसे गाना कहे गा।।

गाईना (पु0) वह मवेशी जिसका कोई उज़्व ज़ाइद हो मसलन पैर वगैरह जिसकी वजह से वह नाक़िसुल ख़िलक़त समझा जाये और बेकार रहे।

गुट्टा (पु0) देखें बदनाम।

गुलियाना (क्रिया) नली के ज़रिये जानवर के पेट में दवा या गिज़ा पहुँचाना।

गिनार (पु0) देखें किनार।

लचका (पु0) घोड़े की कमर की बीमारी जो रीढ़ की हड्डी और कमर की पुट्ठों के ख़लल से होती है जिसकी वजह से घोड़ा सवारी देने के क़ाबिल नहीं रहता।

लगवाह (पु0) लक़वे का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। सलोत्रियों की इस्तिलाह में इस बीमारी को चाँदनी कहते हैं। **देखें** चाँदनी।

लंग (पु0) घोड़े के मर्ज़ हड्डा की एक क़िस्म जिसमें पिछले पैर के घुटने के जोड़ के अन्दर एक नुकीली हड्डी निकल आती है। जो इस्तिलाह में लंग कहलाती है। **देखें** हड्डा।

मुड़की/मिड़की (स्त्री) घोड़े की एक बीमारी का नाम जिसमें उसका मुंह और ज़बान वगैरह सुर्ख़ हो जाती है।

लाल बाऊ ( ) देखें मुड़की/मिड़की।

मोत्रा/मोथरा (पु0) घोड़े की पिछली टाँगों की बीमारी का नाम जिसमें घुटनों की रगें फूल और बढ़ जाती हैं और घोड़े को चलने फिरने से माज़ूर कर देती है।

पिछाड़ी पाँव के घुटनों के अंदर।
रगें होती हैं ताज़ी के मुक़र्रर।
अगर वह फूल जावें तो है वह रोग।
उन्हीं को मोत्रा कहते हैं सब लोग।।

मोच (स्त्री) घोड़े और दीगर लद्दू जानवर के पैरों के पुट्ठों की अकड़ जिससे पिछले पैर ज़रा फिर जाते और चलने में घुटने टकराते हैं यह नुक़्स कम उम्र जानवर पर ज़ियादा बोझ लादने या ज़ियादा दूर ले जाने से हो जाता और उसको निकम्मा कर देता है।

नारू/नहारू (पु0) देखें नहरूआ।

नाल (स्त्री) मवेशी को दवा पिलाने का बाँस का टोटा। जिसका एक सिरा बंद और दूसरा सलामीदार कटा होता है इसमें दवा भरकर उसके मुंह से हलक़ के अन्दर पहुँचाई जाती है।

नल्की ( ) देखें नाल।

खोला ( ) देखें नाल।

नहरूआ (पु0) एक क़िस्म का फोड़ा जो मवेशियों के टाँग या टाँगों के जोड़ों में निकल आता है यह मर्ज़ पानी के एक कीड़े से पैदा हो जाता है जिसको पानी के साथ मवेशी पी जाता है यह मर्ज़ इंसान को भी होता है।

नीलुआ (पु0) मवेशी और घोड़े के गले की बीमारी जिसमें गले के ग़दूद फूल जाते और मुंह से राल जारी हो जाती है जिसकी वजह से खाना पीना बंद हो जाता है और अक्सर जानवर मर जाता है। नील तिलंगी ज़बान में पानी को कहते है लफ़्ज़ नीलुआ मुमकिन है कि उसी तरफ की इस्तिलाह हो।

हड्डा (पु0) घोड़े की पिछली टाँगों के घुटनों के जोड़ में रगों के अंदर जो नई हड्डी पैदा हो जाती है सलोत्रियों की इस्तिलाह में हड्डा कहलाती है। यह हड्डी दो क़िस्म की होती है एक नुकीली दूसरी हमवार नुकीली हड्डी को इस्तिलाह में लंग कहते हैं और हमवार को चट्पा। नुकीली हड्डी के निकलने से घोड़ा चलने से माज़ूर हो जाता है लेकिन हमवार हड्डी चलने में हारिज नही होती। इस क़िस्म की हड्डी जो सामने की टाँग के घुटने में निकलती है वह इस्तिलाह में ज़ानुआ कहलाती है और जो पिंडली में निकले उसे बेल हड्डी आमतौर से घोड़े के थान पर बहुत दिनों खड़े रहने से निकल आती है।

दूसरी फ़सल बार बरदारी व हम्माली

1. पेशा गाड़ी बानी

आरन (स्त्री) अर्रे का इस्मेमुसग़्ग़र। **देखें** अर्रा।

आड़ (स्त्री) ढलान पर खड़ी हुई गाड़ी के पहिये के नीचे लगाने की मुड्डी या रोक जिससे गाड़ी अपनी जगह क़ायम रहे और आगे या पीछे न हटे।

आसनी/आसन (स्त्री) अंग्रेज़ी कोच बक्स। गाड़ीवान या गाड़ी हाँकने वाले के बैठने की जगह।

आक/आख (स्त्री) आक आँकड़े का इस्मेमुसग़्ग़र और आख उसका दूसरा तलफ़्फ़ुज है। देखें आँगड़ा और मुहताली।

आँडी (स्त्री) पहिये की 'ना' के सिरे के ऊपर लगा हुआ हल्का जो **ना** की मजबूती के लिये लगाया जाता है। देखें धुरा।

आँकड़ा (पु0) खुले मुँह का आहनी हल्का जिसमें कोई चीज अट्का दी जाये। देखें मुहताली।

अड़ंगा () देखें आड़।

बंद () देखें आँड़ी।

आवन/आँबन (स्त्री) पहिये की **'ना'** के अंदर का आहनी नलुवा या नली जो घूरे की रगड़ से बचाव के लिये लगी होती है। **बिठाना** आवन को **ना** के सूराख़ में मजबूत फँसाना। **देखें** घुरा।

उठारा (पु0) देखें उठाउनी।

उठाउनी (स्त्री) दो पहिया गाड़ी के सामने के सिरे को ऊपर उठाये रखने की टेक जबकि वह बे जुती हो। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

उठकन/उठगन () देखें उठाउनी।

अड्डा (पु0) किराये की गाड़ियों के खड़ा होने का मुक़र्रिरा मुक़ाम जहाँ वह सब तरह से आकर जमा होती और किराये पर दी जाती है। बाइसिकिल की गद्दी के नीचे की आहनी कुहनी जिस पर गद्दी कसी जाती है।

अराई सराई (स्त्री) गाड़ी के पहिये में अररों की गैंचीदार जड़ाई जैसी कि मोटर और बाइसिकिल के पहियों में होती है। अराई (आड़ी) सराई (सिलाई) बमानी जड़ाई, को इस्तिलाह में अराई सराई कहा जाने लगा। **देंखे** पहिया।

अर्रा (पु0) पहिये के मरकज़ी हिस्से और मुहीत के दौर या हल्क़े के दरमियान लगी हुई तानें जो मरकज़ी हिस्से को दौरी घेरे के साथ मर्कज़ में जोड़े और ताने रखती हैं। लकड़ी के पहिये में अर्रे लकड़ी के, लोहे के पहिये में लोहे के होते हैं। **देंखे** पहिया। **बिठाना, फँसाना, डालना,** अर्रों को पुट्ठी यानी घेरे और **'ना'** यानी मरकज़ी हिस्से के दरमियान जड़ना या कस देना।

अड़ पर्दा/आड़ पर्दा (पु0) गाड़ीबान की निशस्त और गाड़ी के असल हिस्से यानी सवारियों के बैठने की जगह के दरमियान की आड़।

आड़ गड़ा (पु0) देखें अड्डा।

अड़ंगा (पु0) देखें आड़।

उड़ेख (स्त्री) देखें झोक।

इक्का/यक्का (पु0) दो तीन आदमियों के बैठने की हल्की, फुल्की छतरीदार दो पहिये की सवारी जिसमें एक टट्टू जोता जाता है। जो उसको आसानी से खींच सकता है अब इस सवारी का रवाज बड़े शहरों में कम होता जा रहा है। सूबा मूत्तहिदा आगरा और अवध के इलाक़ों में इसका बहुत चलन है सवारियों में सब से ज़ियादा सस्ती सवारी है। हैदराबाद में एक इसी क़िस्म की सवारी झटका कहलाती है बनावट में वह इक्के से मुख़्तलिफ़ और ज़ियादा भारी होती है। सवारियाँ उसके अंदर बंद हो जाती है और जुरूरत के वक्त आसानी से उतर चढ़ नहीं सकतीं। वह सवारी गाड़ी जिसमें सिर्फ एक घोड़ा जोता जाये। **देखें** बेली।

इकौड़ी (स्त्री) आँकड़े का इस्मेमुसग़्ग़र। **देंखे** आँकड़ा।

उलाँग/उलाऊ (पु0/स्त्री) दो पहिया गाड़ी की चलते में पीछे की तरफ झुकी हुई रहने की हालत जो उसके पिछले हिस्से पर वज़न की ज़ियादती से होती है इस सूरत में अगला हिस्सा किसी क़दर ऊपर को उठ जाता है जिसमें गाड़ी का तवाज़ुन बिगड़ जाता और जानवर को उसके खींचने में मेहनत पड़ती है। **प्रयोग** पीछे की तरफ बोझ ज़ियादा होने से गाड़ी उलाँग हो रही है।

दबाऊ (पु0) उलाँग के मुक़ाबले में दूसरी सूरत दबाऊ है जिसमें गाड़ी का वज़न आगे की तरफ

ज़ियादा हो जाता है और गाड़ी चलने में सामने के रुख़ झुकी रहती है इस हालत में गाड़ी खींचने वाले जानवर की कमर और कंधों पर ज़ियादा बोझ पड़ता है। **प्रयोग** आगे की तरफ बोझ ज़ियादा होने से गाड़ी दबाऊ हो जायेगी।

अंग (पु0) धुरे का पुशतीदान या वह मुड्डी जो धुरे को सहारा दे। **देंखे** बाँक।

ओटाँरा/ओटँरा (पु0) उठारा और उठाउनी का दूसका तलफ्फुज। **देंखे** फड़/उठाउनी।

ऊँट गाड़ी (स्त्री) वह गाड़ी जिसको ऊँट खींचे यह गाड़ी बड़ी भारी और आमतौर से बारबरदारी के काम की होती है जिसमें वजनी और ज़ियादा सामान लादा जाता है राजपूताने के बाज़ इलाक़ों में अब भी इसका चलन है इसको आमतौर से करॉंची कहा जाता है। **देंखे** करॉंची।

ऊँगाई (स्त्री) गाड़ी के पहियों को ऊँगने का अमल। **देंखे** ऊँगना।

ऊँगना (क्रिया) गाड़ी के पहिये की **'ना'** के सूराख़ को चिकनाना। यानी **'ना'** के सूराख़ में चर्बी या कोई दूसरी चीज़ भरना ताकि पहिये को धुरे पर घूमने में आसानी और वज़नी हो और धुरा **'ना'** की रगड़ से महफ़ूज़ रहे। **प्रयोग** गाड़ी बहुत दिनों से ऊँगी नहीं गयी इसलिये भारी चलती है और चूँ चूँ की आवाज़ देती है।

बाँक (स्त्री) बैलगाड़ी के धुरे को सहारा देने वाला कमान की शक्ल का पहिये पर बाहर के रूख लगा हुआ तख़ता या डंडा जो धुरे को भी सहारता है और गाड़ी पर चढ़ने के लिये ठोकर (पाइदान) का भी काम देता है। बारबरदारी की गाड़ियों जैसे भारकस, छकड़े वगैरह में भारी और सवारी गाड़ियों में हल्का और सुबुक लगाया जाता है।

चित्र बाँक।

बाँक ओलाया (पु0) दोनों तरफ की कमानियों के सिरों पर लगी हुई बीच की इकहरी कमानी जो बाज़ गडियों में आगे और पीछे दोनों तरफ की झुक के सहारने को लगी होती है और बाज़ में सिर्फ एक पीछे की तरफ होती है ताकि वज़न से गाड़ी पीछे की तरफ न झुके। **देंखे** कमानी। बाँक ओलाया दरअस्ल बंकोरा का गलत तलफ़्फ़ुज़ है और बंकोरा बाँक का इस्मेमुसग़्ग़र बना लिया है।

बाँकड़ा/बकौड़ा (पु0) बाँक का इस्मे मुकब्बर। **देंखे** बाँक।

बाँकी (स्त्री) बाँक का इस्मे मुसग़्ग़र या बाँक।

बाउंगी/बौंगी (स्त्री) बैंगी (बहंगी) का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। बैलगाड़ी में सवारियों के बैठने का अधर खटोला जो बवक़्त ज़रूरत गाड़ी में लगाया या उसमें से निकाला जा सके।

बाइसकल (स्त्री) जदीद ईजाद की गाड़ी जिसको खुद सवार अपने पैरों से चलाता है।

बिट्ना (पु0) देखें सेल।

बच्चा गाड़ी (स्त्री) छोटे बच्चों को हवा खिलाने ले जाने की गाड़ी की क़िस्म की छोटी सवारी जिसको धकेलकर ले जाया जाता है।

बिछ्वा (पु0) जोत का सिरा या सिरे अटकाने को गाड़ी के जूए के बीच में ऊपर के रुख़ रखा हुआ बिच्छू के डंक की शक्ल का आहनी या पीतली आँकड़ा। बाज़ आँकड़े चिड़िया की शक्ल के बने होते हैं इसलिए उनको चिड़िया भी कहते हैं। बाज़ गाड़ियों में बम के सिरे पर लगा होता है और बाँधने के काम आता है।

बिड़र (स्त्री) बैलगाड़ी की फार (बम) का तवाजुन क़ायम रखने वाला नारियल या सूत की मोटी रस्सी का बंद जो बम को गाड़ी के पिछले हिस्से के साथ ताने और कसे हुये रखता है।

बग़ल्वा/बगल्वे (पु0) आमने सामने की हाँकों के सिरों के दरमियान जड़ी हुई पट्टी जिसकी वजह से उनकी आपस में पकड़ रहती और एक ढाँचा बन जाता है जिस पर गाड़ी का ऊपर का हिस्सा क़ायम किया जाता है।

बिगनट (स्त्री) खुली यानी बग़ैर छत की चौपहिया घोड़ा गाड़ी जिसमें कोचवान की निशस्त के पीछे आमने सामने चार छः सवारियों के बैठने की जगह बनी होती है।

बग्गी (स्त्री) छतदार चौपहिया घोड़ा गाड़ी जिसके बीच में दोनों तरफ पाल्की की तरह दरवाज़े

होते हैं अन्दर आमने सामने दो–दो आदमियों के बैठने की जगह और हवा की आमदोरफ़्त के लिए सबतरफ खिडकियाँ बनी होती हैं।

पाल्की गाड़ी ( ) देखें बग्गी।

सेजगाड़ी ( ) देखें बग्गी।

बग्गी ख़ाना (पु0) बग्गी या बग्गियाँ खड़ी करने की इमारत।

बग्गी साज़ (पु0) बग्गी बनाने और मरम्मत करने वाला कारीगर।

बम (स्त्री) (ग़ालिबन पुर्तगाली) दकन की एक मुक़ामी बोली में यरकुल कहते हैं। यह उमदा क़िस्म की लकड़ी की बनी हुई बल्ली या बाँस होता है जो जोड़ी में दोनों जानवरों के बीच में एक लगी होती है जिसके दोनों तरफ जानवर जोते जाते हैं और इक्के में गाड़ी के सामने दोनों सिरों पर एक लगी होती है जिसके बीच में जानवर होता है।

चित्र बम

बंद (पु0) देखें आँड़ी।

बम्बू कारट (पु0) अंग्रेज़ी लफ़्ज़ है जो उर्दू में बाँस की बम वाली मामूली और भारी बनी हुई दो पहिया गाड़ी को कहते हैं जो आमतौर से नये घोड़े का सधाने या बारबरदारी के काम में लाई जाती है।

बुनारा/बुनाला (पु0) गाड़ी के नीचे पहियों के दरमियान की जगह में घास रखने को रस्सी का बना हुआ जाल।

बंद गाड़ी (स्त्री) छत जड़ी हुई पाखोंदार गाड़ी या वह गाड़ी जिसपर छत क़ायम हो और हर वक़्त चढ़ाई उतारी न जा सके।

बंडी (स्त्री) बारबरदारी की दो पहिया खुली गाड़ी जिसमें आमतौर से एक बैल जोता जाता है। धूप और बारिश से बचाव के लिए उस पर बोरिये का खोपा बना लिया जाता है बंडी का लफ़्ज़ दकन के इलाक़ों में बोला जाता है। शिमाली हिंद में इस क़िस्म की बारबरदारी की गाड़ी को ठेला कहते हैं और दोनों की बनावट में भी थोड़ा फर्क़ होता है। **देखें** भार कस।

बंकोरा (पु0) देखें बाँक ओलामा।

बंगला (पु0) रथ की बुर्जीनुमा छतरी या छत जो अम्मारी की शक्ल की होती है। **देखें** रथ और अम्मारी।

बौंगी (स्त्री) देखें बाओंगी।

बैल ठेला (पु0) बारबरदारी का ठेला जिसमें एक या दो बैल जोते जायें एक बैल वाले को एक बैल का और दो बैलों वाले को दो बैल का ठेला कहते हैं।

बैल गाड़ी (स्त्री) सवारी या बारबरदारी की वह गाड़ी जिसमें बैल जोते जायें यानी जो बैलों के खींचने के लिए ख़ास तर्ज़ की बनी हुई हो।

बैली/बहली (स्त्री) संस्कृत वाह या बाह बमानी सुबुक चाल। रथ से छोटी और ताँगे से बड़ी हल्की फुल्की छतरीदार दो पहिया बैल गाड़ी जिसमें सिर्फ तीन चार सवारियों के बैठने की जगह होती है। हल्की और कम सवारियाँ होने की वजह से आसानी होती है। हल्की और कम सवारियाँ होने की वजह से आसानी से खींची जाती है। इसको आमतौर से मंझोली भी कहते हैं।

चित्र बेली

भार कस (पु0) फ़ारसी लफ़्ज़ बारकश का उर्दू तलफ़्फ़ुज़। बारबरदारी की बड़ी और क़िस्म की दो पहिया बैल गाड़ी जिसमें ज़ियादा सवारियाँ और सामान की हमलो नक़ल की गुंजाइश हो यानी जिसमें ज़ियादा सवारियां और सामान ले जाया जा सके। यह गाड़ी भी बैली ही की वज़अ़ होती है लेकिन यह ज़ियादा गुंजाइश की और भारी बनाई जाती है।

पेज 116–117 छूटा है।

भाड़ा (पु0) गाड़ी की बारबरदारी की उजरत या किराया। सवारी की उजरत के लिए किराया और बारबरदारी के लिए भाड़ा और दोनों को मिलाकर किराया भाड़ा बोला जाता है।

भंडारी (स्त्री) बैलगाड़ी की बम के नीचे गाड़ी का मामूली और ज़रूरी सामान रखने का ख़ाना।

भौंरा (पु0) वह लकड़ी जिसमें ठेले या भारकस का धुरा बिठाया या पेवस्त किया जाता है जो धुरे की पकड़ और मज़बूती के लिए बतौर पुश्ती दान काम देता है और धुरे को टेढ़ा होने और टूटने से बचाता है। **देखें** धुरा।

भौंरी (स्त्री) भौंरे का इस्मे..... पेज 116–117 छूटा है। ..... गँवारू तलफ़्फ़ुज़। बार बरदारी की गाड़ी यानी छकड़े या ठेले की फेड़ के दोनों तरफ बराबर बराबर जड़ी हुई हस्बेजुरूरत लम्बी लकड़ियों के बाड़ जो सामान की रोक को बग़ली आड़ का काम देती है।

नसौरी ( ) देखें भौंरा।

चक्का ( ) देखें पाहिया।

पहिया (पु0) पैर गाड़ी के पैर जिनका एक धुरे के ज़रिये आपस में रब्त क़ायम रहता है जिसपर गाड़ी का ढाँचा बना होता है। पहियों के ज़मीन पर घूमने या घुमाने से गाड़ी एक मुक़ाम से दूसरे मुक़ाम की तरफ हरकत करती है जिसको गाड़ी का चलना कहा जाता है। पहिया कई हिस्सों से मुरक़्क़ब होता है। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

चित्र पहिया

पैर गाड़ी (स्त्री) वह गाड़ी जिसपर आदमी सवार होकर खुद अपने पैरों से चलाये आमतौर से बाइसकल के नाम से मअरूफ़ है।

पैड/पैंडिया (स्त्री) लफ़्ज़ पाड़ बमानी मचान यानी बैठने या सामान रखने को ज़मीन से ऊँची बनी हुई ऐसी जगह जिसमें मुसाफिर का सामान या जानवरों के लिए चारा रख लिया जाये अंग्रेजी कैरियर। **देखें** दँतौला।

पैंडिया (स्त्री) पेड़ का इस्मे मुसग़्ग़र।

पैंजनी (स्त्री) देखें बाँक।

पैंदनी (स्त्री) देखें बाँक।

फार (स्त्री) फड़ का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। **देखें** फड़।

फड़ (स्त्री) बैली, भारकस और छकड़े वग़ैरह की बम और मज़बूत लकड़ियों को मख़रूती शक्ल में जोड़कर बनाई जाती है इसका सामने का गावदुम..... बैलों के बीच में बतौर बम रहता है और पिछले फैले हुये हिस्से पर गाड़ी का ढाँचा बनाया जाता है उसके ऊपर गाड़ी बान की निशस्त होती है और फड़, हर्सा और दसी या दासी के नामों से मौसूम की जाती है इसके पिछले हिस्से के नीचे धुरा लगाकर पट्टे लगा दिये जाते हैं। गाड़ी या छकड़े की शक्ल ख़्वाह वह किसी क़िस्म की हो इसी के ऊपर बनाई जाती है। सवारी गाड़ियों की फड़ सुबुक हल्की और किसी क़दर वज़्अदार होती है बाज़ मुक़ामी बोलियों मे फड़ को ठोकर भी कहते हैं।

चित्र फड़

फड़िया (स्त्री) फड़ का इस्मे मुसग़्ग़र। छकड़े के ढाँचे की बग़लियों की मोटी बल्लियाँ जिनपर पूरा ढाँचा बनाया जाता है। **देखें** छक्ड़ा।

फड़कीली (स्त्री) देखें उठाउनी।

फन्ना (पु0) देखें उठाउनी।

ताँगा (पु0) इससे एक ऐसी बैलगाड़ी मुराद ली जाती थी जो बैली से हलकी और सिर्फ दो सवारियों के बैठने के लायक़ हो। अब यह लफ़्ज़ एक ख़ास क़िस्म की घोड़ागाड़ी के लिए जो आजकल हर जगह चालू है बोला जाने लगा है इसमें चार सवारियाँ बैठती है और आमतौर से एक घोड़ा जोता जाता है मगर बाज़ ताँगे जोड़ी के भी होते है। 2 ताँगे की एक और क़िस्म जो ताँगे से हल्की और छोटी होती है ढोंगा कहलाती है।

तिरपाल (पु0) ताँगे वगैरह की छतरी बनाने का मज़बूत गुथाई का बुना हुआ मोटा कपड़ा जिसमें पानी न छने।

तुला/तोला (पु0) बैलगाड़ी के धुरे या धुरी की सँभाल की अड़वाड़ें जो धुरे के वज़न को सहारे और साधे रहती है। यह अड़वाड़ें पहिये के बाहर के रुख़ पर कैंची की सूरत गढ़ी हुई लगी रहती है। जिनके नीचे के सिरों में धुरी का सिरा बतौर कीला फँसा रहता है यह इस्तिलाह लफ़्ज़ तोल्ना से बनाई गयी है। बाज़ क़स्बाती तुल्ला, तुलावा और उसकी जमअ़ तुलाए बोलते हैं। **देखें** छकड़ा।

तलौंची/तरौंची (स्त्री) एक ख़ास क़िस्म के जुए की .... जिसको मुचेड़ा कहते हैं और जो मुस्ततील शक्ल का बना होता है। नीचे की लकड़ी। **देखें** मुचेड़ा।

तवा (पु0) पहिये के मरकज़ी यानी "ना" के मुंह का किसी धात का बना हुआ ढक्कन जो "ना" के सूराख़ को ख़ाक, धूल से बचाने के लिए लगाया जाता है।

तोब्ड़ियाँ (स्त्री) गाड़ीबान के बैठने की जगह के नीचे फड़ में लटकी हुई मामूली सामान रखने की थैलियाँ।

तोलन (स्त्री) वह आड़ या अड़वाड़ जो पहिये को धुरे से निकालने की सूरत में गाड़ी को सीधा खड़ा रखने के लिए धुरे के नीचे लगाई जाती है।

1 ज़दीद ईजाद की तोलन जो बहुत भारी गाड़ी या इंजन के धुरे के नीचे लगाकर पहिये को ज़मीन से इधर करने के लिए इस्तेमाल की जाती है। इस्तिलाह में **टटेरी** कहलाती है जो उसके पेचों के घुमाने की आवाज़ का नाम है। इसे दुमकल भी कहते हैं। **देखें** पहिया।

तेत्री (स्त्री) गाड़ी की कमानी के पलड़ों को एकजा रखने वाले आहनी चमड़े के मुंह को बंद करने की पेंचदार चिमटी (ढिब्री) जो दोनों सिरों को बंधा रखे। **देखें** कमानी।

थाप नसौरी (स्त्री) देखें गदेड़ा।

थामू (पु0) गाड़ी की रफ़्तार को धीमा करने या रोकने की आड़ या अड़ंगा। जो पहिये की हाल यानी पुट्ठी के ऊपर गुटके की शक्ल में लगा होता है जिसको किसी तरीक़े से हाल के ऊपर मज़बूती से भिड़ा देने से गाड़ी का पहिया चलने से रुकता है और रफ़्तार धीमी पड़ जाती या बंद हो जाती है इसको बाज़ मुक़ामात पर अड़ंग भी कहते हैं। अंग्रेज़ी में ब्रेक कहलाता है। 2 गाड़ी की कमानियों को सहारने की कमानी जो उनके सिरों को पकड़े रहती है। **लगाना हटाना** के साथ बोला जाता है। **देखें** बाँक ओलाया।

थूनी (स्त्री) देखें तोलन।

टिल्ली/टिल्लियाँ (स्त्री) रथ की निशस्त के नीचे बग़लियों में लगी हुई प्याली की शक्ल की छोटी छोटी पतली घंटियाँ जो रथ की हर्कत से बजती रहती हैं जिससे राहगीर ख़बरदार होकर रास्ते से एक तरफ हो जाते हैं।

टमटम (स्त्री) योरपियन साख़्त की दो सवारियों की हल्की और खूबसूरत वज़अ की घोड़ा गाड़ी उसके ऊपर साए के लिए गाड़ी के लायक़ एक खूबसूरत सा खुलता बंदा होता टोप भी होता है।

चित्र टमटम

टोप (पु0) अंग्रेज़ी लफ़्ज़ टोप का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ जिससे मुराद गाड़ी के ऊपर की छतरी जो गाड़ी पर साया किये रहे और बवक़्त जुरूरत इसको खोला या बंद किया जा सके। **उतारना, चढ़ाना** के साथ बोला जाता है।

टटेरी (स्त्री) देखें दुम्कल और तोलन।

टिकानी (स्त्री) देखें तोलन।

टेक्वा (पु0) देखें तोलन।

ठिकानी (स्त्री) बैलगाड़ी या छकड़े की फड़ के पिछले सिरों पर आड़ी जड़ी हुई पट्टी जिसपर गाड़ी या छकड़े की सतह बनाई जाती है और पत्ते के साथ लकड़ियों को उससे बाँधा जाता है।

ठोकर (स्त्री) गाड़ी पर चढ़ने को पैर टिकाने का क़दम्चा जो गाड़ी की हैसियत से मुख़्तलिफ़ वज़अ का होता है और गाड़ी पर सवार होने के लिए सीढ़ी का काम देता है। **देखें** टमटम और फिटन।

पायदान ( ) देखें ठोकर।

ठीबी (स्त्री) बग़ैर कमानी वाली गाड़ी या ठेले में धुरे पर लगी हुई चोबी टेकन जो गाड़ी के ढाँचे को धुरे से ऊँचा रखने को हस्बे जुरूरत ऊँची लगायी जाती है। **देखें** कमानी।

ठेला (पु0) हाथ से धकेलकर ले जाने वाली मुस्ततील शक्ल के तहत की वज़अ की बिल्कुल खुली हुई बारबरदारी की गाड़ी इसकी छोटी क़िस्म को हाथ से धकेलकर ले जाते हैं और बड़ी क़िस्म में हस्बेजुरूरत एक या दो बैल जोते जाते हैं बड़ी और वज़नी अश्या इसके ज़रीए

एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाई जाती है इस मख़सूस वज़अ़ के लिए ठेले के लफ़्ज़ सिर्फ़ शिमाली हिंद में बोला जाता है। **देखें** भारकस।

ठेलन (स्त्री) थोड़ा और हल्का सामान ले जाने का छोटा ठेला जिसको एक आदमी खींचकर या धकेलकर ले जाये। धकेलकर ले जाने की वजह से बाज़ मुक़ामात पर धकेल भीं कहलाता है और हाथ ठेला भी कहलाता है। **देखें** भारकस।

जूआ (पु0) बैलगाड़ी की फड़ यानी बम के सिरे पर लगी हुई आड़ी लकड़ी जिसके नीचे बैलों की गर्दन रहती है। गाड़ी खींचने वाले बैलों की गर्दन पर रखी जाने वाली मोटी और वज़नी लकड़ी जिसके सहारे वह गाड़ी खींचते हैं। **़रखना** बैल को जुए के नीचे लगाना या जोतना। **़लगाना** जुए को बम के साथ जोड़ना। **़डालना** बैल का जुए को कंधे या गर्दन से निकाल देना, हिम्मत हार जाना।

जंत (पु0) अंग्रेजी लफ़्ज़ ज्वाइंट का उर्दू तलफ्फुज़। इस्तिलाह में बैल गाड़ी के पहियों की टिकानी और पैंदनी का रस्सी का बंधन मुराद ली जाती है।

जोत्ना (पु0) छकड़े के पाखों की चोबी थूनी या थूनियाँ जिनके सिरों पर बल्लियाँ जड़ी होती हैं।

जोड़ी (स्त्री) घोड़ों या बैलों की जोड़ी। जो गाड़ी में साथ जोतने के लिए सधाए जायें। मुख़्तस्रन उस गाड़ी से मुराद ली जाती है जिसमें दो घोड़े जुते हुये हों और चार घोड़ों की चौकड़ी कहलाती है। **प्रयोग** हकीम साहब रोज़ाना शाम के वक़्त जोड़ी में सवार होकर हवा खोरी को जाया करते थे। **2** वायसराय चौकड़ी में सवार होकर दरबार में आये।

दो बल्दी (स्त्री) वह गाड़ी या छकड़ा जिसमें दो बैल जुते हों और जिसमें चार बैल हों चौबल्दी कहलाती है।

झुनी/झुनिया (स्त्री) देखें अर्रा।

झाँज (पु0) बैली और रथ की निशस्त के नीचे दोनों सिरों पर लटकती लगी हुई पीतली गित्तों की झालर जो गाड़ी की हरकत से बजती रहती है। जिससे आगे जाने वाले ख़बरदार होते हैं।

झाँद/छाँद (स्त्री) देखें भौंरा।

झब्बू (पु0) देखें भाग एक पृ0 47।

झटका (पु0) देखें इक्का।

झिलमिली (स्त्री) बग्गी की खिड़की का झिलमिलीदार बना हुआ पट। **देखें** भाग एक पृ0 58।

झोक/झोंक (स्त्री) बैलगाड़ी या छकड़े के बग़ली पाखों के संभाल की आड़ या अड़वाड़ जो उनको बाहर की तरफ झुकने से रोके।

झेलन (स्त्री) देखें दुमकल।

चाबुक दानी (स्त्री) घोड़ा गाड़ी में चाबुक खड़ा करने या टिकाने को कोचवान के क़रीब लगा हुआ नल्वा जिसमें चाबुक खड़ा कर दिया जाता है।

चाबी (स्त्री) देखें धुर किल्ली।

चाक (पु0) देखें पहिया।

चुटकी (स्त्री) देखें ''ना''

चरट (स्त्री) अंग्रेजी लफ़्ज़ चैरीअट का उर्दू तलफ़्फ़ुज़। रथ की क़िस्म की खुशवज़अ़ गाड़ी जो सरदारों के लायक़ हो।

चिड़िया (स्त्री) देखें बिछुवा।

चकरी/चक्कर (स्त्री/पु0) चौपहिया गाड़ी में अगले पहियों के धुरे के साथ लगा हुआ आहनी चक्कर जिस पर गाड़ी के ढाँचे का अगला हिस्सा या फड़ का सिरा एक कीले के ज़रिये जिसको फड़ कीली कहते हैं, जोड़ दिया जाता है। जिसकी वजह से अगले पहिये आसानी से दाये या बायें रुख़ फेरे जा सकते हैं और गाड़ी उनके साथ घूमती है। इस चक्कर के ऊपर के हिस्से को चाकड़ी और नीचे के हिस्से को **दसी** कहते हैं।

चकौल/चकेल (स्त्री) देखें धुर किल्ली।

चलौना (पु0) गाड़ी के पहिये को घुमाने वाला चोबी दस्ता जैसे मोटर का हैंडिल जिससे पहिया घुमाया जाता है।

चिमटा (पु0) बाइसकल के पहिये की पकड़ रखने वाला दो शाख़ा जिसके खुले हुये सिरों या शाख़ों के मुंह में पत्ते की धुरी के सिरे रहते हैं।

चंदवी (स्त्री) छकड़े की फड़ के पाखों के सिरों पर तूल में पड़ी हुई बल्ली। **देखें** छकड़ा।

चंग (पु0) बड़ा और वज़नी घुंगरू जो रथ या बैल की बम के नीचे बंधा और गाड़ी की हरकत से हिलता और बजता रहता है जिससे राह चलने वाले ख़बरदार होकर गाड़ी के सामने से हट जाते हैं। डंगा चंग के बीच का लटकन जिसके टकराने से आवाज़ होती है। **देखें** रथ।

चुंगी (स्त्री) देखें आवन।

चौअर्रा पहिया (पु0) वह पहिया जिसमें सिर्फ़ चार जोड़ीदार अर्रे आमने सामने बिल्कुल खड़े लगाये जाते हैं। **देखें** पहिया।

चौबल्दी (स्त्री) देखें जोड़ी।

चौपहिया (स्त्री) चार पहियों की गाड़ी।

चौकड़ी (स्त्री) देखें जोड़ी।

चैंदी (स्त्री) पहिये की 'ना' के मुंह पर तवे की हिफ़ाज़त को लगाया हुआ चिरमी हल्का। अंग्रेज़ी वाशर।

चीस (स्त्री) फ़ारसी लफ़्ज़ चीन बमानी शिकन का इस्तिलाही तलफ्फुज़, पहिये की हाल (आहनी पट्टा) पर रबड़ के पट्टे के किनारे फँसाने को उभरवाँ बनी हुई कोरें।

छाज (पु0) घोड़ा गाड़ी में गाड़ी हाँकने वाले के पैर रखने की जगह के सामने की आड़ जो परदे के तौर पर बनी होती है। **देखें** फिटन।

छाँद/छाँदा (पु0) देखें भौंरा।

छाहन (स्त्री) बैल गाड़ी की सतह जो फड़ पर बाँस की खपच्चियाँ जड़ कर बना दी जाती है।

छकड़ा (पु0) बहुत वज़नी और बड़ा सामान लादने की लम्बी चौड़ी छः बैलों के खींचने की बारबरदारी की गाड़ी जो किसी ज़माने में फौजी जुरूरत के लिए इस्तेमाल की जाती होगी लेकिन अब यह नाम क़दीम वज़अ़ की बनी हुई लम्बी ऊँची और भारी सुस्त रफ़्तार दो पहिया लद्दू बैल गाड़ी के लिए जिसमें ज़ियादा सामान लादा जाए मख़्सूस हो गया है इसमें हस्बेजुरूरत दो से चार बैल जोते जाते हैं और आमतौर से क़स्बात की ज़रअ़ी पैदावार शहरों में पहुँचाने के काम आती हैं।

चित्र छकड़ा।

छकड़ी (स्त्री) छकड़े का इस्मे मुसग्गर। छकड़े की शक्ल की मामूली सामान ढोने की छोटी सी गाड़ी। **देखें** छकड़ा।

ख़ाकमदाज (पु0) ख़ाक अंदाज़ का गँवारी तलफ़्फुज़ चलती गाड़ी के पहियों से उड़ती हुई कीचड़ की रोक के लिए पहिये के दोर के ऊपर लगी हुई आड़। **देखें** कान।

पगलाव ( ) देखें ख़ब्बत।

ख़ब्बत (स्त्री) अरबी लफ़्ज़ खुब्न बमानी जामा के दामन का चढ़ा या सिलाई, गाड़ीबानों की इस्तिलाह में वह रस्सी कहलाती है जो धुरे की सहारने वाली लकड़ियों को गाड़ी की फड़ से बाँधकर ऊपर को उठाए रहे।

खंजरी (स्त्री) पहिये के मरकज़ी हिस्से के मुंह पर खूबसूरती और मज़बूती के लिए किसी चमकदार धात का लगा हुआ हल्का।

ख़्वासी (स्त्री) बग्गी या किसी गाड़ी के पीछे गाड़ी के निगेहबान या ख़ादिम के बैठने को बनी हुई जगह। **देखें** फिटन।

दबाऊ (पु0) उलाँग के मुक़ाबले में दूसरी सूरत दबाऊ है जिसमें गाड़ी का वज़न आगे की तरफ ज़ियादा हो जाता है और गाड़ी चलने में सामने के रुख़ झुकी रहती है इस हालत में गाड़ी खींचने वाले जानवर की कमर और कंधों पर ज़ियादा बोझ पड़ता है। **प्रयोग** आगे की तरफ बोझ ज़ियादा होने से गाड़ी दबाऊ हो जायेगी।

नोट शुरू में इसकी इंट्री की गई है। वहाँ से पेस्ट करें।

दसी/दासी (स्त्री) देखें चकरी और फड़।

दुमकल (स्त्री) गाड़ी के पहिये को ज़मीन से ऊधर उठा लेने वाली ज़दीद ईजाद कल।

दंतौला (पु0) सवारी या बारबरदारी की गाड़ी के पीछे ज़रूरी सामान लादने को बतौर मचान बनी हुई मुख़्तसर जगह। **देखें** बैली।

पिछौतिया ( ) देखें दंतौला।

पछलकडा ( ) देखें दंतौला।

पैड़ा ( ) देखें दंतौला।

मकड़ा ( ) देखें दंतौला।

दंदेली (स्त्री) ढाल पर गाड़ी की रफ़्तार को कम करने या बंद करने का अडंगा जो लोहे या लकड़ी का गुटका होता है और पहिये से मिला हुआ लगा रहता है।

दो बल्दी (स्त्री) देखें जोड़ी।

दो पहिया (पु0) सवारी या बारबरदारी की वह गाड़ी जिसमें सिर्फ दो पहिये हों।

धारा/धारे (पु0) बैली या इक्के के पिछौतिये पर जड़े हुये चोबी डंडे जिससे पिछला खुला हिस्सा ढक जाता है। **देखें** बैली और इक्का।

धुरा (पु0) आहनी या चोबी डंडा जिसपर गाड़ी का ढाँचा जमाया जाता है और उसके सिरों पर पहिये लगाकर गाड़ी को चलता किया जाता है। **लगाना, चढ़ाना, डालना** के साथ बोला जाता है।

जो और की तोड़े धुरी
उसका भी टूटे है धुरा।। (नज़ीर)

धुर किल्ली (स्त्री) धुरे के मुंह पर लगी हुई कील या कीला जो पहिये को धुरे के मुंह पर रोके रहे और बाहर न निकलने दे। **देखें** धुरा।

धुरी (स्त्री) धुरे का इस्मे मुसग़्ग़र। **देखें** अर्रा।

धकेल (स्त्री) हाथ ठेला। **देखें** ठेला और ठेलन।

धमाका (पु0) एक ख़ास क़िस्म की कमानी जिसमें गाड़ी का पिछला हिस्सा चमड़े के मज़बूत तस्मों से बंधा धुरे से इधर रहता है। जिसकी वजह से गाड़ी में सवारी को झटके और हिचकोले कम लगते हैं। **देखें** टमटम।

धौ/धौक (पु0) क़ौसनुमा मुड़ी हुई आहनी पट्टी जो ताँगे या इसी क़िस्म की भारी सवारी गाड़ियों में उसका वज़न संभालने को अगले और पिछले हिस्से के नीचे लगी रहती है और धुरे पर से गाड़ी के बोझ को कम कर देती है। **2** पहिये का आहनी पट्टा या हाल। **उतरना, चढ़ना** के साथ बोला जाता है।

देखें कमानी और हाल।

धौकरी (स्त्री0) धौक का इस्मे मुसग़्ग़र।

ढिबिया (स्त्री) पत्ते के मरकज़ी हिस्से के मुंह को बंद रखने वाला ढकना। **देखें** खंजरी।

ढाँगा (पु0) देखें ताँगा।

ढई/ढ़ई (स्त्री) उर्दू रोजमर्रा में ढ़ई देना के माने किसी चीज़ पर पूरे तौर से टिक जाना या बोझ डाल देना होता है। गाड़ीबानी की इस्तिलाह उस टेके को कहते हैं जो दो पहिया गाड़ी को सीधा खड़ा रखने को उसकी बम के नीचे लगा दी जाये यह टेका हस्बेज़रुरत मुख़्तलिफ़ शक्ल का बनाया जाता है। **देखें** उठाउनी।

ढ़ाँच/ढ़ाँचा (पु0) गाड़ी की फड़ जो धुरे पर क़ाइम की जाती है और जिसपर गाड़ी का ऊपर का पूरा हिस्सा बनाया जाता है।

रब्बा/रब्बड़ी (पु0) अरबी लफ़्ज़ अराबा का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। हल्की छोटी दो पहिया बैलगाड़ी, आमतौर से बंडी, खाचर या छकड़ी कहलाती है।

रथ (स्त्री) सरदारों की सवारी हल्की और खूबसूरत बनी हुई क़दीम वज़अ़ की चौपहिया बैलगाड़ी जिसपर साये के लिए बुर्जी की शक्ल की छत होती है। इस्तिलाह में बंगला कहलाती है। नौ ईजाद गाड़ियों ने उसको क़रीब क़रीब मअदूम कर दिया है।

चित्र रथ

रकाब (स्त्री) कमानी के पलड़ों को कसा रखने वाला आहनी हल्क़ा। **2** बाइसकल का पाअंदाज़ (पैडल)। **देखें** कमानी और चिमटा।

रिक्शा (स्त्री) देखें धकेल।

रहडू/रहलू (पु0) संस्कृत रहकला। फौजी जुरुरत की छकड़ी की क़िस्म की बारबरदारी की गाड़ी। **देखें** छकड़ी।

रह्कला (स्त्री) देखें रहड़।

डंगा (पु0) देखें चंग।

साल (पु0) देखें अर्रा।

सँगी (स्त्री) देखें बाउँगी।

साई (स्त्री) देखें छाहन।

सियाऊ (स्त्री) सह पाई का गवाँरू तलफ़्फ़ुज़ और तिपाई का दूसरा नाम दो पहिया गाड़ी को खड़ा रखने को उसकी बम के नीचे लगाने का तीन टाँग का टेकन। **देखें** उठाउनी।

सिधवाई (स्त्री) गाड़ी को जबकि उससे घोड़े या बैल को खोल दिया यानी अलाहिदा कर लिया जाये। सीधा सँभले रखने वाली आड़ या टेकन जो उसको साधे यानी उसके वज़न को तोले रहे। **देखें** उठाउनी।

सुर्ता (पु0) देखें सुर्सा।

सुर्सा (पु0) बग़ैर फुल्ली की यानी दो मोटी कील जिसमें दोनों तरफ नुकीले सिरे हों। गाड़ी बानों की इस्तिलाह में ऐसी कील को कहते हैं जिसका एक सिरा गाड़ी की फड़ में टिका होता है और बाहर निकला हुआ दूसरा सिरा मुंड यानी बग़ैर फुल्ली का होता है जिसमें पहिये की रोक के डंडे का कुंडा फँसा दिया जाता है।

सुर सुरी (स्त्री) सुर्से का इस्मे मुसग्गर।

सरसलक जोड़ (स्त्री) गाड़ी में एक के पीछे एक जुते हुए घोड़े या बैल की जोड़ी।

सवारी (स्त्री) जानवर या गाड़ी जिसपर इंसान बैठकर एक मुक़ाम से दूसरे मुक़ाम को जाये। **2** सवारी करेन वाला शख़्स। **प्रयोग** आजकल मेरे पास कोई सवारी नहीं है। **2** इक्के में तीन सवारियों से ज़ियादा नहीं बैठ सकतीं।

सवारी गाड़ी (स्त्री) वह गाड़ी जो सिर्फ सवारी के लिए मख़्सूस हो और बारबरदारी के काम न आये।

सूजा (पु0) सुर्से का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। असल लफ़्ज़ सुर्ता या पेशा नज्जारी में सुर्सा बढ़इयों की एक ख़ास इस्तिलाह हो गयी और गाड़ी बानी में इसका तलफ़्फ़ुज़ सूजा हो गया।

सौल (पु0) लफ़्ज़ साल बमानी सूराख़ का गलत तलफ्फ़ुज़। गाड़ी बानी की इस्तिलाह में जुए के बीच के सूराख़ को कहते हैं जो बम को जुए के साथ एक कीले के ज़रिये जोड़ देने को बनाया जाता है।

सूल (पु0) हिन्दी लफ़्ज़ बमानी काँटा। गाड़ी बानी की इस्तिलाह में उस आहनी या पीतली आँकड़े को कहते हैं जो जूए के बीच में ऊपर के रुख़ बैल के गले के जोत अटकाने को लगा होता है।

सेरू (पु0) सैर्वे का दूसरा तलफ़्फ़ुज़। गाड़ी बानी की इस्तिलाह में गाड़ी की फड़ (बम) के पुश्तीदान यानी अर्ज़ में जड़ी हुई पट्टियों की आखिरी पट्टी को कहते हैं। **देखें** फड़।

सेल/सेला (स्त्री) जूए के सिरों के नीचे बालिश्त सवा बालिश्त लम्बी लगी हुई खूटियाँ जो बैल की गर्दन को जूए से बाहर नहीं निकलने देती और जूए के नीचे रोके रखती है। **देखें** जूआ।

सेमल/सेम्हल (स्त्री) संभाल का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। जुए के सिरों पर नीचे के रुख खड़ी जड़ी हुई बालिश्त सवा बालिश्त लम्बी खूँटियाँ जो जुए को बैल की गर्दन पर सँभाले रहती है। बाज़ गाड़ीबान इन खूँटियों को **सेल** या **सेला** के नाम से मौसूम करते हैं। **देखें** सेल।

शिकरम (स्त्री) बग्गी की वज़अ़ की बंद गाड़ी जो आमतौर से औरतों के लिए मखसूस है। यह एक क़िस्म की बैलगाड़ी है हलकी और छोटी क़िस्म में एक बैल, बड़ी और भारी में दो बैल जोते जाते हैं। मुमकिन है कि किसी ज़माने में घोड़े भी जोते जाते हों। शिकरम इहाता–ए मद्रास की इस्तिलाह है। शिमाली हिन्द में यह लफ़्ज नहीं बोला जाता इस वज़अ़ की गाड़ी को उस तरफ करॉंची कहते हैं। जो ऊँट गाड़ी के लिए मख़सूस है। मद्रासियों की इस्तिलाह में लफ़्ज शिकरमपो तेज़ रौ के मानो मे है और मुराद तेज रौ गाड़ी होती है। जो चार पहियों वाली बड़ी पालकी की शक्ल की बनाई जाती है। मद्रास और नवाहे मद्रास में इसका चलन आम है। रियासत हैदराबाद (दकन) में अब तक पर्दानशीन औरतों की सवारी के लिए मख़सूस और शिकरम के नाम से मौसूम की जाती है।

चित्र शिकरम

शुगनी (स्त्री) जुए की पेशानी पर जड़ी हुई किसी परिंद की मूरत जो नज़रे बद से बचाने के लिए शगून के लिए लगाई जाती है।

फ़िटन (स्त्री) योरपियन वज़अ़ की चौ पहिया टोपदार गाड़ी जिसका टोप छतरी की तरह खुलने बंद होने वाला होता है और हस्बेज़रूरत चढ़ाया उतारा जा सकता है।

चित्र फ़िटन

कान (पु0) गाड़ी के पहियों से उड़ने वाली कीचड़ से बचाव की आड़। **देखें** ख़ाकमदाज।

कराँची (स्त्री) पुर्तगाली लफ़्ज़ कार वेगन का उर्दू तलफ़्फ़ुज़। शिक्रम की क़िस्म की गाड़ी। शिमाली हिन्द में ऊँट गाड़ी को भी कहते हैं ख़ास देहली में कूड़ा और मैला उठाने की गाड़ी को कराँची कहते हैं। जो चारों तरफ़ से बंद और ऊपर से खुली होती है।

किराये की गाड़ी वह सवारी या बारबरदारी की गाड़ी जो किराये पर चलाई जाये।

किलौटिया (पु0) कील का इस्मे मुसग़्ग़र। गाड़ी की फड़ (बम) की पतली पट्टियों में जड़ी जाने वाली ख़ास किस्म की बनी हुई छोटी कील या कीलें।

किलौंडा (पु0) किलाबे का गँवारू तलफ़्फ़ुज़ मुराद रस्सी जो गाड़ी की फड़ से पत्ते की लकड़ियों को बाँधे।

कमानी (स्त्री) गाड़ी के झटके संभालने की क़ौसनुमा आहनी पट्टी जो धुरे और गाड़ी के ढाँचे के बीच में धुरे के ऊपर जड़ी रहती है और गाड़ी के झटके के साथ दबती और उभरती है।

कमंगर (पु0) गाड़ियों की रंगाई का काम करने वाला कारीगर। किसी ज़माने में फौजियों की कमानों को बनाने और दुरुस्त करने वाले को कहते हैं ये हालात के बदलने से अब यह लफ़्ज़ पूरब में लकड़ी का सामान (असबाब और गाड़ियाँ) रंगने वालों के लिए बोला जाने लगा है। असल कमाँगर है।

कुंड/कुंडली (स्त्री) देखें ''ना''

कवाँस (पु0) गाड़ी के नीचे घास, चारा वग़ैरह रखने को बनी हुई जाली।

कोच बख़्श/कोच बक्स (पु0) अंग्रेज़ी लफ़्ज़ कोच बक्स का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। बग्गी या शिक्रम में कोचवान के बैठने को बनी जगह। **देखें** फ़िटन।

कौली (स्त्री) इक्के और बैली की छतरी के डंडो को सीधा और अपनी जगह क़ायम रखने वाली रस्सी की ताने (तनाबे) और उस चोबी गुटके को भी कहते हैं जो डंडे के सिरे और तान के बीच में फँसा दिया जाता है।

खाचर (स्त्री) छकड़े की क़िस्म की छोटी और हलकी बैल गाड़ी को वस्त हिन्द के क़स्बात में खाचर कहते हैं।

खाँदन (स्त्री) ''ना'' यानी पहिये के मरकज़ी हिस्से के सामने के अंदर का आहनी हलक़ा या वाशर

खुली गाड़ी (स्त्री) वह गाड़ी जिस पर धूप और बारिश के बचाव के लिए छत या टोप न हो।

गाटा (पु0) बैल के गले का जोत यानी चमड़े का पट्टा जिससे बैल की गर्दन को जूए के साथ बाँध दिया जाता है। 2 मुचेड़े का दरमियानी हिस्सा जिसमें बैल की गर्दन रहती है। **देखें** मुचेड़ा और जूआ।

गाड़ी (स्त्री) पहियों वाली सवारी या सवारियाँ जिनको किसी ज़रिए से खींच या धकेलकर चलाया जाये। . . . . . **जोतना** और **जोड़ना** गाड़ी को चलाने के लिए बैल या घोड़े से बाँधना। **हाँकना** गाड़ी को बैल या घोड़े से खिंचवाना।

गाड़ी बान/गाड़ी वान ( ) गाड़ी का निगेहबान या चलाने वाला शख़्स। यह लफ़्ज़ सिर्फ़ बैलगाड़ी हाँकने वाले के लिए बोला जाता है। घोड़ा गाड़ी हाँकने वाले को कोचवान कहते हैं।

गामीपत्ती (स्त्री) बैलगाड़ी की फड़ (बम) के ऊपर मज़बूती को जड़ी हुई लम्बी आहनी पत्ती। फ़ारसी लफ़्ज़ गाय से यह इस्तिलाह बन गई।

गद्दी (स्त्री) बाइसकल का ज़ीन जिसपर सवार बैठता है।

गदैड़ा (पु0) गदैले का गँवारू तलफ़्फ़ुज़ और गद्दे का इस्मे मुसग्गर गाड़ीबानों की इस्तिलाह में उन चमड़ा चढ़े हुये बाँसों को कहते हैं। जो बैलगाड़ी की फड़ (बम) की बग़लियों में बैलों को फड़ की रगड़ से बचाने को लगाये जाते हैं। 1 बैलों के पुट्ठों की हिफाज़त के उन गुदगुदे बने हुये बाँसों को बाज़ मुक़ामात पर थाप नसौरी कहते हैं।

गदैड़ी/गधेड़ी (स्त्री) गद्दे का इस्मे मुसग़्गर (गँवारी तलफ़्फ़ुज़) बैल के गले का गद्दी की तरह नर्म बना हुआ पट्टा जो बतौर जोत उसके गले में बाँधा जाता है।

गर्द ख़ोरा (पु0) गाड़ी के पीछे लगा हुआ पर्दा जो चलती गाड़ी के पीछे उड़ने वाली गर्द को रोके।

गडयारा (पु0) ज़मीन पर गाड़ी के पहियों के चलने का निशान।

गज़ (पु0) देखें अर्रा।

गलताड़ (स्त्री) देखें सैल।

गँडूल्ना (पु0) बच्चों को पैरों चलना सिखाने की छोटे चौकटे की शक्ल की बनी हुई धकेल।

चित्र

गूँजा (पु0) धुरे के सिरों की टेक यानी पहिये की ''ना'' की हद का हिस्सा छोड़कर धुरे का उभरा हुआ चक्कर जिस पर ''ना'' का अंदर का मुँह टिकता है। (गूँज बमानी घुँडी का इसमे मुकब्बर) **देखें** धुरा।

खटा टोप (पु0) गाड़ी का ग़िलाफ जो उसको सब तरफ से ढक ले और ख़ाक, धूल से बचाये।

घर की गाड़ी खानगी इस्तेमाल की गाड़ी यानी मालिक की जाती सवारी के इस्तेमाल की।

घोड़ा गाड़ी (स्त्री) घोड़ों के खींचने की गाड़ी यानी जो घोड़ो के खींचने के लिए मख़सूस हो।

लट्ठा (पु0) देखें भौंरा।

लहड़ा (पु0) भारी और भद्दी वज़अ़ का मामूली सामान ढोने का छकड़ा। **देखें** छकड़ा।

लहड़ूआ (पु0) रहडू का दूसरा तलफ़्फ़ुज़ और उसका इस्मे मुसग्गर। **देखें** रहडू और छकड़ा।

लीक/लीख (स्त्री) देखें गड़यारा।

लैंडो (स्त्री) योरपियन साख्त की चौपहिया घोड़ा गाड़ी हौदे की वज़अ़ की चार निशस्तों की होती है इसका टोप दो तरफा होता है और हस्बे जुरूरत चढ़ाया और उतारा जा सकता है। दोनों तरफ का टोप चढ़ाने से उसकी शक्लबंद गाड़ी की सी हो जाती है।

मालगाड़ी (स्त्री) सामान या असबाब ढोने की गाड़ी। बारबरदारी की गाड़ी।

माँचा/माँझा (पु0) मचान का दूसरा गँवारू तलफ़्फ़ुज़। बैल गाड़ी (बैली) की फड़ (बम) के ऊपर सामान के रखने की बनी हुई जगह जो फड़ के दोनों तरफ थूनिया जड़ कर उन में बाँसों का जाल बाँध कर बना ली जाती है जुरूरत के वक़्त इसमें सवारियाँ जाल बाँध कर बना ली जाती है जुरूरत के वक़्त इसमे सवारियाँ भी बैठ जाती हैं। **बाँधना** के साथ बोला जाता है। **देखें** बैली।

माँची/माँढी (स्त्री) माँचे का इस्मे मुसग्गर। **देखें** माँचा।

माखर/माख्रा (पु0) छकड़े की फड़ (ढाँचा) के बीच में एक मज़बूत और मोटी लकड़ी की जड़ी हुई कमर पेटी।

माँगर/मंगर (स्त्री) गाड़ी के पहिये का पुट्ठी की तरफ का रुख़ जिसपर हाल यानी आहनी पट्टा चढ़ाया जाता है।

मड़वा (पु0) देखें महेरी।

मुचैड़ा (पु0) मुंह चढ़ा का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। चौकटे की शक्ल का बना हुआ जूआ जो जूआ फेकू या हिम्मत हारू बैलों के गले में डाला जाता है ताकि मशक़्क़त के वक़्त और चढ़ाई के मौक़े पर जूआ उनके गर्दन से ना निकले। **देखें** जूआ।

मछ पट्टी (स्त्री) देखें माखर।

मस्सा/मस्से ( ) घोड़ा गाड़ी की बम के अगले सिरों की बगलियों में साज़ के हलके फँसाने की पीतली घुंडी या घुंडियाँ। **देखें** बम।

मकड़ा (पु0) देखें दंतौला।

मँझोली (स्त्री) देखें बेली।

मोटर (स्त्री) ज़दीद ईजाद इंजन से चलने वाली गाड़ी जिसमें सिवाय पंखे और इंजन के बाक़ी कुल हिस्से, क़दीम गाड़ियों के हुसूल की मानिंद किसी क़दर तरक्की याफ़ता शक्ल के होते हैं उन सब के लिए वही इस्तिलाह इस्तेमाल की जा सकती है जो क़दीम गाड़ियों के हुसूल के लिए बोली जाती है।

मोटर साइकल (स्त्री) इंजन से चलने वाली बाइसकल इसकी भी वही सूरत है जो मोटर की। **देखें** मोटर।

मूठ (स्त्री) बाइसकल का हत्ता जो सवारी के हाथ में रहता है बाइसकल में गियर (चकरी) और फ्रीव्हील दो ऐसे मुर्ज़े हैं जिसके लिए हमारे यहाँ के कारीगर कोई अपनी इस्तिलाह नहीं इस्तेमाल करते।

मुहताली (स्त्री) एक घोड़े की बम के पिछले हिस्से पर जड़े हुये ऐसे आँकड़े जिसमें जोत के सिरे अटकाने के बाद अपने से न निकल सकें इसी वजह से इनका नाम मुहताली रख लिया गया है। ताली कुंजी को कहते हैं। **देखें** आँकड़ा औ बम।

मुहेरी/मुहेली (स्त्री) जूए के सिरों के ऊपर लगे हुए आँकड़े या हुक जिसमें बैल के गले के जोत के सिरे बाँध दिये जाते हैं यह लफ़्ज़ गाड़ीबानों की इस्तिलाह में मुहरे का इस्मे मुसग़्ग़र है। **देखें** जूआ।

ना/नागर (स्त्री) लफ़्ज़ नाल और आँवन नाल का मुख़फ़्फ़ फ़। गाड़ी के पहिये का मर्कज़ी हिस्सा जिसमें धुरे का मुंह डालने को सूराख़ होता है जो उसके बीच में तूला आर–पार नाली की शक्ल का होता है और यही उसकी वजह तस्मिया है। **देखें** धुरा।

नाड़/नाड़ी (स्त्री) बैलगाड़ी के जूए को बम से बाँधने की मज़बूत और मोटी रस्सी, इस रस्सी को छुट्का भी कहते हैं और उसकी वजह तस्मिया यह है कि जूए और बम से अलाहिदा होती है और बवक़्त जुरूरत इस्तेमाल की जाती है।

नागर (स्त्री) गाड़ी के पहिये का मर्कज़ी हिस्सा जिसमें धुरे का मुंह रहता है **देखें** 'ना'।

विक्टोरिया (स्त्री) देखें फ़िटन।

हाथ ठेला (पु0) देखें ठेला और ठेलन।

हाथ गाड़ी (स्त्री) देखें गँडूल्ना।

हाल (स्त्री) गाड़ी के पहिये की पुट्ठी का आहनी पट्टा। **देखें** पहिया।

हब्का (पु0) देखें रकाब।

हत्ता (पु0) देखें मूठ।

हथ टेका (पु0) बग्गी की निशस्त के दोनों तरफ हाथ टिकाने को बनी हुई जगह या तस्मे के झूले जिसमें हाथ डाल लिये जायें यह झूले खिड़कियों से मिले हुये लटकते रहते हैं।

हत खंडा (पु0) गाड़ी की खिड़कियों की झिलमिलियाँ चढ़ाने को हाथ की उंगलियाँ अटकाने को बना हुआ निशान। **देखें** भाग एक पृ0 45।

हत लेवा ( ) देखें हत खंडा।

हत वाँसा/हत वाँसी (पु0/स्त्री) इक्के और बैली की छतरी के डंडों को बाँधने और खींचे रखने वाली रस्सी की तान या बंदिश। **देखें** बैली।

हरस/हर्सा (पु0) देखें फड़।

हौद (स्त्री) आमने सामने की निशस्त वाली गाड़ियों में निशस्तों के बीच में सवारियों के पैर लटकाने की जगह। **देखें** फ़िटन।

परकुल (स्त्री) देखें बम।

2 पेशा ए हम्माली

अटाला (पु0) बेमेल और बेतरतीब ऊपर तले बे तौर रखा हुआ असबाब बारबरदारी जिसको सर या कमर पर उठाना और ले जाना हम्माल के लिए मुश्किल हो। अटाला लफ़्ज़ अटना से बनाया गया है और हम्मालों की खास इस्तिलाह है।

उड़न पर्दा/उड़ान पर्दा (पु0) कहारों की इस्तिलाह। पालकी या डोली का पर्दा जो बवक़्त जुरुरत पूरा या उसका कुछ हिस्सा उठा दिया जाये, यानी छतरी पर उलट दिया जाये। कहारों की इस्तिलाह।

उक्रवा (पु0) हम्मालों का एक क़िस्म का थैला जिसमें वह सामान भरकर सर या कमर पर उठाते हैं। **देखें** खुर्ज़ी।

एँडवा (पु0) हम्मालों के सर पर बोझ के नीचे रखने की गुंडलीनुमा बनी हुई चीज़ जिसपर चंदिय से अलग बोझ टिका रहे और चंदिया बोझ की रगड़ न लगे। बाज़ हम्माल ज़ुरूरत के वक़्त कपड़े को मोड़कर सर पर रख लेते हैं और उस पर बोझ टिका लेते हैं बाज़ मुस्तक़िल तौर पर किसी चीज़ की बना लेते हैं।

कहावत गंजी पनहारी गोखरू का एँडवा।

चित्र ईंडवा

एँडवा (स्त्री) एँडवे का इस्मे मुसग्गर।

बखरा (पु0) देखें गाची।

बोझ (पु0) वज़नी अश्या, बोझल सामान जिसको मज़दूर सर या कमर पर उठाकर या गाड़ी में लादकर एक जगह से दूसरी जगह ले जायें। **उतारना, उठाना** के साथ बोला जाता है।

बूचा/बूजा (पु0) हम्मालों के उठाने की तामझाम की क़िस्म की सवारी। **देखें** तामझाम।

बोरा (पु0) देखें पल्ला और थैला।

बोरी (स्त्री) बोरी का इस्मेमुसग़्ग़र। **देखें** बोरा।

बहँगी/बैंगी (स्त्री) हम्मालों के बोझ उठाने की झोली जिसमें सामान भरकर बाँस या लकड़ी के सिरे पर छींके की तरह लटकाकर लकड़ी को कंधे पर रख लेते हैं और वज़न को तौलने या बराबर करने के लिए उतने ही वज़न की एक दूसरी झोली दूसरे सिरे पर बाँध देते हैं। जिससे उसकी मजमूई हैयत कंधे पर लटकी हुई तराजू की सी हो जाती है। **उठाना, खाली करना** के साथ बोला जाता है। **डालना** बहँगी का सामान खाली कर देना या उतार देना।

बहँगीला (पु0) ज़ियादा सामान उठाने की बड़ी बहँगी।

बहँगी वाला (पु0) बहँगी उठाने वाला मज़दूर।

बहँगीदार ( ) देखें बहँगीवाला।

बहीर (पु0) हम्मालों या मज़दूरों का गिरोह, यह लफ़्ज़ फौजी शर्गिद पेशों के लिए बोला जाता है जो फौज के पीछे सामान की बारबरदारी और उसी किस्म के दूसरे काम करते हैं।

फौज और बहीर दोनों फिरती हैं बेसरी से।
गोया अमीरे लश्कर मारा गया है रन में।।(हाली)

बैसाकी/बैसाखी (स्त्री) कहारों की लकड़ी जो डोली या पीनस उठाते वक़्त वह हाथ में रखते हैं और कंघा बदलते वक़्त डोली या पालकी का डंडा उस पर टिका लेते हैं। पालकी, पीनस वगैरह का टेका जो कहार अपने हाथ में रखते हैं। **देखें** डोली और भाग एक पृ0 11।

भाड़ा (पु0) संस्कृत भाटा बमानी किराया। **देखें** पेशा गाड़ी पृ0।

भोई (पु0) सवारी उठाने और बारबरदारी का काम करने वाला मज़दूर। दखनी हिन्दुओं के एक फिरक़े का नाम है जो आमतौर से मज़दूर पेशा है और उस तरफ उसी नाम से पुकारा जाता है शिमाली हिन्द में जो काम कहार करते हैं जुनूबी हिन्द में वही काम भोई ज़ात के लोग करते हैं कहारों की तरह यह लोग भी मुसलमानों के यहाँ का खाना नहीं खाते मगर ख़िदमत सब क़िस्म की करते हैं।

पाल्की (स्त्री) पीनस, पाली ज़बान के लफ़्ज़ पालंगकी का उर्दू तलफ़्फ़ुज़। हिन्दी में पाल ऐसे छोटे खेमे को कहते हैं जो चारों तरफ से क़ानात से घिरा हुआ हो। इस्तिलाहे आम में मुस्तत़ील शक्ल की छतदार सवारी के लिए जिसको मज़दूर कंधों पर उठाकर एक जगह से दूसरी जगह ले जा सकें बोला जाने लगा है किसी ज़माने में बंगाल और दकन में यह सवारी बहुत पसंद थी। अब देहली लखनऊ वगैरह में शादी बियाह के मौक़े पर दुलहनों की सवारी के लिए कहीं कहीं इस्तेमाल की जाती है और बरायनाम बाक़ी है।

चित्र पाल्की

पर्तल/पर्तला (पु0) बोझ बाँधने का हम्माल का कपड़ा या थैला जिसमें उठाने और ले जाने के लायक़ ज़ुरूरी चीज़ बाँध सके।

पड़तल/पड़तला ( ) देखें पर्तल और पर्तला।

पल्ला (पु0) उर्दू में लफ़्ज़ पल्ला कई मानों में इस्तेमाल होता है पेशावरों में भी उसके मुख्तलिफ़ माने लिए जाते हैं लेकिन सबमें एक मुश्तरक मफ़हूम फैलाव और वुस्अ़त का पाया जाता है हम्मालों की इस्तिलाह में लम्बी चौड़ी और मज़बूत चादर को कहते हैं जिसमें मज़दूर (हम्माल) के उठाने के लायक़ बोझ बाँध लिया जाये। 1 दकन में खुले मुंह के बड़े थैले को पल्ला कहते हैं जिसमें ढाई तीन मन वज़न भरा जा सके। शिमाली हिन्द में बोरा और छोटा बोरी कहलाता है उर्दू अदब में पल्ला भारी होना एक मुहावरा है। **फैलाना** सामान भरने को पल्ला खोलकर सामने करना। **उठाना** सामान भरे हुये पल्ले को किसी जगह ले जाने के लिए सर या कमर पर उठाना। **डालना, खाली करना** पल्ले में भरा या बंधा हुआ सामान निकाल देना या उलट देना।

पल्लेदार (पु0) पल्ला रखने वाला मज़दूर या हम्माल। यह लफ़्ज़ आम तौर से गल्ला उठाने और एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाने वाले मज़दूरों के लिए हर जगह अनाज की मंडियों में बोला जाता है।

पल्लेवाला ( ) देखें पल्लेदार।

पुंजा (पु0) देखें अकरवा।

पीनस (स्त्री) शिमाली हिन्द और खुसूसन देहली में पाल्की को पीनस कहते हैं। जो फिरंगियों की आमद से बोला जाने लगा है और अंग्रेजी लफ़्ज़ का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ बन गया है। **देखें** पालकी।

तामझाम (पु0) पालकी की क़िस्म की सवारी जो ऊपर से खुली यानी बग़ैर छत की होती है इसी लिए हवादार भी कहलाती है किसी ज़माने में उमरा शाम के वक़्त की हवा ख़ोरी के लिए इस्तेमाल करते थे। अब इस सवारी का नाम ही नाम रह गया और आसारे क़दीमा में नमूना।

थोप (स्त्री) थाप का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। पालकी और इसी क़िस्म की दूसरी सवारियों का पिछला डंडा। जो अगले डंडे के मुक़ाबले में किसी क़दर ख़मदार होता है जिसकी वजह से सिरा थोड़ा ऊपर उठा रहता है और उसकी यह सूरत पिछले कहारों को कंधा लगाने यानी पालकी उठाते वक़्त सहूलत पैदा करती है क्योंकि इस क़िस्म की सवारियों को आगे की तरफ से उठाते हैं और पिछला सिरा नीचे की तरफ झुकता है। गाड़ीबानों की इस्तिलाह में थोप और थोप नसरी उन बाँसों को कहते हैं जो फड़ यानी बम की झोंक में लगे रहते हैं। **देखें** पालकी।

थैला (पु0) देखें बोरा और पल्ला।

ठोकर (स्त्री) कहारों की इस्तिलाह या मुहावरा। पालकी या ढोली ले जाते वक़्त अगला कहार पिछले कहार को खबरदार करने के लिए बतौर इशारा ऐसे मौक़े पर बोलता है जबकि रास्ते में ऐसी चीज पड़ी हो जिससे पिछले कहार के पैर को टक्कर लगने या रुकने का अंदेशा हो।

जुलखा (पु0) फल या तरकारी वगैरह भरकर ले जाने की हम्मालों की जाली।

जूड़ा (पु0) देखें एँडवा।

जोड़ीदार (पु0) पालकी वगैरह उठाने वाला साथी कहार या भोई जो क़दोक़ामत और तवानाई में एक दूसरे से मिलता–जुलता और बराबर का मेहनती हो।

झाँकी (स्त्री) पालकी या डोली के उड़न पर्दे में सवारी के झाँकने को बना हुआ चाक या मोखा। **देखें** डोली।

झल्ली (स्त्री) हम्मालों के बोझ उठाने का पिटारीनुमा बड़ा टोकरा जिसमें सामान भरकर एक मज़दूर आसानी से सर पर उठाकर ले जा सके। **उठाना, उतारना** के साथ बोला जाता है। **देखें** भाग तीन पृ05।

झल्लीवाला (पु0) झल्ली रखने वाला मज़दूर जो मज़दूरी पर झल्ली में सामान रखकर एक जगह से दूसरी जगह पहुँचा दे।

चुट्टा (पु0) लफ़्ज़ जुट बमानी किसी चीज की तह की हुई या ऊपर तले रखी हुई थई का ग़लत उल आम तलफ़्फ़ुज़।

चुम्बल (पु0) देखें एँड़वा।

चमक (स्त्री) कहारों की इस्तिलाह या मुहावरा। पालकी या डोली ले जाते वक़्त अगला कहार पिछले कहार को ख़बरदार करने के लिए बतौर इशारा ऐसे मौक़े पर बोलता है जब उसको रास्ते में कुत्ते या इसी क़िस्म के किसी और जानवर का खतरा हो।

चुमली (स्त्री) चुम्बल का इस्मे मुसग़्ग़र। **देखें** चुम्बल।

चंडूल (पु0) चौडोल बमानी चारों तरफ बाड़वाला का ग़लत उल आम तलफ़्फ़ुज़ है। हौदा की शक्ल तामझाम की क़िस्म की सवारी जिसको कहार कंधों पर उठाकर एक मुक़ाम से दूसरे मुक़ाम पर ले जाते हैं। **देखें** तामझाम और डोली।

चौपहला (पु0) देखें चंडूल।

सुखपाल ( ) देखें चंडूल।

चौमासी (स्त्री) कहारों की इस्तिलाह में कीचड़ को कहते हैं और सवारी ले जाते वक़्त अगला कहार पिछले कहार को जतलाने बतलाने के ऐसे मौक़े पर बोलता है जब रास्ते में कहीं कीचड़ और पैर फिसलने की जगह हो।

छाँटी (स्त्री) देखें अक्खा और गौन।

छतरी (स्त्री) डोली के ऊपर साये के लिए लगी हुई बाँस की टट्टी जिस पर उड़न पर्दा डाल दिया जाता है। **देखें** डोली।

हम्माल (पु0) बारबरदार या मज़दूर। **देखें** मोई।

खुर्जी (स्त्री) देखें गौन।

दम लेना (क्रिया) कहारों की इस्तिलाह। सवारी के ले जाने में बोझ से थककर ज़रा सी देर को ठहरकर सुस्ता लेना।

दो पैसे डोली ( ) उर्दू रोज़मर्रा में इस कलमे से किसी मुक़ाम के फासले की तरफ इशारा करना मक़सूद होता है रक़म की मिक़दार जितनी कम बताई जाती है उतना ही कम फासला मुराद लिया जाता है जैसे दो, चार, छह पैसे डोली वगैरह। **प्रयोग** हकीम साहब का घर यहाँ से दो पैसे डाली पर है आदमी बात की बात में आ, जा, सकता है। **2** मंडी से सदर बाज़ार दो आना डोली पर है।

दूमा (पु0) डोली का बाँस जिसके बीच में डोली का ढाँचा बंधा रहता है। **देखें** डोली।

डोला (पु0) डोली का इस्मे मुकब्बर। सूबा अवध में बड़ी डोली को अकसर मुक़ामात पर डोला, महाडोल और मुहाफ़ा या मियाना कहते हैं जो मामूली डोली से वज़अ में किसी क़दर अच्छा और आरामदेह होता है। दकन में अकसर मुक़ामात पर डोला मय्यत को उठाने के डंडेदार तख़्त या पलंग को कहते हैं और डोली का न कोई मफ़हूम है न रवाज।

डोली (स्त्री) कहारों को उठाने की सवारी में सब से ज़ियादा हलकी फुलकी और मामूली दर्जा की छोटी सवारी जो पर्दा नशीन औरतों और बीमारों के लिए अहले देहली की ईजाद है और उसी मुक़ाम पर उसका नाम डोली रखा है। नवाहे देहली, लखनऊ और अतराफ़े लखनऊ में इस सवारी ने बहुत रवाज पाया। अगरचे अब वह अकसर मुक़ामात से मिट गई लेकिन देहली और बाज़ पुराने शहरों अभी तक उसका वजूद बाक़ी है। **उतारना** डोली की सवारी को उसके मुकाम पर पहुँचा देना। **लगना** डोली को सवारी या सवारियों के मुक़ाम पर लाकर रखना या खड़ा करना।

(चित्र डोली)

रपट (स्त्री) कहारों की इस्तिलाह, ढलान या ढाल्वाँ रास्ता जिस पर पैर फिसलने और सवारी के औंधा हो जाने का डर हो ऐसे मौक़े पर सवारी ले जाते वक़्त अगला कहार पिछले कहार को जताने के लिए यह कलमा कहता है।

साध्ना (क्रिया) संभालना, सिधारना।

सरबोझ (पु0) एक मज़दूर के उठाने का बोझ।

सिंघासन (पु0) चंडूल या तामझाम की क़िस्म की सवारी। **देखें** चंडूल या तामझाम।

शलीता (पु0) सामान भरने का थैला। आमतौर से खेमे के थैले को कहते हैं। **देखें** भाग एक पृ0

कहावत शलीते न रखिये मेख़।
लश्कर न रखिये शेख़।

गल्ताँ (स्त्री) कहारों की इस्तिलाह। मुराद, रस्सी या इसी क़िस्म की चीज़ जो राह चलते समय पैर में उलझे। सवारी ले जाते में जब कोई रस्सी या उसी क़िस्म की चीज़ रास्ते में पड़ी हो तो अगला कहार पिछले कहार को आगाह करने के लिए यह लफ़्ज़ कहता है।

कुली (पु0) बोझ उठाने या बारबरदारी का काम करने वाला मज़दूर। यह लफ़्ज़ शिमाली हिन्द में आमतौर से उन हम्मालों या मज़दूरों के लिए मख़सूस हो गया है जो रेलवे स्टेशन पर मुसाफिरों का सामान उठाने और ले जाने के लिए रखे जाते हैं दकन में उन को कुली के बजाये हम्माल कहते हैं।

कसाव (पु0) डोली का डंडा या बाँधने की कैंचीनुमा लगी हुई खपच्चियाँ। **देखें** डोली।

कुंदरी (स्त्री) देखें एँड़वा।

कंधा बदलना (क्रिया) कहार का सवारी ले जाते वक़्त सवारी के डंडे को एक कंधे से दूसरे कंधे पर रखना ताकि दोनों कंधों पर बारी–बारी से बोझ पड़े और कोई एक कंधा थककर बेकार न हो जाये।

कंधा देना (क्रिया) सवारी को उठाने के लिए कंधा डंडे के नीचे लगाना। मुराद कंधे पर सवारी उठाना।

कंधा लगाना (क्रिया) सवारी या बोझ को कंधे पर सहारना और उठाना।

कहार (पु0) शिमाली हिन्द का एक नीच ज़ात मज़दूर पेशा हिंदू फिर्क़ा जो दखन के भोई की तरह सवारियाँ भी उठाता है और मख़सूस घरानों में पानी भरने की ख़िदमत और चाकरी भी कर लेता है। क़दीम ज़माने में यह फिरक़ा मज़कूर उस सदर काम अंजाम देता और कहार के नाम से पुकारा जाता है जिसकी वजह तस्मिया मालूम नहीं हुई। हिन्दुओं में इसका दर्जा शुद्रों का है।

लगाना कहार को सवारी उठाने या किसी दूसरी ख़िदमत के लिए उजरत पर मुक़र्रर करना।

गाछी (स्त्री) यह लफ़्ज़ गद्दी का ग़लत तलफ़्फ़ुज़ मालूम होता है डोली या पालकी उठाते वक़्त उसके डंडे के नीचे कहार के कंधे पर रखने की किसी नर्म चीज़ की बनी हुई गद्दी जिसकी वजह से कंधा डंडे की रगड़ से महफ़ूज़ रहता है। **देखें** पालकी।

गज़प (पु0) कहारों की इस्तिलाह में गज़ का इस्मेमुसग़्ग़र। पाल्की और इसी क़िस्म की सवारियों का अगला छोटा और सीधा डंडा। **देखें** पाल्की।

गुंडली (स्त्री) देखें एँडवा।

गुंडा (पु0) देखें एँडवा।

गौन (पु0) सामान भरकर ले जाने का एक ख़ास वज़अ़ का सिला हुआ हम्माली थैला।

जब चलते चलते रस्ते में यह गौम तेरी ढल जायेगी।
एक बधिया तेरी मिट्टी पर फिर घास न चरने आयेगी।

गँडली (स्त्री) देखें एंडवा।

लपेट (स्त्री) देखें गल्ता।

लोटन (स्त्री) कहारों की इस्तिलाह में रास्ते में पड़ी हुई ऐसी बेडौल लुढ़क जाने वाली छोटी चीज़ को कहते हैं जिसपर पैर पड़ने से कहार डगमगा जाये और सवारी के कंधे पर से उतर जाने का अंदेशा हो। सवारी ले जाते वक़्त अगला कहार पिछले कहार को ऐसे मौक़े से आगाह करने के लिए यह कलमा बोलता है।

मुहाफ़ा (पु0) देखें डोला।

महाडोल (पु0) देखें डोला।

महाव्ती (स्त्री) कहारों की इस्तिलाह में चौमासी से मुराद वह कीचड़ जो बरसात के मौसम में रास्तों पर हो जाता है और महावती से महावट यानी मौसमे सर्मा की बारिश की कीचड़ मक़सद होता है और अपने काम के वक़्त यानी सवारी ले जाने में रास्ते की हर क़िस्म की कीचड़ मुराद होती है।

मियाना (पु0) देखें डोला।

नाल्की (स्त्री) लम्बी आराम कुर्सी की तर्ज़ की कहारों के कंधे पर उठाने की तामझाम की क़िस्म की सवारी जिसमें एक आदमी फैलकर लेट सके।

हरी (स्त्री) कहारों की इस्तिलाह गाय, भैंस का रास्ते में पड़ा हुआ गोबर। सवारी ले जाने में अगला कहार पिछले को आगाह करने के लिए यह कलमा बोलता है।

हवादार (पु0) देखें तामझाम।

तीसरी फस्ल किश्ती रानी

1. पेशा तैराकी व ग़ोता ख़ोरी

बैठी खड़ी (स्त्री) तैराकों की ख़ास इस्तिलाह मुराद एक क़िस्म की तैराक़ी जिसमें गोताख़ोर गहरे पानी में एक ख़ास वज़अ़ पर बैठकर तैरता है। **देखें** खड़ी पैराई।

पैराक (पु0) तैराकों की इस्तिलाह में ऐसे तैरने वाले को कहते हैं जो गहरे पानी और मौजों में देर तक पैरों के बल पर खड़ा तैरता है।

फाँद (स्त्री) तैराकों की ख़ास इस्तिलाह मुराद गहरे पानी में डुबकी लगाने को किसी बुलंदी से कूदना। जितनी बुलंद फाँद होगी उतनी ही गहरी डुबकी रहेगी मश्शाक़ तैराक मुख़्तलिफ़ बुलंदियों और शक्लों से फाँद लगाते हैं। **लगाना** के साथ बोला जाता है। **दौड़ की** (स्त्री) दूर से दौड़ते हुये आकर बुलंदी से पानी में छलांग मारकर डुबकी लेना। **ढ़ेकली की (स्त्री)** सर के बल बुलंदी से पानी में कूदना इस तरह कि टाँगें ऊपर को बिलकुल सीधी रहें और तैराक सर के बल पानी में जाये। **सर खुली फाँद (स्त्री)** तैराक का बुलंदी से कूदते वक़्त अपने हाथों को दोनों तरफ फैलाये रखना ताकि डुबकी न लगे और सर पानी के बाहर निकला रहे। **सीधी (स्त्री)** तैराक का किसी बुलंदी से खड़े क़द पानी में कूदकर डुबकी लगाना। **घड़ी की (स्त्री)** तैराक कि उकड़ू बैठकर यानी घुटनों को कंधों से मिलाकर बुलंदी से पानी में डुबकी लगाना।

तह की लगाना (क्रिया) गोताख़ोरों की इस्तिलाह मुराद पानी की गहराई में जाना और तह पर जो चीज़ हो उसको निकालकर लाना।

तैराक (पु0) पानी में तैरने (नक़लों हर्कत) की महारत और उसके तरीक़ों से वाक़फियत रखने वाला शख़्स।

तैराकी/पैराकी (स्त्री) पानी में तैरने का अ़मल।

जलबाँक (स्त्री) तैराकों की इस्तिलाह, मुराद खड़ी तैरने में दुश्मन से बचने और उस पर पलट कर वार करने या क़ाबू पाने के दाँव और तरकीबें। **करना** के साथ बोला जाता है।

जलडंड/जलडंटर (पु0) तैराकों की इस्तिलाह मुराद खड़ी तैराई में पैरों को बारी बारी से जल्द जल्द ऊपर नीचे साइकिल सवार की तरह चलाना ताकि बदन पानी में सधा रहे।

जहाज़ी तैराई (स्त्री) तैराकों की इस्तिलाह मुराद पानी पर चित लेटकर तैरना इस सूरत में तैराक अपने पेट के ऊपर एक खुली छतरी खड़ी रखता है जो उसके जिस्म को साधे रहती है और बाद बान का काम देते है।

चादर पड़ना (क्रिया) तैराकों की इस्तिलाह मुराद पानी का उठान जो दरिया के संगम पर मुख़्तलिफ़ समतों की रौ से पैदा होता है इस मौक़े की तैराई मुश्किल होती है। चादर के मुक़ाम पर एक तरफ को पानी में गढ़ा पड़ता है उसको तैराकों की इस्तिलाह में नाँद कहा जाता है।

दरिया ढूँढना (क्रिया) देखें तह की लाना।

डुबकी (स्त्री) तैराकों की इस्तिलाह, मुराद तैराक का पानी की तह में उतरना यानी पानी के अंदर नीचे की तरफ चला जाना। **लगाना, मारना** के साथ बोला जाता है। **खाना** पानी में बारबार तह की तरफ़ बैठना और उभरना।

डुब्कय्या (पु0) डुबकी लगाने वाला, वह तैराक जो पानी के अन्दर तह की तरफ़ जाये और वहाँ कुछ देर ठहर और तैर सके।

ग़ोता (पु0) देखें डुबकय्या।

कुंड (पु0) तैराकों की इस्तिलाह, मुराद तंग, गहरा और पुरआब गढ़ा जिसमें किसी नद्दी का पानी गिरकर आगे बढ़ता और बीच में चक्कर पैदा

करता हो। ऐसे मुक़ाम पर तैरना बहुत ख़तरनाक होता है। **पड़ना** के साथ बोला जाता है।

खड़ी पैराई (स्त्री) तैराकों की इस्तिलाह, मुराद, गहरे पानी में खड़े तैरते रहना और उसी हालत में दूर तक तैरते चला जाना।

लपेट (स्त्री) तैराकों की इस्तिलाह मुराद उल्टी रौ जो किसी रोक से टकराकर पल्टे जिसकी वजह से तैराक को आगे की तरफ बढ़ने में ज़हमत हो। **पड़ना** के साथ बोला जाता है।

मल्लाही तैराई (स्त्री) किश्ती खेने की सूरत दोनों हाथों से पानी चीरते हुये तैरना इस तरह कि हाथ चप्पुओं का काम देते मालूम हों।

मल्लाही हाथ मारना (क्रिया) तैराकों की इस्तिलाह। मुराद तैराक का तैरते वक़्त अपने हाथों को फैलाकर चप्पुओं का काम देते मालूम हों।

मिली तैराई (स्त्री) कई तैराकों का मिलकर एक दूसरे के सहारे तैरना।

नाँद (स्त्री) देखें चादर पड़ना।

2 पेशा किश्ती बानी (मल्लाही)

आबदोज़ (स्त्री) ग़ोताख़ोर किश्ती। **देखें** डुबकनी किश्ती।

आबशार (पु0) दरिया या चश्मे के पानी की बुलंदी से नशेब में गिरने की हालत जिसकी वजह उस मुक़ाम पर किश्ती रानी न हो सके।

आबनाये (स्त्री) दो ज़मीनों के दरमियान पानी का तंग क़तअ़ जो समंदरों को मिलाये।

उतरता पानी (पु0) देखें पन उतार।

उथला पानी (पु0) मल्लाहों की इस्तिलाह मुराद इतना कम गहरा पानी जिसमें किश्ती रानी जिसके खेने में बहाव का मुक़ाबला करना पड़े।

उफ़ता (स्त्री) फ़ारसी लफ़्ज़ उफ़तादा से किश्तीबानों की एक इस्तिलाह। **देखें** गुंजक।

इकटा (स्त्री) एक आदमी के बैठने की किश्ती जिसको वह खुद खेये।

अक्कास दीवट (पु0) रोशनी का मीनार जो दरिया के किनारे या समंदर में किसी टापू पर जहाज़ या किश्ती रानों की रहबरी के लिए बना हुआ हो।

अक्कास दिया (पु0) वह बड़ा चिराग़ जो किसी मीनार या बुलंदी पर जहाज़ रानों की रहबरी के लिए रौशन किया जाये।

दुख़ानी किश्ती ( ) देखें आग बोट।

आग बोट/अगन बोट (पु0) भाप के इंजन की कुव्वत से चलने वाली बड़ी किश्ती या छोटा जहाज़।

उलाँग (पु0) पुरानी वज़अ़ की एक क़िस्म की बड़ी किश्ती जिसके तख़्ते कोर पर कोर चढ़ाकर जड़े हुये और एक बड़ी कमान लटकी हुई रहती है।

एँड (पु0) मामूली भँवर जिससे किश्ती की रवानी में रुकावट न हो। **देखें** भँवर।

बादबान (पु0) जहाज़ और किश्ती में हवा की रोक को बल्ली पर बँधा हुआ पर्दा। जिसको हवा के रुख़ पर खोल देने से ज़हाज़ की रफ़्तार तेज़ हो जाती है। बादबानों की तादाद जहाज़ या किश्ती की ज़ुरूरत के मुताबिक़ होती है। **उतारना** अदम ज़ुरूरत की वजह बादबान को जहाज़ की बल्ली से नीचे गिरा लेना या खोल लेना। **चढ़ाना** हस्बेज़ुरूरत बादबान को जहाज़ की बल्ली के साथ बुलंदी पर तानना।

बादबानी किश्ती (स्त्री) वह किश्ती या जहाज़ जो हवा के ज़ोर पर तैराया और चलाया जाये। **देखें** नाव।

बाद्हन (स्त्री) देखें बादबान।

बाड़ (स्त्री) किश्ती का बग़ली रुख़ या पाखा।

पाँटा (पु0) फाँट या फंटे का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। **देखें** फंटा।

बाँगड़ (पु0) दरिया के धारे के क़रीब की ऐसी ऊँची ज़मीन जो दरिया के चढ़ाव से महफ़ूज़ रहे।

बताम (स्त्री) देखें सारंग।

बेडी/बेडवा (स्त्री) देखें पनसूआ।

बजरा (पु0) अंग्रेजी लफ़्ज़ बार्ज का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ मुराद हल्की फुल्की सैरो तफरीह की सुबुक रफ़्तार छोटी किश्ती जिसको एक आदमी या खुद सवार खे ले। मुक़ामी बोलियों में पतवार ढाँगा, मोरपंखी और निवारा वगैरह नामों से

मौसूम की जाती है अंग्रेजी ज़बान के लफ़्ज़ का मफ़हूम माल ले जाने की बड़ी किश्ती होती है।

बढ़ता पानी (पु0) देखें पन बढ़ाव।

बल्ली डुबाऊ पानी (पु0) मल्लाहों की इस्तिलाह मुराद, दरिया या समंदर का वह मुक़ाम जहाँ एक बल्ली यानी तीन चार गज़ से ज़ियादा गहरा पानी हो और खेवय्ये की बल्ली तह को न छू सके यानी किश्ती को पानी में आगे बढ़ाने के लिए बल्ली की लाग बेकार हो जाये और चप्पू चलाने की नौबत आये या जुरूरत पड़े।

बल्ली मार (पु0) देखें खेवय्या।

बंद पानी (पु0) मल्लाहों की इस्तिलाह मुराद, झील या तालाब वगैरह का पानी जिसका किसी तरफ निकास या बहाव न हो।

बंदरगाह (स्त्री) समंदर के किनारे जहाज़ों के ठेराने की मसनूअी या कुदरती महफूज़ जगह।

बहाव (पु0) दरिया के पानी की नशेब की तरफ को रवानी।

बहाई (स्त्री) मल्लाहों की इस्तिलाह मुराद पानी के बहाव की तरफ किश्ती को पानी की रफ़्तार पर छोड़ना और चप्पू चलाना बंद कर देना।

बैरूआ (पु0) देखें डाँड या डंडा।

बेड़ा (पु0) जहाज़ों की एक मुक़र्रिरा तादाद की क़तार जो एक साथ सफर करे और मजमूअी हैसियत में रहे।

बेड़न (स्त्री) लफ़्ज़ बेड़ी का इस्मे मुसग़्गर, किश्तीबानी की इस्तिलाह मुराद, वह गुंजक या लकड़ी की पुट्ठी जो किश्ती की पुट्ठी जो किश्ती के पेंदे और ऊपर की बाड़ के हिस्सों के दरमियान जोड़ का काम देती है।

भंटा/फंटा (पु0) किश्ती बानों की इस्तिलाह, मुराद, किश्ती की माँग यानी हिलालनुमा बनी हुई लकड़ी की पट्टी जिसपर नाव का ढाँचा तैयार किया जाता है और इसकी तैयारी में रीढ़ की हड्डी का दर्जा रखती है इस लकड़ियों की बग़लियों में पसलियों की शक्ल दूसरी लकड़ियाँ जड़ी जाती हैं।

भुज (स्त्री) देखें पनसूआ।

भड़ (स्त्री) देखें पनसूआ।

भक्का (पु0) देखें पनसूआ।

भंडारी (स्त्री) नाव के अगले पिछले नुकीले सिरों की ख़ाली और आम इस्तेमाल में न आने वाली जगह में मल्लाहों और किश्ती के दीगर कारिंदों का सामान रखने को बनी हुई कोल्कियाँ।

भँगोडी/भगोड़ी (स्त्री) देखें खिवाई।

भँवर (पु0) दरिया या नद्दी के पानी का चक्कर जो तेज़ बहाव पर मुख़ालिफ़ रौ की वजह से पैदा हो जाता है जितनी तेज़ रौ होगी उतना ही भँवर गहरा और ज़ोरदार होगा जिसमें हल्की किश्ती के डूबने का खतरा रहता है। मामूली भँवर को एँड और मामूल से किसी क़दर बड़े को किश्ती रानों की इस्तिलाह में नाँद कहते हैं।

भवाँसा/भवाँसे (पु0) नाव की बाड़ का वह किनारा या कोर जिसपर चप्पू टिकाकर चलाया जाता है। बाज़ कश्तियों के पाखों में इस जुरूरत के लिए मोखे बने होते हैं। **देखें** नाव।

पाट/पट्टी (पु0) बड़ी क़िस्म की किश्ती के दो मंज़िलों की छत या तख़्तों का फर्श जो मुसाफिरों के चलने फिरने और हवा ख़ोरी करने के काम आता है। 1 खेवय्ये या किश्ती रान के बैठने की जगह जहाँ से वह चप्पू चलाता है। 2 दरिया के पानी की धार का अर्ज़। **प्रयोग** कसरते बारिश से दरिया का पाट बहुत बढ़ गया है।

पाल (पु0) देखें बाद बान।

पायाब पानी (पु0) देखें उथला पानी।

पतवार (पु0) किश्ती का रुख फेरने या किश्ती को मोड़ने का हत्ता जो किश्ती के सिरे पर लगा होता है। उसके निचले सिरे पर रूबरू दायरे की शक्ल का जड़ा होता है जो पानी के अन्दर रहता है उसकी धार जिस तरफ फेरी जाये उसी रुख़ किश्ती मुड़ जाती है। 2 बजरे के क़िस्म की सामने से चौड़ी और पीछे से तिकोनी शक्ल की नाव। **देखें** बजरा और नाव। **फेरना** के साथ बोला जाता है।

पटेला (स्त्री) माहीगीरों की छोटी और मामूली किश्ती जिसके तख़्तों की जड़ाई कोरें चढ़ाकर की जाती है।

पुर्स (पु0) मल्लाहों की इस्तिलाह मुराद, वह मुक़ाम जहाँ पानी क़रीब सात या आठ फीट गहरा हो और किश्ती रानी के लिए काफ़ी न समझा जाये।

परिंदा (पु0) देखें पन सूआ।

परवाल (स्त्री) दरिया के किनारे किश्ती के ठैरने का मुक़ाम जहाँ वह लंगर अंदाज़ हो सके या किसी चीज़ से बाँधी जा सके।

पड़म (स्त्री) देखें तरक।

पड़वा (पु0) देखें पतवार।

पल्टा (पु0) देखें पाट या पट्टी।

पल्वार (पु0) बार बरदारी की किश्ती जो पंद्रह या बीस टन बोझ ले जा सके बाज़ मुक़ामात पर पतवार कहते हैं। **देखें** पतवार।

दुम्बाला ( ) देखें पतवार।

पनउतार (पु0) दरिया या नद्दी के पानी का कम होना यानी मामूली मिक़दार क़ायम न रहना जिसकी वजह से बाज़ मुक़ामात पर किश्ती रानी बंद हो जाती है।

पन बढ़ाव (पु0) दरिया या नद्दी के पानी का बढ़ना और सतह आब का ऊँचा होना।

पन तोड़ (पु0) देखें पन उतार।

पन थपेड़ (स्त्री) दरिया या नद्दी का पानी बढ़ना। **देखें** पन बढ़ाव।

पन रेला (पु0) दरिया या नद्दी के पानी का बहाव की तरफ़ हवा या लहर के इत्तिफ़ाक़ी या तेज़ दबाव से बड़ा झकोला या रौ जो किश्ती को अपने मामूली रास्ते से हटा दे। **आना** के साथ बोला जाता है।

पन सूआ (पु0) माहीगीरों की किश्ती जो सैरो तफ़रीह की किश्ती से किसी क़दर बड़ी होती है। छोटी बड़ी मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बनाई जाती और मुक़ामी बोलियों में मज़कूर उस सदर जुदा जुदा नामों से मौसूम की जाती है।

पोखर (स्त्री) देखें जोहड़।

पवन परेछा (पु0) हवा का रुख़ देखने का झंडा जो बाद बानी किश्तियों पर लगाया जाता या जैसा कि आजकल हवाई जहाज़ों के मैदान में हवा का रुख देखने को लगाया जाता है। **देखें** नाव।

ताल (पु0) खुश्की से घिरा हुआ पानी का ऐसा छोटा क़तअ़ जो बरसाती नद्दी, नाले से सैराब होता रहे। बाज़ ताल बहुत बड़े होते हैं जिनमें किश्ती रानी हो सकती है।

तालाब (पु0) आम बोलचाल में ताल से छोटे को तालाब कहते हैं।

तिरबेनी (स्त्री) तीन दरियाओं के मिलने का मुक़ाम।

संगम ( ) देखें तिरबेनी।

तरक (पु0) संस्कृत तरा बमानी लकड़ी के लट्ठों का बीड़ा बनाने वाला। लकड़ी के लट्ठों का ठाटर जो किश्ती का काम दे। **2.** शहतीरों की क़तार जो पानी के बहाव पर तैराई जाये ताकि बहाव के साथ तैरती हुई मुक़ामे मक़सूद पर पहुँच जाये।

तिर्नी (स्त्री) देखें नाव।

तलय्या (स्त्री) ताल का इस्मेमुसग़्ग़र। **देखें** ताल।

तलहटी (स्त्री) नाव को पेंदा या निचला हिस्सा जिसकी शक्ल परिंद की सीने की हड्डी के मानिंद माँग की तरह बीच में धार और बग़लियाँ फैलवाँ होती है।

थाह/तह (स्त्री) दरिया या समंदर की तहज़मीन।

कहावत *आधी छोड़ एक को धावे।*
ऐसा डूबे थाह न पावे।।

थपेड़ा/थपेड (पु0) देखें पन थपेड़।

थल (स्त्री) दरिया या समंदर का किनारा, साहिल, बंदरगाह।

थलबेड़ा (पु0) जहाज़ों के ठैरने का किनारा या बंदरगाह।

टापू (पु0) छोटा जज़ीरा या नुकीली शक्ल का क़तअ़ ज़मीन जो समंदर या दरिया में पानी के बाहर निकला रहे और खुश्की का काम दे।

टंडेल (पु0) मल्लाहों का चौधरी, नाखुदा। बाज़ मुक़ामी बोलियों में फराश कहलाता है।

जज़ीरा (पु0) खुश्की का ऐसा बड़ा क़तअ़ जो चारों तरफ दरिया या समंदर के पानी से घिरा हुआ हो।

जज़ीरानुमा (पु0) खुश्की का ऐसा बड़ा क़तअ़ जो तीन तरफ से दरिया या समंदर के पानी से घिरा हुआ हो।

जुवार भाटा (पु0) धारा, जवार (चढ़ाव) भाटा (उतार) दरिया या समंदर के पानी का चढ़ाव जो चाँद की कशिश से होता रहता है पानी की इस हालत से किश्तीरानी में बड़ी सहूलत होती है। **आना** के साथ बोला जाता है।

जोहड़ (स्त्री) ऐसी छोटी और मामूली झील जिसमें बरसाती पानी चौतरफ की ऊँची ज़मीन से आकर जमा हो जाये जिसका किसी तरफ निकास न हो।

जहाज़ (पु0) अरबी लफ़्ज़ जहाज़ बमानी माल और असबाब उर्दू में बहुत बड़ी समंदरी सवारी को कहते है जो बड़े बड़े दरियाओं झीलों और समंदरों में सवारी और बारबरदारी के लिए तैयार की जाती है अब उसकी तरक्क़ी इंतिहा ए कमाल को पहुँच गयी है।

जहाज़रान (पु0) जहाज़ को चलाने वाला माहिर शख्स।

झकोला (पु0) देखें पन रेला। **देना** पानी के रेले का किश्ती या जहाज़ से टकराकर उसको डगमगा देना। **खाना, लेना** किश्ती या जहाज़ का पानी की रौ के रेले से डगमगाना।

झँगत (पु0) देखें सक्कानी।

झील (स्त्री) चारों तरफ खुश्की से घिरा हुआ पानी का छोटा क़तअ़ जिसमें किसी दरिया या नद्दी का पानी मिलता और सैराब करता रहे।

चप्पू (पु0) नाव खेने का हस्बेज़रूरत लम्बा ढाँड जिसका एक सिरा चपटा और मुख़्तलिफ़ शक्ल का बना हुआ होता है जो किश्ती खेने में पानी को काटने का काम देता है। **मारना, चलाना** के साथ बोला जाता है। **देखें** नाव।

चर (पु0) दरिया का रेत्ला किनारा जहाँ किश्ती ठहराने का इंतज़ाम न हो सके और किनारे की रेत पानी में गिरकर पानी की गहराई को कम करती रहे। **2.** रेत्ला टापू जो पानी के बाहर निकल आये।

चढ़ाव (पु0) दरिया या नद्दी के पानी के बहाव की मुख़्तलिफ़ सिम्त।

चकरा (पु0) देखें पत्वार।

चक्कल (पु0) देखें तलहटी।

चिलक (स्त्री) झलक का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। मल्लाहों की इस्तिलाह। मुराद दरियाई रेत की चमक जो सूरज की शुआ़ए पड़ने से पैदा हो और दूर से पानी का धोका दे। **पड़ना** के साथ बोला जाता है।

चुंगी मुहाल (स्त्री) बंदरगाह पर जहाज़ी माल गोदाम जिसमें बाहर का आया हुआ सामान अज़ क़िस्म अनाज व दीगर अश्या और मुसाफिरों का सामान बतौर अमानत कुछ मुआव्ज़ा लेकर बहिफ़ाज़त रखा जाये।

चारे बालू (पु0) दरिया के रेत्ले किनारे की ऐसी रेत जो बराबर फिसलती और पानी में गिरती रहे जिसकी वजह से किनारे का पानी उथला होकर किश्तीरानी के लायक़ न रहे।

चोयीं (स्त्री) किश्ती पर खेवय्ये के बैठने की जगह जहाँ बैठकर वह चप्पू चलाता है।

छाल (स्त्री) पानी की तेज़ रौ की उड़ान जो किनारे या जहाज़ के पहलू से टकराकर पैदा हो। **आना** के साथ बोला जाता है।

खाकनाये (स्त्री) दो समंदरों के दरमियान ज़मीन का तंग क़तअ़ जो बड़ी खुशकियों को मिलाये।

ख़लीज (स्त्री) समंदर का हिस्सा जो दूर तक खुश्की में चला जाये (जज़ीरानुमा की ज़िद) और जहाज़ रानी के क़ाबिल हो।

दरिया उतरना (क्रिया) पार करना या उबूर करना। दरिया के पानी का कम हो जाना। **2.** दरिया को पार कर लेना।

दरिया चढ़ना (क्रिया) दरिया में पानी की ज़ियादती होना। दरिया का पानी बढ़ जाना।

दरसूधा (पु0) मस्तूल के सिरे पर बँधा हुआ रस्सी का बंद जो बादबान चढ़ाने के लिए मुस्तक़िल

तौर पर बँधा रहता है और बादबान को ऊपर के रुख़ उठाये रखता है।

दस्तक (स्त्री) परवाना, राहदारी, समंदरी सफर। इजाज़तनामा समंदरी सफर के लिए। **2.** हुकमनामा खिलाफ़े मुआफ़ी महसूल चुंगी माल गोदाम बंदरगाह।

दस मरिया (पु0) बरसात के मौसम में इस्तेमाल की बड़ी किश्ती।

दहाना (पु0) दरिया का सिरा या मुँह जो समंदर या झील पर ख़तम हो जाये।

धजा (पु0) देखें पवन परीछा।

डाँड (स्त्री) किश्ती रान या खिवय्ये की बल्ली या बाँस जिसको वह कम गहरे पानी में तह पर जमाकर किश्ती को खेता है यानी किश्ती को पानी में आगे को बढ़ाता है। **मारना** के साथ बोला जाता है।

डाँटा/डाँटी (पु0) दरिया के किनारे किश्ती की रस्सी बाँधने का खम या खूँटा जिससे रस्सी या ज़ंजीर बाँधकर किश्ती को किनारे पर ठैरा दिया जाता है।

डाँडी (पु0) किश्ती रान जो चप्पू या बाँस चलाकर किश्ती चलाये। **2.** दरिया का कड़ाड़ा।

ढब्ड़ा (पु0) देखें जोहड़।

ढुबकनी किश्ती (स्त्री) सतहे आब के नीचे या ग़ोता ज़न, ज़दीद ईजाद किश्ती जो समंदर में दुश्मन के जहाजों पर छुपकर हमला करती है।

ढबोसा (पु0) नाव के अंदर मुसाफिर के क़यास का हुजरा। **2.** किश्ती के अंदर का नीचे का हिस्सा जिसमें किश्ती का जुरूरी सामान और मल्लाहों के रहने को जगह बनी होती है।

ढाँगा (पु0) चपटे पेंदे की छोटी और हल्की किश्ती जो मामूली जुरूरत के लिए किनारे के क़रीब इस्तेमाल की जाती है।

ढाँगी (स्त्री) ढाँगे का इस्मे मुसग़्ग़र। **देखें–**ढाँगा।

ढेलटा (पु0) वह ज़मीन जो दरिया के दहाने के क़रीब दरियाई मिट्टी जमते जमते पानी के बाहर निकल आये। जिसकी वजह से दरिया का धारा कई शाखों में तक़सीम हो जाये।

ढैंगी/ढँगी (स्त्री) ढाँगी का दूसरा तलफ्फुज़। **देखें–** ढाँगी।

ढाँग (पु0) दरिया का ढालू किनारा जिसकी वजह से पानी किनारे से दूर तक उथलवाँ रहे और किश्ती रानी के क़ाबिल न हो। इसे कड़ाड़े की ज़िद कहा जा सकता है।

रास (स्त्री) खुश्की का नुकीला हिस्सा जो दूर तक समंदर में चला जाये।

रस्बती (स्त्री) शमअ़ ए हिदायत, रास्ता बताने वाली रोशनी। मल्लाहों की इस्तिलाह में आग के उस अलाव या रोशनी को कहते हैं जो किनारे पर किश्तीरानों को खुश्की की निशान दही के लिए रौशन की जाये।

रसवट (स्त्री) जहाज़ की दरज़ें। **2.** जहाज़ की दरज़ें बंद करने वाला माहिर शख़्स।

रौ (स्त्री) पानी की रवानी जो नशेब की तरफ हो या हवा के असर से पैदा हो।

साहिल (पु0) समंदर का किनारा, बंदरगाह।

सारंग (स्त्री) दरख़्त के मोटे तने को खोखला कर के मामूली इस्तेमाल के लिए बनाई हुई किश्ती जो उथले पानी में काम दे। मश्रिकी बंगाल में इसका बहुत चलन है इस क़िस्म की बड़ी किश्ती को वहाँ की मुक़ामी बोली में बताम कहते हैं। **चित्र** सारंग।

सागर (पु0) बड़ा तालाब या समंदर। **देखें** तालाब।

सुत हौनिया (पु0) मल्लाहों की इस्तिलाह मुराद किश्ती में सीधा जड़ा हुआ ऐसा नल्वाँ जिसमें किश्ती का मस्तूल फँसाकर खड़ा किया जा सके।

सर हंग (पु0) किश्ती के मुलाज़मीन या मल्लाहों का जमअ़दार।

सुफ़्ती (स्त्री) फारसी लफ़्ज़ सुफ़्तन से मल्लाही इस्तिलाह मुराद किश्ती के पेंदे के तख़्तों की दर्ज़ के दरमियान फंसाई हुई चोबी पट्टी जिसको दो तख़्तों की कोरों में खाँचा देकर फँसाया जाता है जिसकी वजह से तख़्तों की सतह बराबर रहती है और उनमें झिरी नहीं पड़ती।

सिक्का/सकान (पु0) गुलही किश्ती के पेंदे का सिरा यानी दोनों तरफ के उठे हुए नुकीले सिरे या सिर्फ पिछला सिरा या दुंबाला जहाज़। **देखें** पतवार।

सक्कानी (पु0) पतवार की सँभाल करने वाला मल्लाह। **देखें** पतवार।

समंदर (पु0) ठैरे हुये पानी का बहुत बड़ा और बहुत गहरा क़तअ़।

सिवार (स्त्री) दरिया या समंदर के पानी के अंदर का टीला या चट्टान जो बाहर न दिखाई दे और सतहे आब से कुछ नीचे हो जिससे किश्ती या जहाज़ के टकराने का अंदेशा हो ऐसे मुक़ाम पर चपटे पेंदे की किश्ती तैराई जाती है।

सूजा (पु0) देखें गुंजक।

सोहर (स्त्री) किश्ती के अंदर का तहे फर्श जो पानी के रिसाव की हिफाज़त के लिए तैयार किया जाता है।

सुहार (पु0) सोहर का दूसरा तलफ़्फ़ुज़। **देखें** सोहर।

सैल (स्त्री) किश्ती को किनारे की तरफ खींचने की मोटी रस्सी। किश्ती का हत्ता। **2.** किश्ती से पानी निकालने का चोबी ज़र्फ़।

कठौता ( ) देखें सैल।

सेउता/सेऊता (पु0) देखें सैल।

अर्शा (पु0) जहाज़ की छत या बालाई सतह।

कुतुबनुमा (पु0) शिमाल की सिम्त बताने का जहाज़ रानों का आलः।

कड़ाड़ा (पु0) दरिया का सीधा और ऊँचा किनारा या ढलवाँ किनारे। ढाँग की ज़िद।

किश्ती (स्त्री) देखें नाव।

किश्ती रान (पु0) देखें खेवय्या।

कम्पास (स्त्री) देखें कुतुबनुमा।

कम्वार (पु0) पत्वार का दस्ता। **देखें** पतवार और सैल।

कुंदी (स्त्री) देखें गुही।

कुनौरा/कूनौरा (पु0) किश्ती में खिवय्यों के बैठने के तख़्ते की आड़ या पाये जिसपर तख़्ता जड़ा रहता है। **2** खेवय्ये के बैठने की जगह। बाज़ मुक़ाम पर कुँवारा तलफ़्फ़ुज़ करते हैं।

कोल (पु0) देखें गोल।

केरोआर (पु0) किश्ती खेने का चप्पू।

खावर (स्त्री) दरिया के धारे के दोनों तरफ ऐसी नशेबी ज़मीन जो दरिया के चढ़ाव के वक़्त तहे आब हो जाये यानी जिसमें दरिया का पानी भर जाये और बवक़्त जुरूरत उसमें किश्ती चलानी पड़े।

खाड़ी (स्त्री) देखें ख़लीज।

खोआरी (स्त्री) देखें सुत हौनिया या सुधानिया।

खिवाई (स्त्री) नाव के पाखे के सिरे पर या उसके अंदर चप्पू की डाँड टिकाने का खाँचा या सूराख जिसमें चप्पू की डाँड हर्कत के वक़्त क़ायम रहे। **देखें** नाव।

खिवय्या (पु0) किश्ती को पानी में चप्पू चलाने वाला मल्लाह।

खेना (क्रिया) किश्ती को पानी में चप्पू के ज़रिये चलाना।

खेवा (स्त्री) एक क़िस्म की छोटी किश्ती जो जहाज़ पर से मुसाफिरों को किनारे पर ले जायें। **2** किश्ती रानी का जुरूरी सामान और असबाब। **3** वह वजन जो पानी में किश्ती का तवाज़ुन क़ायम रखने को उसकी तह में भरा जाये। **भरना** के साथ बोला जाता है। **प्रयोग** रात दिन में सिर्फ एक खेवा लगता है।

खेवट (पु0) देखें खिवय्या।

गाँसना (क्रिया) किश्ती की दर्ज को जिससे पानी अंदर आये बंद करना, किश्ती के रिसाव को रोकना।

गद्दू (पु0) देखें सारंग।

गुरहा (पु0) बादबान का खम या किश्ती में जड़ा हुआ मस्तूल फँसाने का नलुआ या थूवा जिसमें मस्तूल का सिरा जमा कर खड़ा किया जाता है। **2.** किश्ती के मस्तूल में बँधी हुई मोटी रस्सी। किश्ती खींचने का रस्सा। **देखें** मस्तूल।

गड़गच (पु0) जहाज़ या किश्ती का सामने और पीछे का उभरवाँ और आगे को निकला हुआ नुकीला हिस्सा। **देखें** नाव।

गलिहया (पु0) देखें सरहंग।

गुल्ही (स्त्री) किश्ती का पिछला सिरा। दुंबाला जहाज़।

गुन (स्त्री) देखें लहास।

गुंजक/गुंजलक (स्त्री) नाव की बुनियादी क़ौसनुमा लकड़ी जो रीढ़ की हड्डी की तरह पेंदे में शुरू से आखिर तक होती है जिसपर पूरी नाव का ढाँचा तैयार किया जाता है। **देखें** नाव।

गुनरखा (पु0) देखें गुरहा।

गुन्हा (पु0) देखें खिवय्या।

गौरग (पु0) देखें लहास।

गोल/कोल (पु0) किश्ती में पतवार की जगह। **देखें** पत्वार।

गौनिया/गोयीं (पु0) किश्ती को रस्सी के ज़रिये किनारे की तरफ खींचकर ले जाने वाला मल्लाह का मददगार।

गहरा पानी (पु0) उथ्ले पानी की ज़िद। **देखें** लुज्जा।

घाट (पु0) दरिया या नद्दी का किनारा जहाँ किश्ती मुसाफिरों और माल को उतारती या चढ़ाती है।

घाटानी/घाट आनी (स्त्री) महसूल घाट, उतरवाई।

घाट बारी (स्त्री) घाट पर आने और ठैरने का किश्ती का महसूल जो किश्तीबान से घाट से रवान्गी के वक़्त लिया जाये।

घाट वाल/घटवार (पु0) घाट का निगेहबान या मुहाफ़िज़ जो घाट पर किश्तियों के आने जाने की निगरानी और इंतज़ाम रखे और घाट उतराई का महसूल वसूल करे।

घानसब/गांसब (पु0) देखें गाँसना।

घिरनी (स्त्री) जहाज़ पर भारी सामान चढ़ाने और उतारने का आलः ए जर्रे सक़ील, यानी पुली।

घेर (पु0) जहाज़ या किश्ती का तलैटा यानी सब से नीचे का गहरा और फैला हुआ दर्जा। **2** बादबान का नीचे का फैलाव जो हवा भरने से फूल जाता है।

घैंटा (पु0) दुख़ानी जहाज़ का भोंगा जो रवानगी से क़ब्ल बहुत ज़ोर से चींख़ता है।

लुज्जा (पु0) ज़ियादा गहरा पानी। समंदर या दरिया का वह मुक़ाम जहाँ पानी बहुत गहरा हो।

लग्गी (स्त्री) किश्ती का ठेलने धकेलने यानी कम पानी में आगे बढ़ाने का मल्लाह का लम्बा बाँस। **देखें** डाँड।

लंगर (पु0) किश्ती या जहाज़ को किनारे पर पानी में खड़ा रखने वाला भारी वज़न जो जंज़ीर बंधा लटका रहता है और बवक़्त जुरूरत उसको तह पर जमने को लटका देते हैं बड़े जहाज़ों में लोहे के निहायत वज़नी लंगर होते हैं जो मशीन के जरिए उठाये और डाले जाते हैं। **उठाना, डालना** के साथ बोला जाता है। **देखें** नाव।

लौह लंगर (पु0) लोहे का बना हुआ भारी लंगर।

लहास/लहासा (पु0) जहाज़ या किश्ती को किनारे की तरफ खींचने का मोटा रस्सा/तेलियों की इस्तिलाह में कोल्हू की डाँड की उस लकड़ी या रस्सी को कहते हैं जो डाँड के सिरे पर बँधी रहती और उसको एक तरफ को खींचे रखती है ताकि वह हिचकोला न खाये। **2** किश्ती के बीच में बना हुआ बड़ा कमरा। **देखें** भाग–3 पेशा तेली।

लहासी (पु0) किश्ती को किनारे की तरफ खींचने वाला शख़्स। **2.** किश्ती की कोल्की या कोठरी।

लहर (स्त्री) पानी की सतह को छोटी या बड़ी शिकन जो हवा के असर या किसी चीज़ के दबाव से पैदा हो। **उठना, आना, पड़ना** के साथ बोला जाता है।

लेवा (पु0) किश्ती के पेंदे को पानी के असर से महफूज़ रखने वाला रौग़नदार मसाला जो पेंदे की बैरूनी सतह पर चढ़ा दिया जाता है। **2.** किश्ती के पेंदे के तख़्तों की पच्चीकारी इस तरह कि पानी उन में दाखिल न हो सके।

माथा (पु0) देखें गढ़गच।

माल्हनी/मैल्हनी (स्त्री) एक क़िस्म की किश्ती या जहाज़ जिसका सामने का हिस्सा चौड़ा और ऊपर को उठा हो यानी उमूदी होता है।

माँझी (पु0) देखें खेवय्या।

माँग (स्त्री) किश्ती के पाखों का जोड़ जो एक खत पर मिलता है और कमान की शक्ल बन जाता है।

मछवा (स्त्री) छोटी किश्ती या किश्तियाँ जो जहाज़ पर जुरूरत और खतरे के वक़्त के लिए रहती है और मुसाफिरों की जान बचाने के लिए इस्तेमाल की जाती हैं।

लाइफ़ बोट ( ) देखें मछवा।

मच्छी पलट मौज (स्त्री) वह तेज़ और तुंद मौज जो चढ़ाव की तरफ मच्छी का मुंह फेर दे।

मद्दो जज़र (पु0) देखें जुवार भाटा।

मुर्रे (पु0) किश्ती के पेंदे पर जड़े हुये तख़्ते जो पेंदे की क़ौसनुमा वस्ती लकड़ी के दोनों तरफ जड़े जाते और किश्ती के पेंदे का हिस्सा बनाते हैं।

मरइयाँ (पु0) देखें मुर्रे।

मस्तूल (पु0) जहाज़ या किश्ती का खम जिसपर बादबान बाँधा और झंडा लगाया जाता है। **देखें** नाव।

मुआविन (पु0) दरिया में मिलने वाले नाले नद्दी जो उसके बहाव के रास्ते में ऊँची ज़मीनों से निकलकर असल धारे में मिल जाते और उसका पानी बढ़ाते हैं।

मल्लाह (पु0) जहाज़ के मुलाज़िम जो जहाज़ रानी में मदद दें। **देखें** खिवय्या।

मुँबअ़ (पु0) दरिया के निकलने का मुक़ाम यानी वह मुक़ाम जहाँ से दरिया का पानी आना शुरू होता और जारी रहता है।

मंजधारा/मंझदार (स्त्री) दरिया के पानी का बीच का धारा यानी दरमियानी पानी जो गहरा तेज़ रौ और मौजज़न होता है।

मौज (स्त्री) देखें लहर।

मोर पंखी (स्त्री) बजरे की क़िस्म की छोटी सैरो तफ़रीह की मोर की शक्ल की बनी हुई किश्ती।

मुहड़ा (पु0) देखें छाल।

मियान (स्त्री) देखें गड़गज।

मैल्हनी (स्त्री) देखें माल्हनी।

मैंढ़ा (पु0) मल्लाहों की इस्तिलाह मुराद बहाव के मुख़ालिफ़ हवा से उठी हुई लहर जो चढ़ाव की तरफ बढ़कर रौ से टकरा कर उभरे और किश्ती की रवानी में रुकावट पैदा करे।

नाखुदा (पु0) मुसाफिरों की किश्ती या जहाज़ का निगेहबान, मुहाफिज़ जो सफर में किश्ती की हिफ़ाज़त और देखभाल रखे।

नाव (स्त्री) पानी में चलने वाली सवारी का मामूली क़िस्म, सबसे बड़ी को जहाज़ कहते हैं। **लगना, लगाना** किश्ती का किनारे पर आकर ठैरना ठैराना।

नाथन (स्त्री) चप्पू के डंडे को बाँधने की रस्सी या ज़ंजीर।

नद्दी (स्त्री) कम चौड़े पाट का तेज रौ दरिया जो पहाड़ी इलाक़े के नशेबो फ़राज़ से ज़ियादा फैल न सके और घाटियों की वजह से पेचो ख़म खाता हुआ बहे। ऐसे दरिया में किश्तीरानी बहुत मुश्किल और खतरनाक होती है।

निवाड़ा (पु0) देखें मोरपंखी।

हार (पु0) हाड़ का ग़लत तलफ़्फ़ुज़, मल्लाहों की इस्तिलाह। मुराद किश्ती के ढाँचे की तख़्ताबंदी जो उसकी सूरत को मुकम्मल कर दे और पानी में तैराने के क़ाबिल हो जाये।

हरवार/हरवाल (स्त्री) देखें पतवार।

हल्कोरना (क्रिया) पानी की हल्की मौजों की किश्ती को थपेड़ लगना जिससे उसको झकोला न आये।

हलोरना (क्रिया) देखें हल्कोरना।

हवाई जहाज़ (पु0) हवा में उड़ने और सफ़र करने वाली सवारी।

हूलियाना (क्रिया) जहाज़ का किसी चट्टान से टकराकर झकोले खाना। डूबने की अलामत ज़ाहिर होना। झोका खाना, चकराना। **2.** जहाज़ के ख़तरे में आने का इज़हार करना।

हौड़ा (स्त्री) एक क़िस्म की छोटी किश्ती जो जहाज़ के साथ मल्लाहों की जुरूरत के लिए बंधी रहती है।

तम्मत।